आठवां अंक 2019

आकाशवाणी

समाचार भारती

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

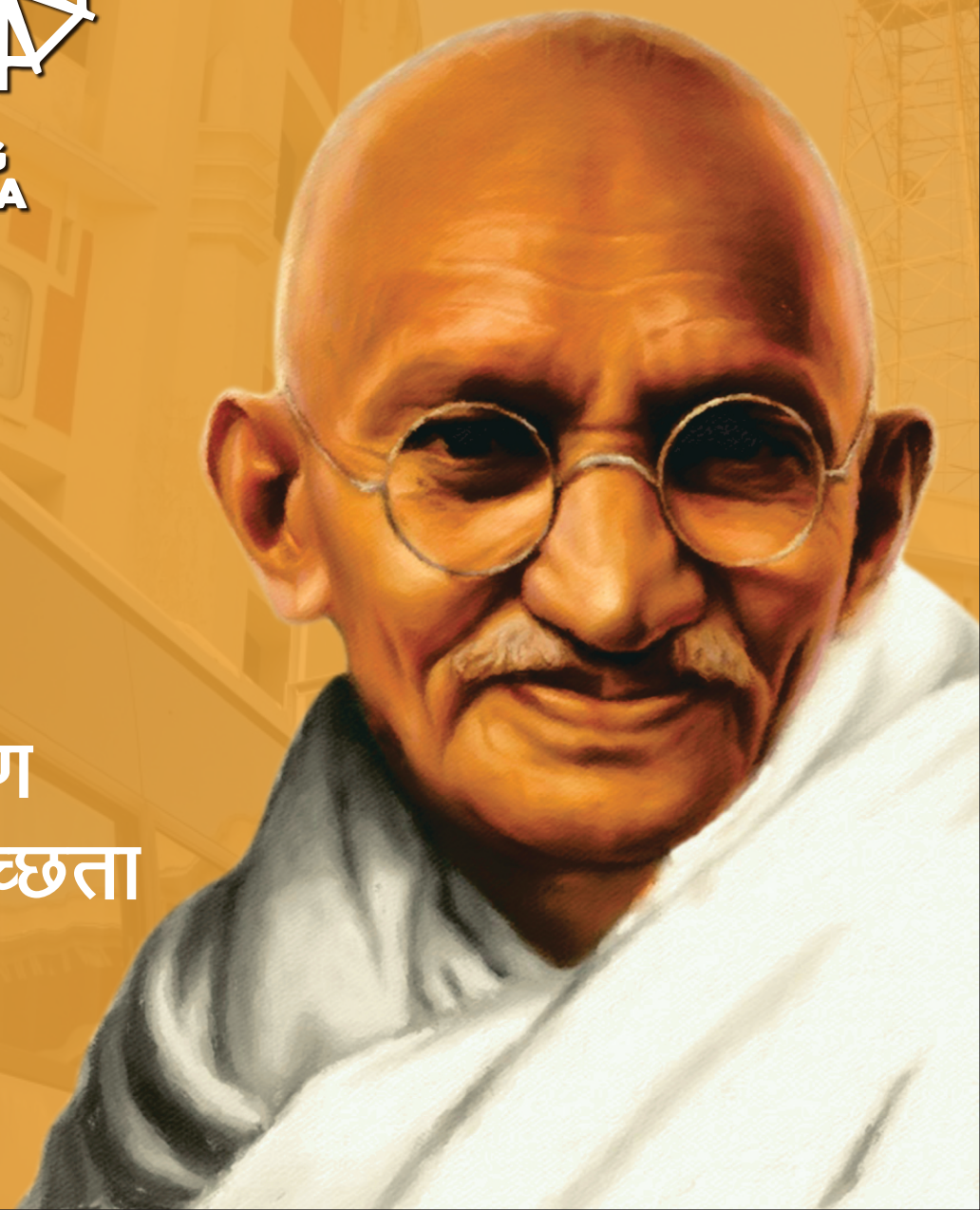

गाँधी @150

सेवा

सहयोग

समर्पण

स्वच्छता

''आने वाली पीढ़ियां बड़ी मुश्किल से यह विश्वास करेंगी कि गांधीजी जैसा हाड़-मांस का व्यक्ति वास्तव में कभी इस पृथ्वी पर हुआ था।''

आइंस्टीन

प्रकाश जावडेकर
Prakash Javadekar

सत्यमेव जयते

मंत्री
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन और
सूचना एवं प्रसारण
भारत सरकार

MINISTER
ENVIRONMENT, FOREST &
CLIMATE CHANGE AND
INFORMATION & BROADCASTING
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रभाग की हिंदी गृह पत्रिका ''आकाशवाणी समाचार भारती'' के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भाषा की मनुष्य के जीवन में एक अहम भूमिका है। भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण ही नहीं करती, अपितु अपने संप्रेषण के माध्यम से सामाजिक संपर्क में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। वस्तुतः हिन्दी भाषा मात्र संप्रेषण और ज्ञान–वृद्धि का माध्यम ही नहीं, बल्कि उन सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की वाहक भी है जो मानव सभ्यता का आधार–स्तंभ हैं।

प्रभाग की गृह पत्रिका '' आकाशवाणी समाचार भारती'' हिंदी के विकास में एक कड़ी है। इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रकाश जावडेकर)

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अमित खरे, भा.प्र.से.
सचिव
AMIT KHARE, IAS
Secretary

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
Government of India
MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING
SHASTRI BHAWAN, NEW DELHI - 110001

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी है कि आकाशवाणी का समाचार सेवा प्रभाग हिन्दी गृह पत्रिका 'आकाशवाणी समाचार भारती' के आठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। यह निश्चित रूप से प्रभाग के लिए गर्व की बात है।

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में भारतीय भाषाओं की संरचना, प्रकृति और उनके सामाजिक और सांस्कृतिक दायित्व को समझने और उसे लोक–जीवन तक पहुंचाने की नितांत आवश्यकता है। भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा होने के कारण हिन्दी का प्रयोग अपरिहार्य है। प्रभाग की गृह पत्रिका सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सृजनशीलता के माध्यम से हिन्दी के विकास की ओर अग्रसर है।

हिन्दी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

25.7.2019
(अमित खरे)

सूचना का अधिकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि समाचार सेवा प्रभाग आकाशवाणी, नई दिल्ली द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'आकाशवाणी समाचार भारती' के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत विविधताओं का देश है। यहां अनेक भाषाएं व बोलियां बोली जाती हैं। किसी भी देश की सरकार अपनी कल्याणकारी योजनाओं की सूचना जनता तक तभी पहुंचा सकती है जब वह उनसे उनकी भाषा में संप्रेषण करे। भारत सरकार के स्वच्छता अभियान, योग दिवस की लोकप्रियता का कारण राजभाषा हिंदी है। प्रधानमंत्री जी 'मन की बात' हिंदी में ही करते हैं और इस कार्यक्रम की लोकप्रियता सभी को ज्ञात है।

उम्मीद है कि समाचार सेवा प्रभाग की हिंदी गृह पत्रिका भी हिंदी के प्रचार–प्रसार में इसी प्रकार अपनी भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

ए. सूर्य प्रकाश

(ए. सूर्य प्रकाश)

शशि शेखर वेम्पटि
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

Shashi Shekhar Vempati
Chief Executive Officer

सत्यमेव जयते

प्रसार भारती | PRASAR BHARATI

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

संदेश

आज की सदी सूचना और प्रौद्योगिकी की सदी है। इंटरनेट की सहायता से सूचनाओं का आदान–प्रदान तेजी से हो रहा है। इंटरनेट के माध्यम से भी हिंदी सिखाई और पढ़ाई जा रही है। इंटरनेट के माध्यम से हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक नई पहचान मिली है। भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान, मेडिकल सांइस और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। विश्व के कई देश भारत से इन क्षेत्रों में सहयोग ले रहे हैं। हमारे वैज्ञानिकों की इन उपलब्ध्यिों का लाभ देश के दूर–दराज स्थित क्षेत्रों में ले जाने की आवश्यकता है। इसके लिए हिंदी संपर्कसूत्र के रूप में एक अहम भूमिका निभा सकती है। समाचार सेवा प्रभाग हिंदी समाचारों और अपने अन्य कार्यक्रमों द्वारा यह कार्य वर्षों से करता आ रहा है।

इस दिशा में एक और कदम है 'आकाशवाणी समाचार भारती' का प्रकाशन।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

शशि शेखर

(शशि शेखर वेम्पटि)

ईरा जोशी
Ira Joshi

सत्यमेव जयते

प्रधान महानिदेशक
Principal Director General

समाचार सेवा प्रभाग : आकाशवाणी
News Services Division : All India Radio

संदेश

''आकाशवाणी समाचार भारती'' का यह आठवां अंक है। समाचार सेवा प्रभाग अपने समाचारों के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करता रहा है। भारत का लोक सेवा प्रसारक होने के नाते प्रभाग अपने समाचारों और समाचार आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से देश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के निवासियों से संपर्क बनाए रखता है।

गृह पत्रिका 'आकाशवाणी समाचार भारती' भी इस दिशा में एक और कदम है। प्रभाग के देश–विदेश स्थित अधिकारियों व कार्मिकों की हिंदी में प्रकाशित रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की ओर दृढ़ निश्चयात्मक कदम है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी को शुभकामनाएं।

(ईरा जोशी)

आकाशवाणी

प्रसार भारती
Prasar Bharati

भारत का लोक सेवा प्रसारक
India's Public Service Broadcaster

इस अंक में

क्र. सं.	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	गांधी – कालखंड	भारत–दर्शन	9
2.	मेरे सपनों का भारत : गांधी	प्रकाशन विभाग	11
3.	"मेरा जीवन ही मेरा संदेश है" महात्मा गांधी	ललिता जोशी	13
4.	गांधी जीवन दर्शन : स्वच्छता ही सेवा	डॉ. अतुल कुमार तिवारी	14
5.	गांधीजी और खादी का प्रयोग	अंशुमान मिश्र	17
6.	गांधी का शिक्षा दर्शन	उमेश चतुर्वेदी	20
7.	ह्यूस्टन का ''लिटिल इंडिया'' –गांधी डिस्ट्रिक	डॉ. अतुल कुमार तिवारी	22
8.	महात्मा गांधी और राष्ट्रभाषा	प्रकाशन विभाग	28
9.	नीलमत पुराण : कश्मीर की एक जीती जागती तस्वीर	रविन्द्र कौल 'रवि'	31
10.	लल्लेश्वरी: कश्मीरियत की मिसाल	प्रकाशन विभाग	34
11.	भारत– यू.ए.ई. मैत्री का प्रतीक : गांधी ज़ायद प्रदर्शनी	कंचन प्रसाद	37
12.	श्रीलंका में रामायण से जुड़े स्थल	संतोष कुमार	39
13.	भारत–नेपाल संबंधःएक नए युग की शुरुआत	राजकुमार	41
14.	आजाद मीडिया और राष्ट्रभाषा के शिल्पकार सरदार पटेल	उमेश चतुर्वेदी	51
15.	सर्वशिक्षा अभियान और उत्तर प्रदेश	हरीलाल	54

क्र. सं.	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
16.	मेघालय : मेघों के घर में स्वच्छता की बयार	समीर वर्मा	56
17.	आदिवासी संस्कृति और विरासत का समन्वय है मध्य प्रदेश का जनजातीय संग्रहालय	संजीव कुमार शर्मा	59
18.	चंद्रयान–2	एम. जया सिंह	62
19.	बेबसी	नवीन कुमार	63
20.	प्रयागराज कुंभ : आस्था और विश्वास का संगम	संजीव कुमार शर्मा	64
21.	बेटी	राजश्री वी. कालघटगी	69
22.	परिसर	राजश्री वी. कालघटगी	69
23.	जिंदगी	बलजीत कौर	70
24.	हादसा	बलजीत कौर	70
25.	मैं हूं मध्य प्रदेश	नीलेश कुमार कलभोर	71
26.	साक्षात्कार : राम वी. सुतार	संतोष द्विवेदी	72
27.	झम्मन मेट्रो में	सुनील जैन राही	76
28.	भारतीय अन्वेषक : नैन सिंह रावत	ललिता जोशी	78
29.	स्त्री	सुचिता रावत	80

आकाशवाणी समाचार भारती

समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी की वार्षिक गृह पत्रिका 'आठवा अंक–2019'

संपादकीय विवरण

संरक्षक
सुश्री ईरा जोशी

मुख्य संपादक
डॉ. अतुल कुमार तिवारी

संपादक
श्रीमती ललिता जोशी

सहयोग
श्रीमती नरेश कुमारी

मुद्रक एवं सज्जा
व्यापार भारती प्रैस
3423, दूसरी मंजिल,
महिन्द्रा पार्क, रानी बाग,
दिल्ली–110034
मो. 9810011807,
9873731136

निः शुल्क
आंतरिक वितरण हेतु

संपादकीय

स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसने संपर्क भाषा के रूप में सशक्त भूमिका निभाई है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी अपने आंदोलनों में सम्प्रेषण की भाषा हिंदी ही रखी। उनका मानना था कि हिंदी जनमानस की भाषा है। स्वतंत्रता संग्राम की यह संपर्क भाषा आज व्यापार और वाणिज्य की भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित हो चुकी है। हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता और ग्राह्यता के कारण भारतीयता को जीवंत बनाए रखा है। राष्ट्रभाषा हिंदी अब विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में अपनी पैठ बनाती जा रही है। हिंदी के विकास की यह सतत प्रक्रिया अनवरत है। समाचार सेवा प्रभाग की गृह पत्रिका का आठवां अंक इसी अन्विति का एक और प्रयास है। मुख्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी और विदेशों में स्थित विशेष संवाददाता तथा देशभर में स्थित क्षेत्रीय समाचार ईकाइयों के संवाददाताओं की रचनाओं का योगदान इसी बात का द्योतक है कि हिंदी में रचनाधर्मिता अनायास ही लेखकों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। इस वर्ष हम महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मना रहे हैं। गांधीजी का जीवन ही उनका संदेश था। गांधीजी का सम्पूर्ण जीवन सेवा, समर्पण, सहयोग, स्वच्छता को समर्पित रहा है। आकाशवाणी समाचार भारती का यह अंक गांधीजी को समर्पित है।

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों/तथ्यों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

गांधी कालखंड

1881 : राजकोट हाईस्कूल में पढ़ाई

1883 : कस्तूरबाई से विवाह

1869 : 2 अक्टूबर, पोरबंदर काठियावाड़ में जन्म

1888 : प्रथम पुत्र संतान का जन्म , सितम्बर में वकालत पढ़ने के लिए इंग्लैंड रवाना

1891 : पढ़ाई पूरी कर देश लौटे, माता पुतलीबाई का निधन, बम्बई तथा राजकोट में वकालत आरम्भ की

1893 : भारतीय फर्म के लिए केस लड़ने दक्षिण अफ्रीका रवाना हुए। वहां उन्हें सभी प्रकार के रंगभेद का सामना करना पड़ा

1894 : दक्षिण अफ्रीका में नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की

1901 : सपरिवार स्वदेश रवाना हुए तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों को आश्वांसन दिया कि वे जब भी आवश्यकता महसूस करेंगे वे वापस लौट आएंगे

1901 : देश का दौरा किया, कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया तथा बम्बई में वकालत का दफ्तर खोला

1902 : भारतीय समुदाय द्वारा बुलाए जाने पर दक्षिण अफ्रीका पुनः वापस लौटे

1903 : जोहान्सबर्ग में वकालत का दफ्तर खोला

1904 : 'इंडियन ओपिनियन' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया

1906 : एशियाटिक ऑर्डिनेंस के विरुद्ध जोहन्सबर्ग में प्रथम सत्याग्रह अभियान आरंभ किया

1907 : 'ब्लैक एक्ट' भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों के जबरदस्ती पंजीकरण के विरुद्ध सत्याग्रह

1910 : जोहन्सबर्ग के निकट टॉलस्टॉय फॉर्म की स्थापना की

1917 : बिहार में चंपारण सत्याग्रह का नेतृत्व

1918 : फरवरी – अहमदाबाद में मिल मजदूरों के सत्याग्रह का नेतृत्व तथा मध्यस्थता द्वारा हल निकाला

1921 : बम्बई में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई, व्यापक अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया

1924 : साम्प्रदायिक एकता के लिए 21 दिन का उपवास रखा – बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए

1925 : एक वर्ष के राजनैतिक मौन का निर्णय

1927 : 'बारदोली सत्याग्रह' सरदार पटेल के नेतृत्व में

1928 : कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया – पूर्ण स्वराज का आहवान

1929 : पूर्ण स्वराज के लिए राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आंदोलन का आरंभ

1930 : ऐतिहासिक 'नमक सत्याग्रह' साबरमती से दांडी तक की यात्रा

1932 : यरवदा जेल में अस्पृश्यों के लिए अलग चुनावी क्षेत्र के विरोध में उपवास – यरवदा पैक्ट को ब्रिटिश अनुमोदन तथा गुरुदेव की उपस्थिति में उपवास तोड़ा

1934 : अखिल भारतीय ग्रामोद्योग की स्थापना की

1938 : बादशाह ख़ान के साथ एन. डब्यू. एफ. पी. का दौरा

1940 : व्यक्तिगत सत्याग्रह की घोषणा – विनोबाभावे को पहला व्यक्तिगत सत्याग्रही चुना

1942 : – 'भारत छोड़ो' आंदोलन का राष्ट्रव्यापी आह्वान

– उनके नेतृत्व में अंतिम राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह

– पूना के आगाखां महल में बंदी जहां सचिव एवं मित्र महादेव देसाई का निधन

1944 : 22 फरवरी, को आगाखां महल में कस्तूरबा का 74 वर्ष की आयु में निधन

1946 : ब्रिटिश कैबिनेट मिशन से भेंट–पूर्वी बंगाल के 49 गांवों की शान्तियात्रा जहां साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़की हुई थी

1947 : साम्प्रदायिक शांति के लिए बिहार यात्रा

– नई दिल्ली में लॉर्ड माउंटबेटन तथा जिन्ना से भेंट

– देश विभाजन का विरोध

– 15 अगस्त, 1947 को कलकत्ता में दंगे शांत कराने के लिए उपवास तथा प्रार्थना

– दिल्ली में साम्प्रदायिक आग से झुलसे जन–मानस को सांत्वना देने पहुंचे

1948 : जीवन का अंतिम उपवास 13 जनवरी से 5 दिनों तक दिल्ली के बिड़ला हाउस में – देश में फैली साम्प्रदायिक हिंसा के विरोध में

1948 : दिल्लीं के बिड़ला हाउस में देश में फैली हिंसा के विरोध में उपवास 30 जनवरी को नाथूराम गोडसे द्वारा शाम की प्रार्थना के लिए जाते समय बिड़ला हाउस में हत्या

साभार : भारत–दर्शन

मेरे सपनों का भारत : गांधी

मैं एक ऐसे भारत को बनाऊंगा जिसमें गरीब से गरीब भी यह अनुभव करेंगे कि यह उनका देश है, जिसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है, जिसमें ऊंच–नीच नहीं होगी, जिसमें सभी समुदाय पूरी तरह मिल–जुलकर रहेंगे। ऐसे भारत में अस्पृश्यता और नशाखोरी जैसी बुराइयों के लिए कोई स्थान न होगा। स्त्रियों को भी वही अधिकार होंगे जो पुरुषों को.. हम सारे संसार के साथ शांति और मेल रखेंगे। न तो हम किसी का शोषण करेंगे और न अपना शोषण होने देंगे। सभी के हितों की चाहे वे भारतीयों के हों या विदेशियों के, पूरी रक्षा की जाएगी बशर्ते वे लाखों–करोड़ों निरीह जनता के हितों के विरुद्ध न हों। मैं स्वयं देशी–विदेशी का भेद नहीं करता। मेरे सपनों का भारत यह है, इससे कम से मैं संतुष्ट नहीं हो सकता।

मेरे स्वराज्य का ध्येय अपनी सभ्यता की विशिष्टता को अक्षुण्ण बनाए रखना है। मैं बहुत–सी नई चीजों को लेना चाहता हूं, पर उन सबको भारतीयता का जामा पहनाना पड़ेगा।

''भारत ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है, ऐसा कब कहा जा सकेगा?'' जब आम जनता यह अनुभव करने लगेगी कि उसे अपनी उन्नति करने की और अपने रास्ते पर चलने की आजादी है।

मेरा यह विश्वास है और मैंने अनगिनत बार यह कहा है कि वास्तविक भारत इन थोड़े से शहरों में नहीं, बल्कि सात लाख गांवों में है। मगर हम शहरी लोगों की यही धारणा रही है कि असली भारत शहरों में ही देखने को मिलता है और गांव तो महज हमारी जरूरतें पूरी करने के लिए हैं। हम लोगों ने शायद ही कभी यह सोचने या जानने की कोशिश की है कि गांव के इन गरीब लोगों को पेट भर भोजन और तन ढकने के लिए वस्त्र मिलता है या नहीं।

लायनेल कर्टिस ने हमारे गांवों को गोबर के ढेर बताया है। हमें इन गांवों को आदर्श गांवों में परिणित करना है। हमारे गांवों के लोगों को ताजी हवा नहीं मिलती यद्यपि उनके चारों ओर ताजे से ताजा खाना विद्यमान रहता है। खाने के इस मामले में मैं एक मिशनरी या प्रचारक की तरह बात करता हूं, क्योंकि मेरा मिशन और ध्येय गांवों को सुंदर बनाना है।

ग्रामोद्योग योजना के पीछे भावना यह है कि हम अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति गांवों से करें, और जब हम यह देखें कि कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति गांवों द्वारा नहीं हो सकती तब हमें यह पता लगाना चाहिये कि क्या थोड़े से यत्न तथा संगठन द्वारा ग्रामीण जन ही लाभकारी ढंग से इन वस्तुओं की पूर्ति नहीं कर सकते। लाभ का अनुमान लगाते समय हमें ग्रामीणों के बारे में सोचना चाहिए न कि अपने बारे में। हो सकता है कि प्रारंभ में हमें साधारण मूल्य से कुछ अधिक देना पड़े और बदले में कुछ कम अच्छी चीज मिले, पर यदि हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वालों का ख्याल करेंगे और इस बात पर जोर देंगे कि वह अपने काम को बेहतर ढंग से करे और इसके लिए उन्हें मदद देने का भी कष्ट उठाएंगे तो स्थिति अवश्य सुधर जाएगी। ग्रामीणों को इतने ऊंचे दर्जे की कुशलता विकसित कर लेनी चाहिए कि उनके द्वारा तैयार चीजें बाहर बाजार में तुरंत बिक जाएं। जब हमारे गांव पूर्ण रूप से विकसित हो जाएंगे तब उनमें ऊंचे दर्जे की कुशलता तथा कलात्मक प्रतिभा वाले लोगों की कमी नहीं रहेगी। उनमें ग्रामीण कवि, ग्रामीण कलाकार, ग्रामीण शिल्पकार, भाषाविद् तथा संशोधन करने वाले होंगे। संक्षेप में, जीवन की कोई भी ऐसी वांछनीय चीज न होगी जो गांव में न पाई जाएगी। आज (भारतीय) गांव गोबर के ढेर हैं। कल वे नंदन वन के समान हो जाएंगे जिनमें अत्यंत मेधावी लोग निवास करेंगे, जिन्हें न कोई ठग सकता है और न शोषण कर सकता है।

बहुत–से लोग सोचते हैं कि खादी की वकालत करके मैं स्वराज के जहाज को हवा के रुख के प्रतिकूल ले जा रहा हूं और इस तरह मैं इसे अवश्य डुबो दूंगा वे यह भी सोचते हैं कि देश को अंधकार युग की ओर ले जा रहा हूं मैं इस संक्षिप्त लेख में खादी के पक्ष में तर्क नहीं करना चाहता। इसके लिए मैं पहले ही काफी दलीदें दे चुका हूं। यहां मैं यह दिखाना चाहता हूं कि खादी की प्रगति के लिए हर एक कांग्रेसी अथवा हर एक भारतीय क्या कर सकता है। यह (खादी) आर्थिक स्वतंत्रता तथा देश में सबकी समानता के आरंभ की सूचक है। ''हाथ कंगन को आरसी क्या?'' हर एक स्त्री –पुरुष आजमा कर देख लें और तब उसे स्वयं मेरे कथन की सच्चाई का पता लग जाएगा।

हम सत्य तथा अहिंसा को केवल ग्रामीण जीवन की सादगी में ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आज संसार गलत रास्ते पर जा रहा है तो मुझे इससे भयभीत नहीं होना चाहिए। हो सकता है कि भारत भी उसी मार्ग पर जाए और इस पतंगे की तरह अंत में अपना विनाश कर डाले जो लौ के चारों ओर तेजी से घूम–घूम कर उसी में जल मरता है। परंतु जीवन की अंतिम सांस तक मेरा यह परम कर्त्तव्य है कि मैं भारत को तथा उसके जरिए पूरे विश्व को इस विनाश से बचाने का प्रयत्न करता हूं।

ग्राम स्वराज की मेरी कल्पना यह है कि ग्राम एक ऐसा पूर्ण गणतंत्र हो, जो अपनी मुख्य जरूरतों के लिए अपने पड़ोसियों पर भी निर्भर न हो और फिर भी दूसरी बहुतेरी जरूरतों के लिए एक–दूसरे पर निर्भर हो, जिनमें दूसरों पर निर्भरता जरूरी है। इस तरह हर एक गांव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरत का तमाम अनाज और कपड़े के लिए कपास खुद पैदा कर ले। उसके पास अपने पशुओं के लिए चरागाह और गांव के वयस्क व्यक्तियों व बच्चों के लिए मन बहलाव और खेल–कूद के मैदान होने चाहिए। हर एक गांव का अपना एक नाटकघर, एक पाठशाला और एक सभा भवन होगा। पानी के लिए उसका अपना इंतजाम होगा, पानी कल होंगे जिससे गांव के सभी लोगों को पीने का शुद्ध पानी मिलेगा। कुंओं और तालाबों पर गांव का पूरा नियंत्रण रखकर यह काम किया जा सकता है। बुनियादी तालीम के आखिरी दर्जे तक शिक्षा सबके लिए लाजमी होगी। जहां तक संभव हो सकेगा, गांव के सारे काम सहकारिता के आधार पर किए जाएंगे।

अनगिनत गांवों से बना यह संगठन एक से ऊपर एक चढ़ते हुए खंडों में नहीं, बल्कि एक के बाद एक बढ़ते हुए घेरों के रूप में होगा। जिंदगी पिरामिड की शक्ल में नहीं होगी, जहां ऊपर का शिखर नीचे की नींव पर टिका होता है। वह तो समुद्र में उठने वाले भंवर की तरह होगी, जिसका केंद्र बिंदु व्यक्ति होगा। यह व्यक्ति हमेशा अपने गांव की खातिर मर–मिटने को और एक गांव दूसरे गांवों के लिए मर मिटने को तैयार होगा और इस तरह अंत में सारा समाज ऐसे लोगों का बन जाएगा, जो उद्धत और अहंकारी न होकर विनम्र होंगे और समुद्र की तरह गंभीर होंगे। इसलिए सबसे बाहर की परिधि अपनी ताकत का उपयोग भीतरी वृत को कुचलने में नहीं करेगी, बल्कि उन सबको ताकत देगी जो उसके अंदर हैं और यह उसी से अपनी शक्ति प्राप्त करेगी। इसमें न तो कोई पहला होगा, न आखिरी... और इसमें हर एक स्त्री–पुरुष को यह मालूम होगा कि वह क्या चाहता है और इससे भी बड़ी बात यह है कि उसे वह भी ज्ञात होगा कि किसी भी व्यक्ति को किसी चीज की कामना नहीं करनी चाहिए जिसे दूसरे लोग समान मेहनत करके नहीं प्राप्त कर सकते।

भारतीय ग्रामीण बाहरी मोटे–झोटेपन के पीछे बहुत पुरानी सभ्यता छिपी हुई है। उसके बाह्य गंवारूपन के पीछे आपको आध्यात्मिकता का अगाध भंडार मिलेगा। पश्चिम में आपको ऐसी चीज नहीं मिलेगी। उसकी बाहरी परत को हटा दीजिए और उसकी गरीबी तथा निरक्षरता को दूर कर दीजिए तो उसका सर्वोत्तम रूप, स्वतंत्र तथा सभ्य– संस्कृत नागरिक रूप सामने आएगा।

साभार : महात्मा गांधी का संदेश
प्रकाशन विभाग

"मेरा जीवन ही मेरा संदेश है"

महात्मा गांधी

ललिता जोशी

महात्मा गांधी का यह कथन अटल एवं शाश्वत है। यूं तो महात्मा गांधी का यह कथन उनके जीवन के प्रत्येक पहलू में साक्षात झलकता है। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती तक माननीय प्रधानमंत्री ने संपूर्ण भारत को गंदगी मुक्त करने का स्वच्छता अभियान चलाया था। महात्मा गांधी स्वयं ही स्वच्छता के पुजारी थे। उनका जीवन स्वच्छता को समर्पित था। गांधी जी ने स्वच्छता के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष किया और लोगों को स्वच्छता अपनाने के लिए प्रेरित भी किया। गांधी जी ने सबसे पहले स्वच्छता अभियान की शुरुआत दक्षिण अफ्रीका से की थी। यही वह स्थान है जहां उन्होंने स्वच्छता के मुद्दे को सार्वजनिक मंच पर रखा था।

गांधी जी का मानना था कि "स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपना लो कि वह आपकी आदत बन जाए।" "हमें स्वच्छता और सफाई का मूल्य पता होना चाहिए ..... गंदगी को हमें अपने बीच से हटाना होगा..... क्या स्वच्छता स्वयं ईनाम नहीं है।" (गांधी वांगमय भाग–4 पृष्ठ. सं. 146) गांधी जी स्वच्छता के प्रबल पक्षधर थे और उन्होंने देश के शहरों और गांवों में सफाई पर बल देते हुए कहा कि यदि हम साफ–सफाई रखेंगे तो हम बहुत–सी बीमारियों से दूर रहेंगे और हमारा शरीर भी स्वस्थ रहेगा। अक्सर हमारी यह धारणा होती है कि गांवों में साफ–सफाई रहती ही है, लेकिन गांधी जी के आदर्श गांव की संकल्पना कुछ और ही थी। उनके अनुसार आदर्श गांवों को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में होना चाहिए। प्रत्येक गांव में आवश्यकता की प्रत्येक सुविधा होनी चाहिए। महात्मा गांधी ने कहा था कि "बेहतर साफ–सफाई से ही भारत के गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है।" महात्मा गांधी ने 8–2–1935 के हरिजन में लिखा है कि "गांव के तालाबों को नहाने, कपड़े धोने और पीने और खाना बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। बहुत से ग्रामीण इन तालाबों में जानवरों को भी नहलाते हैं। भैंसें उनमें तैरती हुई दिखाई पड़ती है।" गांधी जी का मानना था कि इधर–उधर थूकने की आदत बहुत गंदी होती है। गांधी जी ने दिनांक 2–11–1919 के नवजीवन में स्वच्छता व अच्छी आदतों के विषय में लिखा है कि "गलियों में किसी को भी इधर–उधर नहीं थूकना चाहिए और न ही अपनी नाक साफ करनी चाहिए। क्योंकि कुछ मामलों में यह हानिकारक हो सकता है क्योंकि इनमें कीटाणु भी हो सकते हैं और वो अन्य लोगों को तपेदिक से प्रभावित कर सकते हैं। कुछ जगहों पर सड़क पर थूकना अपराध माना जाता है। पान चबाकर थूकने वालों और तम्बाकू खाने वालों का दूसरों की भावनाओं से कोई सरोकार नहीं होता। थूक और नाक छिड़कने पर निकली गंदगी को मिट्टी से ढकना चाहिए।" महात्मा गांधी को स्वच्छता और स्वास्थ्य दोनों ही प्रिय थे। गांधी जी ने 24–5–1925 के नवजीवन में लिखा है "मैं 35 वर्ष पूर्व यह सीख गया था कि शौचालय ड्रांइग रूम की तरह साफ–सुथरा होना चाहिए। ———— बहुत सी बीमारियों का कारण हमारे शौचालय की गंदी स्थिति और कहीं भी मल करने की हमारी गंदी आदतें हैं।"

गांधी जी ने व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्वच्छता के लिए आवश्यक हर छोटी–बड़ी आदतों का वर्णन करते हुए उनके महत्व को भी बताया है कि किस प्रकार जगह–जगह थूकने और मल–मूत्र का उत्सर्जन हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकता है। गांधी जी स्वच्छता की इस अवधारणा को मौजूदा समय में मूर्त रूप देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वयं ही स्वच्छता अभियान की शुरुआत 2 अक्टूबर, 2014 को की। माननीय प्रधानमंत्री जी ने नई दिल्ली की वाल्मिकी कालोनी में स्वयं अपने हाथों से झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान की शुरुआत की। इसी अभियान के कारण देश के हर घर में शौचालय बनाने के लिए सरकार ने आर्थिक सहायता दी है। आज गांवों के घरों में तो शौचालय बने ही हैं लेकिन शहरों में निशुल्क सार्वजनिक शौचालयों की व्यवस्था भी हुई है जिनमें पानी एवं सफाई की समुचित व्यवस्था है। नई दिल्ली क्षेत्र में स्थित शौचालय एकदम गांधी जी की स्वच्छता की अवधारणा के अनुसार हैं कि "शौचालय ड्राइंग रूम की तरह साफ–सुथरे होने चाहिए।"

गांधी जीवन दर्शन

स्वच्छता ही सेवा

डा. अतुल कुमार तिवारी

महात्मा गांधी का जीवन–दर्शन सेवा, समर्पण, सहयोग और स्वच्छता के चार मूल स्तम्भों पर आधारित है, जिसकी झलक हमें न सिर्फ उनकी रोजमर्रा की जीवनशैली में मिलती है बल्कि वही भाव हम भारत या फिर विदेश में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। शिक्षा, स्वदेशी, सफाई, स्वच्छता और स्वास्थ्य पर उन्होंने शुरू से ही बल दिया। आज जब हम वर्ष 2019 में उनके जन्म के 150वें साल में प्रवेश कर रहे हैं, तो यही आदर्श हमें नये भारत के लिए नई उर्जा, उत्साह और सेवा के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दे रहे हैं।

बापू का कहना था कि अगर आप स्वयं स्वच्छ नहीं हैं तो आप स्वस्थ नहीं रह सकते। उन्होंने इस बात की पुरजोर वकालत की, कि हर किसी को अपना कूड़ा खुद साफ करना चाहिए। अपने तर्क के समर्थन में वो झाड़ू और बाल्टी का उदाहरण देते थे। और तो और, उनका कहना था कि हमें अपने शौचालयों को रसोईघर जैसा साफ–सुथरा रखना चाहिए। काका कालेलकर ने 'बापू की झांकियां' में 1915 में गांधी जी के शांतिनिकेतन दौरे से जुड़ा एक दिलचस्प वाकया बताया है। गांधी जी ने वहां के विद्यार्थियों को जो छात्र सफाई के काम को राजी नहीं थे उन्हें अपना भाषण सुनाने की बजाय अपनी साफगोई से रसोईघर के बर्तन धोने और सफाई के काम के लिए तैयार कर लिया। बापू भाषण से एक दिन पहले खुद रसोई पहुंच कर बर्तन और प्लेटे साफ करने में जुट गए। जब विद्यार्थियों को पता चला तो वे न सिर्फ शर्मसार हुए बल्कि सभी लोग सफाई के काम में जुट गए। इसके बाद बापू ने छात्रों को संदेश दिया कि स्वच्छता उन्हें आत्मविश्वासी, अनुशासित और साफ नजरिये वाला इंसान बनाती है।

अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में गांधी जी चक्की पर पिसाई कर रहे थे। वहां चारों ओर दाने बिखरे थे। लोग काम में जुटे थे। उस वक्त कुछ वकील आ गए और उनसे कहा कि वे कुछ काम करना चाहते हैं। गांधी जी ने बस उन्हें अनाज को साफ करने के काम पर लगा दिया। वकीलों को बुरा लगा कि वे क्या कह रहे हैं। लेकिन बात कहने वाले स्वयं बापू थे तो वकीलों को अनाज साफ करना पड़ा और देखते–देखते पूरी जगह की सफाई हो गई। जब उनका काम खत्म हुआ तो बापू ने कहा सेवा सबसे पवित्र कर्म है और सही कर्म ही ईश्वर की पूजा है। स्वच्छता, सेवा और सहयोग की ऐसी मिसाल जो लोगों के लिए प्रेरणा बन जाए, ढूंढे नहीं मिलती। अभिप्राय यह है कि महात्मा गांधी ने सेवाभाव के साथ–साथ स्वच्छता और सफाई की भावना को भी वही दर्जा दिया।

गांवों में स्वच्छता और सफाई उनकी प्राथमिकता थी और साथ ही एक बहुत बड़ा सामाजिक मुद्दा भी। गांधी वाड्मय के भाग–90 में लोकसेवक संघ के संविधान का मसौदा है। कार्यकर्ताओं के बारे में गांधी जी कहते हैं, ''कार्यकर्ता को गांव की स्वच्छता और सफाई के बारे में जागरूक करना चाहिए और गांवों में फैली बीमारियों को रोकने के लिए सभी जरूरी कदम उठाने चाहिए। स्वच्छता को जन–जन तक पहुंचाने की उनकी अपील उनके भारत भ्रमण से और भी बलवती हुई। 19 नवम्बर, 1925 के यंग इंडिया में वे लिखते हैं, ''देश के अपने भ्रमण के दौरान मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ गंदगी को देखकर हुई। इसे दूर करना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। आइए हम सब मिलकर इसे दूर करें और एक बेहतर कल का सपना

पूरा करें।'' उन्होंने कहा कि बेहतर साफ–सफाई से ही भारत के गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है।

महात्मा गांधी ने हमेशा से लोगों के बीच रहकर सार्वजनिक स्वच्छता अभियान को पंख दिए। वे रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे में देशभर के दौरे पर निकले। कारण यह था कि वे तीसरे श्रेणी के डिब्बे की गंदगी की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते थे। उन्होंने समाचार पत्रों को पत्र लिखे और कहा कि हमें स्वच्छता की आदत विकसित करने का मौका नहीं गंवाना चाहिए। यही नहीं धार्मिक स्थानों पर भी सफाई और स्वच्छता बनाए रखने की उन्होंने पुरजोर वकालत की। यंग इंडिया के तीन 3 फरवरी, 1927 के अंक में उन्होंने बिहार के पवित्र शहर गया की गंदगी के बारे में जिक्र किया और कहा कि उनकी हिंदू आत्मा गया के गंदे नालों में फैली गंदगी और बदबू के खिलाफ बगावत करती है। 25 अगस्त, 1925 को कलकत्ता में उनका भाषण धार्मिक नेताओं को स्वच्छता अभियान में भागीदार होने की अपील तो है ही, साथ ही एक स्पष्ट संदेश से कम नहीं। गांधी वाड.मय के भाग–28 में वे कहते हैं,''वह (कार्यकर्ता) गांव के धर्मगुरू या नेता के रूप में लोगों के सामने न आएं बल्कि अपने हाथ में झाड़ू लेकर आएं। गंदगी, गरीबी, निठल्लापन जैसी बुराइयों का सामना करना होगा और उनसे लड़ना होगा।'' दक्षिण अफ्रीका से भारत आए बापू ने कलकत्ता में कार्यक्रम स्थल पर गंदगी और अस्वच्छता को दूर करने का बीड़ा खुद ही उठा लिया। उन्होंने झाड़ू लेकर खुद ही शौचालयों की सफाई शुरू कर दी।

शारीरिक स्वच्छता और स्वास्थ्य को लेकर महात्मा गांधी का रुख बिल्कुल स्पष्ट था। वे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, ''आरोग्य के लिए स्वच्छता जरूरी है, पर सफाई का मतलब सिर्फ नहाना ही नहीं है। नहाने का अर्थ है शरीर का मैल साफ कर त्वचा के छिद्रों को खोलना। इसमें बच्चों और बड़ों में काफी लापरवाही दिखाई देती है। साथ ही सार्वजनिक स्थानों में थूकना, मलमूत्र त्याग करना और कूड़ा फेंकना अनेक बीमारियों को न्यौता देने जैसा है।

साबरमती आश्रम हो या कोई भी जगह महात्मा गांधी अपना शौचालय खुद साफ करते थे। औरों को भी उनकी हिदायत यही थी। जो लोग आश्रम में उनके साथ रहते थे उनके जिम्मे दो काम जरूरी थे–पहला–आश्रम की सफाई का काम और दूसरा– शौचालय की सफाई और उसका वैज्ञानिक निस्तांतरण। यानि आज की तारीख में जिस अवशिष्ट के निस्तांतरण की बात हम करते हैं, उसकी संकल्पना बापू ने समय से बहुत पहले ही हम सबके सामने रखी थी। यही नहीं कूड़े कचरे के निस्तारण के संबंध में वे कहते थे कि मैला किसानों के लिए सोना है।

25 अप्रैल 1929 के यंग इंडिया के अंक में बापू ने लोगों से सफाई को सामूहिक दायित्व के रूप में स्वीकार करने की अपील की। वे लिखते हैं, ''हम अपने घरों से गंदगी हटाने में विश्वास करते हैं। लेकिन समाज की परवाह किये बगैर। इसे गली में फेंकने में विश्वास करते हैं। हम व्यक्तिगत रूप से साफ–सुथरे रहते हैं, परंतु राष्ट्र के, समाज के सदस्य के होने पर नहीं। जिसमें कोई व्यक्ति छोटा सा अंश होता है। यही कारण है कि हम अपने घर के दरवाजों पर कितनी अधिक गंदगी और कूड़ा कचरा पड़ा हुआ पाते हैं। हमारे आसपास कोई अजनबी अथवा बाहरी लोग गंदगी फैलाने नहीं आते हैं। ये हम ही जो अपने आसपास रहते हैं।''

स्वैच्छिक सफाई कर्मियों के प्रति गांधी जी का अपार स्नेह और विश्वास था। हरिपुरा में 11 फरवरी 1938 को सफाई कार्यकर्ताओं के बीच उन्होंने कहा, ''मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि आप लोगों ने यह काम अपने हाथ में ले लिया है। लेकिन आप लोगों को यह जानना चाहिए कि यह काम प्रेम से किया जाना चाहिए। क्योंकि जो लोग गंदगी फैलाते हैं; उन्हें यह नहीं मालूम कि वे क्या बुराई कर रहे हैं। यह बात बुद्धिमता पूर्वक भी किया जाना चाहिए क्योंकि हमें उनकी कुटेच छुड़ानी है और उनका स्वास्थ्य सुधारना है।''

बापू ने समाज में स्वच्छता के प्रति लोगों के आचरण और व्यवहार में बाहरी दिखावा और आडंबर से दूर रखने की हिदायत भी दी। 9 मई, 1932 को गांधी जी ने ''सफाई सच्चाई पवित्रता स्वच्छता'' शीर्षक से आलेख लिखा। उनके उस कालखंड के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वे लिखते हैं– ''मैंने एक भाव स्पष्ट करने के लिए चार शब्दों का उपयोग किया है। हमें आत्मा का बोध है। इसलिए हमारी सफाई भीतर–बाहर दोनों की होनी चाहिए, पर अंदर की सफाई तो सच्चाई है। सच्चाई ही सबसे बड़ी पवित्रता, इसलिए स्वच्छता है। हम बाहर से साफ–सुथरे हों और अंतर मैला हो या तो यह आडंबर मात्र है, या दंभ है या विषयभोग की

निशानी है।'' आज की तारीख में जब हम स्वच्छ, और स्वस्थ भारत की बात करते हैं, वो बरबस ही हमारा ध्यान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की स्वच्छता के बारे में जागरूकता की ओर आकर्षित हो जाता है, क्योंकि उनका मानना था कि स्वच्छता ईश्वर की भक्ति के समान है। उनका सपना था स्वच्छ भारत का जिसमें भारत के सभी नागरिक एकसाथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए काम करें। गांधी जी के अनमोल वचनों में से एक है, ''स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपना लो कि वह आपकी आदत बन जाए।'' यही आदत स्वच्छता ही सेवा की भावना को परिलक्षित करती है। नमन है सेवा, समर्पण, स्वच्छता और सहयोग के इस जीवन दर्शन को और इन्हीं पदचिह्नों पर चलकर हम सब इस लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

गांधी जीवन दर्शन

सेवा–समर्पण–सहयोग–स्वच्छता

''स्वच्छता पर बापू के अनमोल वचन''

1. राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है।
2. यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है।
3. बेहतर साफ–सफाई से ही भारत के गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है।
4. शौचालय को अपने ड्राइंग रूम की तरह साफ रखना जरूरी है।
5. नदियों को साफ रखकर हम अपनी सभ्यता को जिंदा रख सकते हैं।
6. अपने अंदर की स्वच्छता पहली चीज है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए। बाकी बातें इसके बाद होनी चाहिए।
7. हर किसी एक को अपना कूड़ा खुद साफ करना चाहिए।
8. मैं किसी को गंदे पैर के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूंगा।
9. अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है जो सतह को चमकदार और साफ कर देता है।
10. स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपना लो कि वह आपकी आदत बन जाए।

संकलनकर्ता : डा. अतुल कुमार तिवारी

‘गांधीजी और खादी का प्रयोग’

अंशुमान मिश्र

हम सभी ने गांधीजी के सत्य के प्रयोगों के बारे में पढ़ा है। सत्याग्रह, असहयोग, अहिंसा आदि उनके प्रयोग ज्यादातर राजनैतिक रूप में जाने गए लेकिन ‘खादी का उनका प्रयोग’ राजनैतिक के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी उतना ही उपयोगी था। खादी हाथ से बनने वाले वस्त्र होते हैं और इसका सूत चरखे से बनाया जाता है। गाँधीजी ने भारत में बढ़ती गरीबी के समाधान के रूप में चरखे का जिक्र पहली बार 1908 में अपनी किताब ‘हिन्दस्वराज’ में किया था।

1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आने के बाद, अपने एक साल के देश – भ्रमण में गांधीजी को यह अहसास हुआ कि पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े हुऐ भारत में असमानता की खाई और गरीबी कहीं ज्यादा क्रूर है। गांधीजी यह समझ गए थे कि जब तक सबसे निचले तबके के इंसान को सकारात्मक रूप से समाज से जोड़ा नही जाएगा तब तक ‘स्वराज’ असम्भव है और ‘स्वदेशी’ इसके लिए आधार बना।

इसी विचार के साथ 1918 में उन्होंने देश से गरीबी मिटाने और देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ‘खादी आंदोलन’ की शुरुआत की जिसके तहत लोगों को देश में बने हुए कपड़े पहनने के लिए जागरूक किया गया। मजेदार बात ये थी कि 1915 में भारत वापस आने तक वास्तव में गाँधीजी ने चरखा देखा तक नहीं था लेकिन स्वदेशी वस्त्र को लेकर उनका संकल्प इतना दृढ़ था कि जब साबरमती में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना हुई तो उसी समय उन्होंने वहाँ कुछ हथकरघे लगाए।

आश्रमवासियों ने यह तय किया कि वे हाथ से बुने हुऐ सूत का हथकरघे पर बुना हुआ कपड़ा ही पहनेंगें। इसमें उन्हें बहुत कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा क्योंकि किसी को बुनाई का काम नहीं आता था। बहुत मुश्किल से कुछ बुनकर मिले, जिन्होंने देशी सूत का कपड़ा बुन देने की मेहरबानी की। इन बुनकरों को आश्रम की तरफ से यह गारंटी देनी पड़ी थी कि देशी सूत का बुना हुआ कपड़ा खरीद लिया जायेगा। लेकिन ये आश्रमवासियों के लिए पर्याप्त नहीं था और उन्हें मिल के बने हुए सूत का प्रयोग करना पड़ा।

गांधीजी अपनी आत्मकथा में कहते है, ‘ऐसे में तो हम कातने वाली मिलों के एजेंट बन गए थे, इसलिए हमने तय किया अब हम चरखे से सूत कातेंगें और कपड़ा भी खुद ही बुनेंगे। क्योंकि जब तक हम हाथ से कातेंगें नहीं, तब तक हमारी पराधीनता बनी रहेगी’। इस तरह खादी का जन्म हुआ।

उस समय ये ‘स्वदेशी आंदोलन’ के रूप में जाना जाता था। हालांकि ये करना आसान नहीं था, क्योंकि चरखा भी प्रचलित नहीं था और उसे चलाने वाले भी नहीं मिल रहे थे।

बड़ी मुश्किल से गंगाबेन मजूमदार ने बड़ोदा के वीजापुर में कुछ लोगों को इसके लिए तैयार किया और जल्द ही 'वीजापुर खादी' का नाम हो गया। इस तरह ये यात्रा आगे बढ़ी। साबरमती आश्रम में भी ये कार्य आगे बढ़ा। गांधीजी इसके लिए कोई भी कीमत देने को तैयार थे।

1906 के स्वदेशी आंदोलन से ही इस विचार की नींव पड़ी थी लेकिन उस समय 'विदेशी बहिष्कार' को 'स्वदेशी उत्पादन' से प्रतिस्थापित नहीं किया जा सका जिसका फायदा मिल मालिकों ने उठाया और जनता को इसका कोई लाभ ना मिल सका। गाँधीजी इस बात से आहत थे। इसलिए 1918 में उन्होंने खादी के जरिए स्वदेशी उत्पादन को प्रोत्साहित किया और आंदोलन को आगे बढ़ाया।

भारत की आजादी की लड़ाई में पूरे देश को संगठित करने में खादी और चरखे का बड़ा योगदान रहा है। राजनैतिक रूप से गांधीजी ने उपनिवेशवाद और अन्याय के खिलाफ अपनी लड़ाई में चरखे का उपयोग किया। इसे भारत के आत्मसम्मान से जोड़ा। आर्थिक रूप से इसका मकसद आत्मनिर्भरता और गरीबी के खिलाफ लड़ाई था। इसने ऐसा 'कोऑपरेटिव मॉडल' विकसित किया जिसने बहुत से गरीबों को रोजगार दिया। इसने भारत के अनुरूप आर्थिक मॉडल विकसित किया जिसमें श्रम ज्यादा और पूंजी कम लगे। सामाजिक रूप से इस आंदोलन ने नैतिक मूल्यों की बात की। अस्पृश्यता दूर करने का संदेश दिया। लाखों महिलाओं को रोजगार देकर उन्हें राजनैतिक और आर्थिक मुख्यधारा में शामिल किया। गरीबों का आत्मसम्मान बढ़ाया।

गांधीजी का कहना था हम उतना ही उपभोग करें जितना उत्पादन कर सके। हम उपभोग जरूरत के आधार पर करें, आत्म निर्भरता के आधार पर करें ना कि लालच के आधार पर। अर्थात, खादी का उत्पादन करें और उसी का उपयोग करें। उनका मानना था कि इस प्रक्रिया में जागृत हुआ व्यक्ति स्वतंत्रता आंदोलन में स्वतःस्फूर्त शामिल होगा। इस प्रकार खादी आजादी के मतवालों की वेशभूषा या वर्दी बन गई। गांधीजी ने खादी को एक अहिंसक और रचनात्मक हथियार की तरह इस्तेमाल किया। खादी के बलबूते गांधी जी ने भारत में शासन जमाकर बैठी अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी।

स्वतंत्रता मिलने पर गाँधीजी के स्वराज की भावना के अनुरूप संविधान के अनुच्छेद 40 में ग्राम–स्वराज का जिक्र है। इसी कड़ी में 'पंचायती राज' की स्थापना की गई लेकिन 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग' की स्थापना आजादी के लगभग एक दशक बाद की गई। हालाँकि खादी और ग्रामोद्योग आयोग में धीरे–धीरे खादी को लेकर लोगों का समर्पण भाव कम होता दिखा। जिसके बाद समय के साथ खादी कार्यक्रम की दिशा और दशा दोनों ही डावांडोल दिखी। इसके लिए समय–समय पर देश में 'खादी बचाओ' जैसे आंदोलन भी हुए हैं।

आज जब हम गांधीजी की 150वीं जयन्ती मना रहे हैं तो यह बात मन में आना स्वाभाविक है कि क्या आज हमें खादी की जरूरत है? क्या इसका वर्तमान स्वरूप ठीक है?

खादी हमारी विरासत का प्रतीक है। एक वस्त्र के रूप में आज खादी ने भारत के साथ–साथ विदेशों में भी अपनी पैठ बनाई है। वर्तमान सरकार ने भी खादी के महत्व और उसको प्रोत्साहित करने पर काफी बल दिया है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' में कई बार खादी की बात की है। प्रधानमन्त्री मोदी ने एक समारोह में खादी को बढ़ावा देने के लिये नारा दिया था ''खादी फॉर नेशन, खादी फॉर फैशन''। इसके परिणामस्वरूप खादी की लोकप्रियता बढ़ी और खादी का अधिक व्यापार होना शुरू हो गया। जानी–मानी हस्तियों ने भी खादी को प्रोत्साहित करने में योगदान दिया। पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश और बिहार आदि राज्यों से लाए गए अलग–अलग तरह की खादी से तैयार किए गए कपड़ों से पश्चिमी और भारतीय दोनों तरह की पोशाकें तैयार की जाती हैं।

आज के उपभोक्तावादी युग में तमाम ब्रांड्स के साथ खादी की अपनी लोकप्रियता है और यह एक ब्रांड के रूप में उभर रही है। इसकी बिक्री बढ़ाने के लिए कॉरपोरेट के तरीके से नीतियां बनाई जा रही हैं। जो कि सही भी है क्योंकि बात केवल खादी कपड़ा पहनने या बेचने की नहीं है, बात है स्वदेशी उत्पादन की, बात है गरीबी के अभिशाप से मुक्ति की, बात है महिला सशक्तिकरण की, बात है रोजगार सृजन की और बात है आर्थिक समानता की।

यही खादी आंदोलन की मूल भावना भी थी। इनके बिना खादी पर विचार करना अधूरा है।

आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में सभी देश एक दूसरे से जुड़े हुए हैं लेकिन उसके मूल में भी देश के अंदर होने वाला उत्पादन ही है जो कि देश के निर्यात को भी निर्देशित करता है। यह भारत की 'मेक इन इंडिया' नीति का महत्वपूर्ण अंग है। भारत में स्वयं सहायता समूह' हों या अन्य लघु और ग्रामोद्योग इन्होंने खादी की भावना को समय अनुसार मजबूत ही किया है और देश की प्रगति में योगदान दिया है। आज हमारे पास खादी के अनेक उत्पाद हैं। वर्ष 2017–18 में खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने देश में लगभग 140 लाख लोगों को रोजगार है।

पिछले पांच सालों में केवल 'प्रधानमन्त्री रोजगार सृजन कार्यक्रम' के तहत 20 लाख से ज्यादा रोजगार दिये गये। वर्ष 2014–15 के मुकाबले वर्ष 2018–19 में खादी का उत्पादन दोगुने से ज्यादा बढ़कर 1900 करोड़ रुपये के पार हो गया। इसी अवधि में खादी और ग्रामोद्योग आयोग का कारोबार लगभग 150% की वृद्धि के साथ 74300 करोड़ रुपये के पार हो गया।

कहने का मतलब, खादी को उचित प्रोत्साहन जारी रखने की आवश्यकता है। यही गाँधीजी को सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी।

महात्मा गांधी और हिंदी

1. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

2. हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय, हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।

3. हिंदी भाषा के लिए मेरा प्रेम सब हिंदी प्रेमी जानते हैं।

4. हिन्दुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहां हो ही नहीं सकता।

गांधी का शिक्षा दर्शन

उमेश चतुर्वेदी

भारत में इन दिनों नई शिक्षा नीति की काफी चर्चा है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति का प्रारूप दस्तावेज पेश करके 15 अगस्त 2019 तक लोगों की इस पर राय मांगी थी। मंत्रालय इस तैयारी में है कि नई शिक्षा नीति के दस्तावेज को अक्तूबर में जारी कर दिया जाए। नई शिक्षा नीति पर विवाद बहुत हैं। इसमें भाषा के सवाल को लेकर सबसे ज्यादा विवाद है। नई शिक्षा नीति पर जब भी बात होती है, गांधी के शैक्षिक दर्शन की चर्चा भी जरूर होती है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि 1986 के बाद से हमारी शिक्षा नीति में गांधी का शैक्षिक दर्शन लगातार दूर होता गया है। गांधीजी आजाद भारत में शिक्षा को लेकर कितने चिंतित थे, इसका उदाहरण बुनियादी तालीम पर लिखा उनका दस्तावेज है। जिसे उन्होंने साल 1935 में बुनियादी शिक्षा पर डॉक्टर जाकिर हुसैन की पहल पर वर्धा में होने वाली बैठक के पहले लिखा था। दरअसल 1935 के भारत सरकार अधिनियम के तहत 1937 में राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव होने थे और उन चुनावों के बाद राज्यों में बनने वाली सरकारों को जिन आठ विषयों पर शासन चलाना था, उनमें से एक बुनियादी शिक्षा भी थी। आखिर चुनी जाने वाली सरकारें किस तरह की शिक्षा व्यवस्था लागू करेंगी, इसे लेकर चर्चा के लिए गांधी जी ने जाकिर हुसैन को काम सौंपा था। लेकिन वे खुद को रोक नहीं पाए और भावी भारत की बुनियादी शिक्षा को लेकर उन्होंने खुद ही दस्तावेज तैयार कर दिया था।

गांधीजी ने शिक्षा पर लगातार अपने विचार व्यक्त किए हैं। गांधी की 150 वीं जयंती के मौके पर ये विचार अब भी पुराने नहीं पड़े हैं और समीचीन ही हैं। गांधी 1921 से लेकर अपने जिंदगी के आखिरी दिनों तक भारतीय शिक्षा व्यवस्था को लेकर अपने सपने और विचार को जाहिर करते रहे। हरिजन के 2 नवंबर 1947 के अंक में लिखे अपने एक लेख में गांधीजी ने शिक्षा पर पांच सूत्री विचार व्यक्त किए हैं। उन्हें जानना बेहद जरूरी है। उन्होंने लिखा है,:

1. पूरी शिक्षा स्वावलंबी होनी चाहिए, यानी आखिर में पूंजी को छोड़कर अपना सारा खर्च उसे खुद देना चाहिए।

2. इसमें आखिरी दरजे तक हाथ का पूरा–पूरा उपयोग किया जाए, यानी विद्यार्थी अपने हाथों से कोई–न–कोई। उद्योग–धंधा आखिरी दरजे तक करे।

3. सारी तालीम विद्यार्थियों को प्रांतीय भाषा द्वारा दी जानी चाहिए।

4. इनमें सांप्रदायिक, धार्मिक शिक्षा के लिए कोई जगह नहीं होगी, लेकिन बुनियादी नैतिक तालीम के लिए काफी गुंजाइश होगी।

5. यह तालीम, फिर उसे बच्चे लें या बड़े, औरतें लें या मर्द, विद्यार्थी अपने–आपको सारे हिंदुस्तान का नागरिक समझेंगे, इसलिए उन्हें एक अंतर–प्रांतीय भाषा सीखनी होगी। सारे देश की एक भाषा नागरी या उर्दू में लिखी जाने वाली हिंदुस्तानी ही हो सकती है। इसलिए विद्यार्थियों को दोनों लिपियां अच्छी तरह सीखनी होंगी।

गांधीजी ने अपने इन पांच सूत्रों में भावी शिक्षा की एक तरह से बुनियाद ही रख दी है। उर्दू लिपि सीखना जरूरी करने के सुझाव को बदले माहौल में छोड़ भी दें तो इन सूत्रों का एक ही मकसद है कि भारत को ना सिर्फ सुशिक्षित नागरिक मिलें, जिनमें देशप्रेम की भावना कूट–कूटकर भरी हो, बल्कि वे भविष्य में देश के लिए उपयोगी भी साबित हों और खुद के लिए रोजगार–धंधा भी कर सकें। धार्मिकता और सांप्रदायिकता को तो गांधी नकारते हैं, लेकिन नैतिक शिक्षा पर गांधी जोर देने से भी नहीं हिचकते। यानी उन्हें पता है कि धर्म का लक्ष्य नागरिक को नैतिक बनाना है, उसे सांप्रदायिक बनाना नहीं। शिक्षा के माध्यम के लिए स्थानीय भाषाओं पर

गांधी पूरा जोर देते हैं। लेकिन दुर्भाग्य ही है कि हम हर बार गांधी का नाम तो लेते रहे, लेकिन उनकी सीखों को हम दरकिनार करते रहे।

1951 में प्रकाशित गांधीजी की पुस्तक सच्ची शिक्षा में भी उनके शिक्षा संबंधी विचार संकलित हैं। इस पुस्तक के पृष्ठ सात और नौ पर इनका पूरा विवरण है। उनमें से गांधी जी के 25 से लेकर 27 सूत्रों पर खास ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने लिखा है, ' शिक्षकों को बड़ी–बड़ी तनख्वाहें नहीं मिल सकतीं, किंतु वे जीविका चलाने लायक तो होनी ही चाहिए। शिक्षकों में सेवा–भावना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा के लिए कैसे भी शिक्षक से काम चलाने का रिवाज निंदनीय है। सभी शिक्षक चरित्रवान होने चाहिए।' सवाल यह है कि हमने गांधी के इस विचार को कितना आत्मसात किया है।

इसी पुस्तक में गांधी आगे लिखते हैं, "शिक्षा के लिए बड़ी और खर्चीली इमारतों की जरूरत नहीं है।" लेकिन असलियत में आज क्या हालत है, यह देखने की बात है। एक तरफ शहरों के महंगे पब्लिक स्कूलों की भारी–भरकम चमकती इमारतें हैं तो दूसरी तरफ बस्तियों और गांवों के काम चलाऊ विद्यालय भवन।

गांधी आगे लिखते हैं, "अंग्रेजी का अभ्यास भाषा के रूप में ही हो सकता है और उसे पाठ्यक्रम में जगह मिलनी चाहिए। जैसे हिंदी राष्ट्रभाषा है, वैसे ही अंग्रेजी का उपयोग दूसरे राष्ट्रों के साथ के व्यवहार और व्यापार के लिए है।"

गांधी के शिक्षा संबंधी ये विचार आज भी बेहद प्रासंगिक हैं। बेहतर होगा कि नई शिक्षा नीति में इन्हें शामिल करके हम अपने नौनिहालों को सही मायने में भारतीय शिक्षा देने की ओर कदम बढ़ाते। लेकिन सवाल यह है कि क्या गांधी के आज के देश में गांधी के ही ये विचार स्वीकार्य हो पाएंगे।

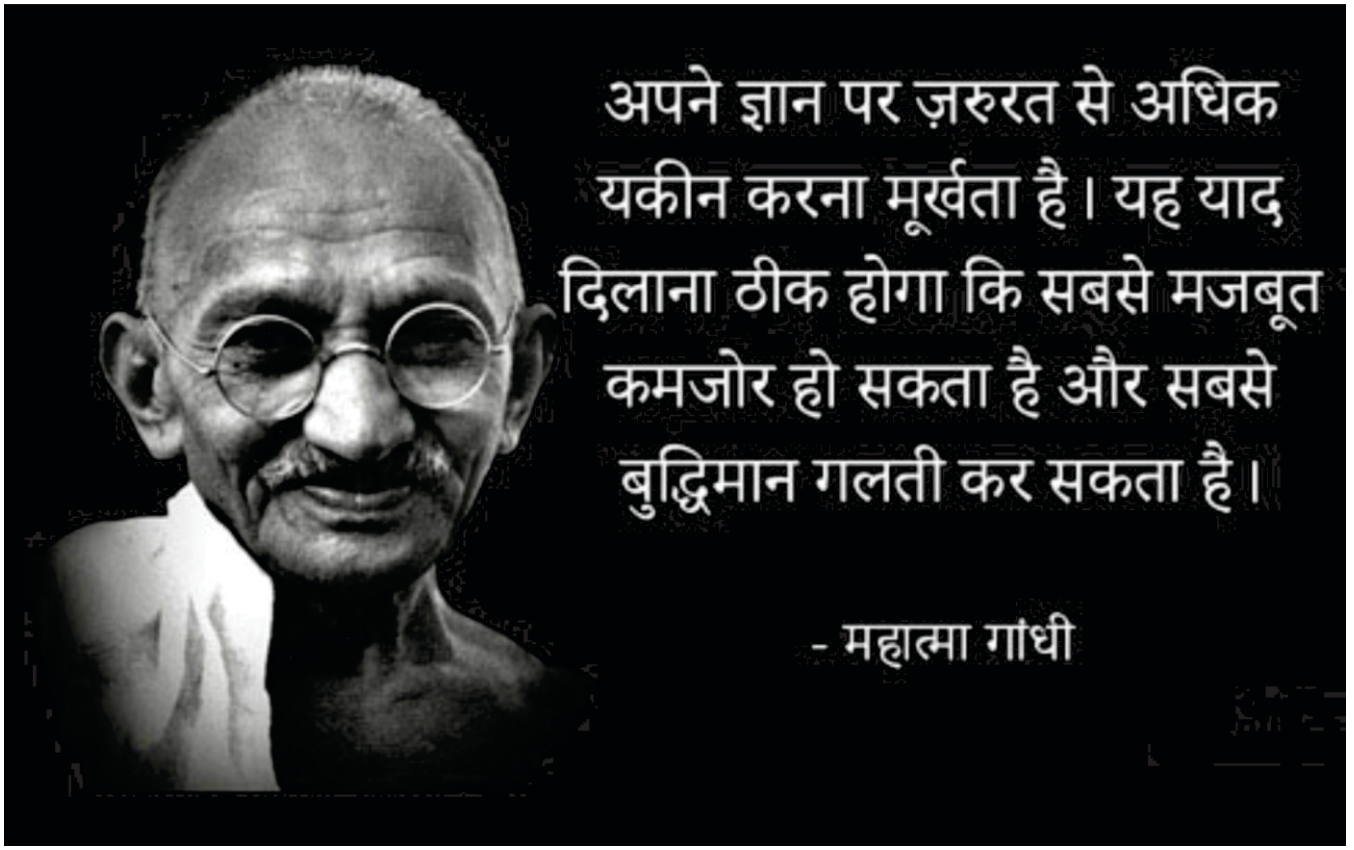

ह्यूस्टन का "लिटिल इंडिया" –गांधी डिस्ट्रिक

डा. अतुल कुमार तिवारी

अमरीका के टेक्सास राज्य की राजधानी ह्यूस्टन अपने आप में अनेक विविधताओं को समेटे हुए है। यहां करीब 15 लाख की आबादी है, प्रवासी भारतीयों की जिन्होंने मानों इसे दूसरा घर बना लिया है। सबसे अहम बात यह है कि इस नगर के केन्द्र में महात्मा गांधी की स्मृतियों को समर्पित गांधी डिस्ट्रिक भी है। जिसकी कहानी सबसे अलग है।

सन् 2010 में ह्यूस्टन के हिलक्राफ्ट एवेन्यू के इलाके को भारतवंशियों की मांग पर वहां की तत्कालीन मेयर एनीसे पारकर ने महात्मा गांधी डिस्ट्रिक का नाम दिया। इस इलाके में बड़ी तादाद में भारतवंशी रहते हैं। साथ ही अन्य दक्षिण एशियाई देशों के लोग भी जैसे अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका आदि। इस इलाके में अनेक भारतीय व्यवसाय फैले हुए हैं। चाहे वो शुभलक्ष्मी किराना स्टोर हो या फिर राजा स्वीट्स या फिर गहना ज्वैलर्स या लक्ष्मी साड़ी। खास बात यह है कि इन व्यवसायों को चलाने वाले भारतीय मूल के अमरीकी नागरिक हैं जो हिलक्राफ्ट इलाके में 40 से 50 वर्ष पूर्व रोजगार की तलाश में आये और यहीं बस गए। ये लोग अपने सभी त्योहार होली, दशहरा, दीवाली आदि मिलजुल कर मनाते हैं। अपनी सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियों से यह समुदाय अक्सर सुर्खियों में रहता है। यही वजह है कि इसे ह्यूस्टन के लिटिल इंडिया की संज्ञा भी दी गई है।

तमाम एशियाई नागरिकों की सम्मिलित पहल पर तकरीबन 15 साल पहले हिलक्राफ्ट के इलाके को महात्मा गांधी डिस्ट्रिक का नाम देने की मुहिम शुरू हुई। ह्यूस्टन के स्थानीय नियमों के अनुसार किसी भी स्थान का नाम बदलने के लिए वहां रह रहे 75 प्रतिशत वैध नागरिकों के हस्ताक्षर वाली याचिका स्थानीय सरकार को पेश करने की जरूरत होती है। लेकिन संख्या बल में कमी के कारण प्रयास सफल नहीं हो पा रहे थे। तब जाकर ह्यूस्टन में रह रहे भारतीय व्यवसायी संघ ने अन्य एशियाई मूल के संगठनों और लोगों से अपील की। लगातार प्रयास जारी रहे और आखिरकार 26 जनवरी, 2010 को ह्यूस्टन की मेयर एनीसे पारकर ने हिलक्राफ्ट इलाके का नाम बदलकर गांधी डिस्ट्रिक रखने की विधिवत मंजूरी दे दी। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि इलाके के नाम में बदलाव न सिर्फ सांकेतिक है बल्कि बापू की सर्वधर्म समभाव और मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी निष्ठा और समर्पण के लिए उनके सम्मान का प्रतीक भी है। आज जब कोई भी गांधी डिस्ट्रिक से होकर गुजरता है तो उनका ध्यान बरबस ही ह्यूस्टन के दो प्रमुख फ्रीवेज के बीच में बसे इस लिटिल इंडिया की ओर आकर्षित हो उठता है।

इस इलाके का आकर्षण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पिछले महीने हुए अमरीका दौरे से और भी बढ़ जाता है। क्योंकि अब गांधी डिस्ट्रिक के अलावा ह्यूस्टन में बापू को समर्पित 'गांधी एटर्नल म्यूजियम' भी जल्द ही बनेगा। यह श्रद्धाजंलि है राष्ट्रपिता को उनकी 150वीं जन्मतिथि पर न सिर्फ भारत में बल्कि भारत से हजारों मील दूर अमरीका के टेक्सास प्रांत के ह्यूस्टन शहर की तरफ से।

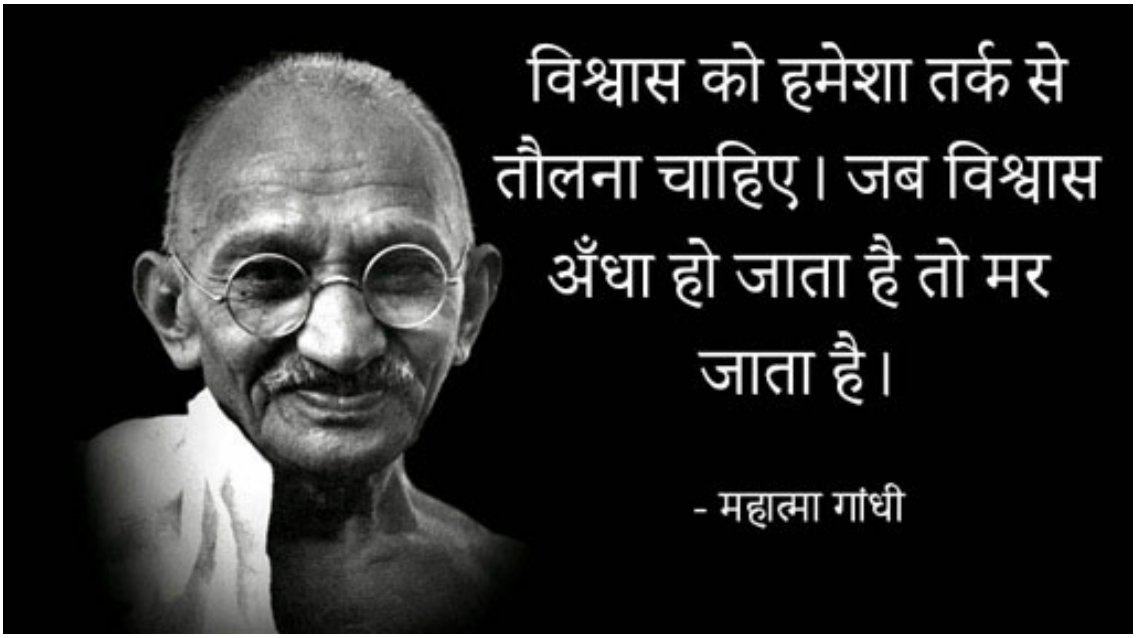

गांधी स्मृति

गाँधीजी इटली में 16 दिसंबर 1931

गाँधीजी और सरोजिनी नायडू राउंड टेबल कांफ्रेंस में जाते हुए -1931

गाँधीजी पत्रकारों के साथ रोम में 13 दिसंबर 1931

गाँधीजी और सरदार पटेल जुलाई 1945

गांधी स्मृति

स्ट्रेचर टुकड़ी के ग्रुप लीडर के परिधान में

वकालत के शुरुआती दिनों में जोहान्सबर्ग, वर्ष-1900

गाँधीजी खेड़ा सत्याग्रह के दिनों में - 1918

गाँधीजी लंदन में - 1931

गांधी स्मृति

गाँधीजी शिमला कॉन्फ्रेंस में

गाँधीजी, कस्तूरबा गाँधी के साथ

गाँधीजी, मौलाना आज़ाद और सरदार पटेल के साथ

गाँधीजी लुसाने में 11 दिसंबर 1931

गांधी स्मृति

गाँधीजी एक अंग्रेज खनिक की कॉटेज के समक्ष-1931

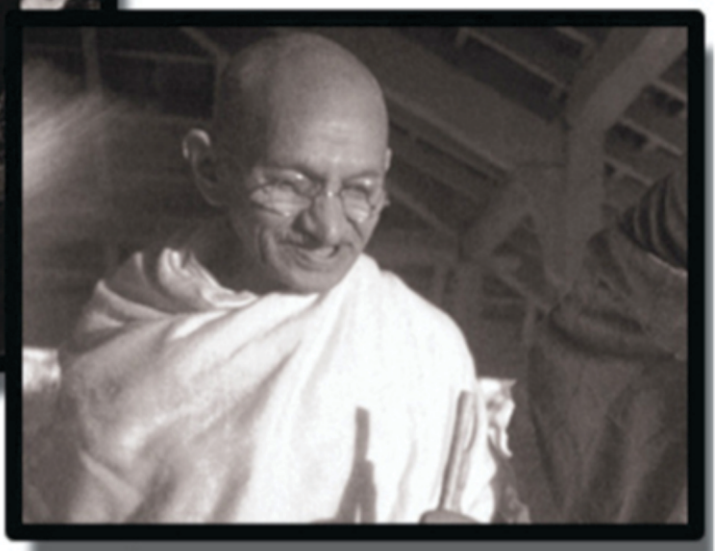

गाँधीजी बारदोली गुजरात -1939

गाँधीजी इस्लिंग्टन लंदन अक्टूबर 1931

गाँधीजी अभिवादन स्वीकार करते हुए

संकलनकर्ता : नीतेश कुमार

महात्मा गांधी और राष्ट्रभाषा

''हमारी भाषा हमारा ही प्रतिबिंब होती है'', और यदि आप मुझसे यह कहते हैं कि हमारी भाषाएं इतनी अशक्त हैं कि उनके द्वारा सर्वोत्तम विचार व्यक्त नहीं किए जा सकते तो मैं यह कहूंगा कि हमारा अस्तित्व जितनी जल्दी समाप्त हो जाए उतना ही हमारे लिए अच्छा होगा। क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह कल्पना करता हो कि अंग्रेजी कभी भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है? राष्ट्र पर यह मुसीबत क्यों डाली जाए। मुझे पूना के कुछ प्राध्यापकों के साथ घनिष्ठ बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन्होंने मुझे यह विश्वास दिलाया कि हर एक भारतीय युवक, चूंकि वह अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा पाता है, अपने जीवन के कम से कम छह बहुमूल्य वर्ष व्यर्थ गंवा देता है। इस संख्या को हमारे स्कूलों तथा कालेजों से निकलने वाले विद्यार्थियों की संख्या से गुणा कीजिए और फिर स्वयं यह पता लगाइए कि राष्ट्र ने कितने हजार वर्ष गंवा दिए हैं। हमारे ऊपर यह आरोप लगाया जाता कि हमारे अंदर आगे बढ़ने की शक्ति नहीं है। हमारे अंदर यह शक्ति हो ही कैसे सकती है जबकि हमें अपने जीवन के बहुमूल्य वर्षों को एक विदेशी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने में लगा देना पड़ता है? इस प्रयास में भी हम विफल हो जाते हैं।

वास्तव में, हम अंग्रेजी पर भी अधिकार नहीं प्राप्त कर पाते, कुछ थोड़े–से लोगों को छोड़कर हम लोगों के लिए ऐसा करना संभव नहीं हो सका है। हम अंग्रेजी में अपनी भावनाओं को उतनी अच्छी तरह कभी व्यक्त नहीं कर सकते जितनी अच्छी तरह अपनी मातृभाषा में। हम अपने बचपन के सारे वर्षों की याद कैसे भुला सकते हैं? पर जब हम अपनी उच्चतर शिक्षा, जैसा कि हम उसे कहते हैं, एक विदेशी भाषा के माध्यम से शुरू करते हैं तब हम ठीक यही काम करते हैं।

मैंने लोगों को यह कहते सुना है कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीय ही नेतृत्व कर रहे हैं तथा देश के लिए सभी काम कर रहे हैं। यदि ऐसी बात न होती तो बहुत ही बुरा होता। जो शिक्षा हमें मिलती है वह मात्र अंग्रेजी शिक्षा ही है। हमें उसका कुछ न कुछ फायदा तो अवश्य दिखाना चाहिए। लेकिन मान लीजिए कि हमें पिछले पचास वर्षों में अपनी भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा मिली होती तो आज स्थिति क्या होती। आज भारत स्वतंत्र होता। हमारे शिक्षित लोग अपने ही देश में विदेशियों जैसे न होते वरन् उनकी वाणी देश के हृदय को छूती, गरीब से गरीब लोगों के बीच वे काम करते और पिछले पचास वर्षों में वे जो कुछ हासिल करते वह राष्ट्र की एक विरासत होती। आज हमारी पत्नियां तक हमारे अच्छे से अच्छे विचारों में शरीक नहीं हो पातीं। प्रोफेसर बसु और प्रोफेसर राय तथा उनके शानदार अनुसंधानों पर दृष्टिपात कीजिए। क्या् यह लज्जा की बात नहीं है कि आम जनता को उनके अनुसंधानों के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

हम समाज की सबसे बड़ी सेवा यह कर सकते हैं कि अंग्रेजी भाषा की ज्ञान प्राप्ति को हम जो झूठा महत्व देना सीख गए हैं, उससे अपने को तथा समाज को मुक्त करें। हमारे स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। यह देश की राष्ट्रभाषा होती जा रही है। हमारे सर्वोत्तम विचार इसी भाषा में व्यक्त किए जाते हैं। अंग्रेजी शिक्षण की आवश्यकता में विश्वास के कारण हम दास बन गए हैं। यदि हम आदत से मजबूर न होते तो हम यह अनुभव कर सकते थे कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण हमारी प्रतिभा बिल्कुल अलग–थलग हो गई है, हम आम जनता से अलग हो गए हैं, देश की सर्वोत्तम मेधा बंदी बन गई है और जो नए विचार हमें मिले हैं उनसे आम जनता को कोई फायदा नहीं हुआ है। पिछले 60 वर्षों से ज्ञान संचय करने के बजाय हम नए–नए शब्दों तथा उनके उच्चारण रटने में लगे रहे हैं। हमने अपने माता–पिता से प्राप्त ज्ञान की नींव पर निर्माण करने के बजाय उसे लगभग भुला दिया है। इतिहास में इस

तरह का और कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह राष्ट्र का दुर्भाग्य है।

हम समाज की पहली तथा सबसे बड़ी सेवा यह कर सकते हैं कि हम अपनी देशी भाषाओं को पुनः अपनाएं, हिंदी को उसके राष्ट्रभाषा के स्वाभाविक पद पर फिर से प्रतिष्ठित करें और समस्त प्रांतीय कार्यों को अपनी–अपनी प्रांतीय भाषाओं में तथा राष्ट्रीय कामों को हिंदी में करना शुरू करें। जब तक हमारे स्कूल तथा कॉलेज हमें देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं देने लगते तब तक हमें चैन से नहीं बैठना चाहिए। आज अंग्रेजी का अध्ययन उसके व्यापारिक एवं तथाकथित राजनीतिक महत्व के कारण किया जाता है। हमारे लड़के यह सोचते हैं और वर्तमान परिस्थितियों में उनका यह सोचना सही भी है कि अंग्रेजी के बिना उन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती। लड़कियों को अच्छी शादी के लिए अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। मैं ऐसी अनेक स्त्रियों को जानता हूं जो अंग्रेजी इसलिए सीखना चाहती हैं जिससे वे अंग्रेजों से अंग्रेजी में बातें कर सकें। मैं ऐसे पतियों को भी जानता हूं जो इस बात से दुखी हैं कि उनकी पत्नियां उनसे तथा उनके मित्रों से अंग्रेजी में बातचीत नहीं कर सकतीं। ऐसे परिवारों को भी जानता हूं जिनमें अंग्रेजी को मातृभाषा का रूप दिया जा रहा है। देशी भाषाओं का कुचला जाना तथा उन्हें निर्बल बनाना, जैसा कि उनके साथ हुआ है मेरे लिए असह्य है। मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता कि मां–बाप अपने बच्चों को तथा पति अपनी पत्नियों को अपनी भाषाओं को छोड़कर अंग्रेजी में पत्र लिखें।

यद्यपि मैंने पश्चिमी सभ्यता के प्रति अपने ऋण को खुले आम स्वीकार किया है तथापि मैं यह कह सकता हूं कि राष्ट्र की जो कुछ भी सेवा मैं कर सकता हूं उसका एकमात्र कारण यह है कि जिस हद तक मुझसे बन पड़ा मैंने पूर्वी सभ्यता को अपने अंदर कायम रखा। यदि मैं अंग्रेजियत के रंग में रंगा होता, राष्ट्रीय भावना से रहित होता और आम जनता के तौर–तरीकों, आदतों, विचारों तथा महत्वाकांक्षाओं से अनभिज्ञ होता, उनकी कम परवाह करता और कदाचित उनसे नफरत भी करता तो मैं आम जनता के लिए बिल्कुल बेकार साबित होता।

जब कभी मैंने विद्यार्थियों की सभाओं में भाषण किया है, मुझे अंग्रेजी में बोलने की मांग पर आश्चर्य हुआ है। आपको मालूम है अथवा होना चाहिए कि मैं अंग्रेजी भाषा का प्रेमी हूं। लेकिन मेरी धारण है कि यदि भारत के विद्यार्थी, जिनसे यह आशा की जाती है कि देश के लाखों–करोड़ों लोगों के साथ मिल कर काम करेंगे और उनकी सेवा करेंगे, अंग्रेजी की बजाय हिंदी की ओर अधिक ध्यान दें तो वे इस काम के लिए ज्यादा योग्य बनेंगे। मैं यह नहीं कहता कि आपको अंग्रेजी नहीं सीखनी चाहिए, आप अवश्य सीखिए लेकिन जहां तक मेरा विचार है वह करोड़ों भारतीय घरों की भाषा नहीं हो सकती। वह हजारों अथवा लाखों व्यक्तियों तक ही सीमित रहेगी, करोड़ों तक नहीं पहुंच सकती। अतः जब छात्रगण मुझसे हिंदी में बोलने के लिए कहते हैं तब मुझे खुशी होती है।

अब हम राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विचार करें। यदि अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा होनी है तो उसे हमारे स्कूलों में एक अनिवार्य विषय बना दिया जाना चाहिए। पहले हम इस बात पर विचार करें कि क्या अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा बन सकती है?

हमारे कुछ विद्वान लोगों का, जो अच्छे देशभक्त भी हैं, कहना है कि इस प्रश्न को उठाना ही अज्ञान का द्योतक है। उनकी राय में वह तो राष्ट्र भाषा है ही।

सतही तौर पर विचार करने पर उक्त मत सही मालूम होता है। हमारे समाज के शिक्षित वर्ग को देखने से मालूम होता है कि अंग्रेजी के न रहने पर हमारा सारा काम ठप्प हो जाएगा। लेकिन गहराई से विचार करने पर पता चलेगा कि अंग्रेजी न तो हमारी राष्ट्रभाषा बन सकती है और न बननी चाहिए।

आइए देखें कि किसी भाषा के राष्ट्रभाषा बनने के लिए क्या–क्या बातें जरूरी हैं:

1. सरकारी अधिकारियों के लिए उसका सीखना आसान होना चाहिए।
2. वह भारत भर में धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विचार–विनिमय का माध्यम बनने के योग्य होनी चाहिए।
3. वह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जानी चाहिए।
4. समूचे देश के लोगों के लिए उसका सीखना सरल होना चाहिए।

5. इस भाषा का चुनाव करते समय अस्थायी अथवा क्षणिक हितों का ख्याल नहीं रखा जाना चाहिए।

अंग्रेजी इनमें से किसी भी शर्त को पूरा नहीं करती। तब वह कौन–सी भाषा है जो इन पांचों शर्तों की पूर्ति करती है? हमें मानना पड़ेगा कि वह हिंदी ही है।

भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से उच्च शिक्षा देने के कारण राष्ट्र की अपार बौद्धिक तथा नैतिक क्षति हुई है। हम अपने समय के इतने निकट हैं कि इस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि इससे कितनी गहरी क्षति हुई है। हम लोग, जिन्होंने इस तरह की शिक्षा पाई है, नहीं समझ सकते कि हमारी कितनी हानि हुई है।

साभार : महात्मा गांधी का संदेश
प्रकाशन विभाग

★ ★

महात्मा गांधी और आकाशवाणी

माना जाता है कि बापू ने 12 नवम्बर, 1947 को लिखने और बोलने के दो सशक्त माध्यमों के अलावा एक तीसरे माध्यम का पहली बार उपयोग किया था और वह था आकाशवाणी से प्रसारण। कहते हैं कि आकाशवाणी से अपनी बात रखने के बाद वे जाते वक्त यहां के कर्मियों को दीवाली की बधई देकर निकले। प्रख्यात कमेंटेटर जसदेव सिंह बताते थे कि वे आकाशवाणी भवन में बापू के यहां आने संबंधी जानकारी देने वाले ब्लॉक के आगे से गुजरते हैं तो उनके पैर ठिठक जाते हैं। वे कुछ पलों के लिए वहां रूक जाते हैं। उन्हें बापू के यहां आने और यहां के स्टाफ से मिलने की जानकारी रेडियो की महान शख्सियत मेलविल डिमेलो ने दी थी। मेलविल डिमेलो तब आकाशवाणी में कार्यरत थे। उन्होंने ही बापू की अंतिम यात्रा का आंखों देखा हाल भी रेडियो से दुनिया को सुनाया था। बहरहाल 1997 में गांधी जी के इस ऐतिहासिक प्रसारण के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिल्ली की जन –प्रसारण नामक संस्था ने इस दिवस को जन प्रसारण दिवस की तरह मनाना प्रारंभ किया अब आकाशवाणी इस दिन को लोक सेवा प्रसारण दिवस के रूप में मनाता है।

साभार : नवभारत टाइम्स
दिनांक – 26 सितम्बर, 2019

नीलमत पुराण : कश्मीर की एक जीती जागती तस्वीर

रविन्द्र कौल 'रवि'

कश्मीर न सिर्फ अपनी सुंदरता, रस्मो–रिवाज, कुदरती मंज़रों, आध्यात्म, संस्कृति, दर्शन–शास्त्र, वास्तु शिल्प, प्राचीन सभ्यता आदि के लिए जाना जाता है, बल्कि यह अपने महान इतिहास के लिए पूरे संसार में प्रसिद्ध है। अगरचि कश्मीर के बारे में अनगिनत इतिहास लिखे गए हैं और लिखे भी जा रहे हैं। ताहम इस बात से किसी को मुश्किल से इखतिलाफ हो सकता हो कि नीलमतपुराण और राजतरंगणी कश्मीर के दो विश्वसनीय एवं प्रमाणिक इतिहास हैं। इतिहासकारों ने मात्र इन्हीं दो इतिहासों को अधिकतम प्रमाणिकता देकर इन को कश्मीरी इतिहास के क्षेत्र में एक आधारशिला मानकर अपने अनुसंधान को आगे बढ़ाया। यह कश्मीर का भाग्य है, जिसका अपना एक विशाल और बाजाबता इतिहास है जो यहां के प्राचीन काल के इंसानी तहज़ीब ओ तमादन, रिवायात, आस्था , शिष्टाचार, एवं नैतिक मूल्यों आदि की सही अकासी (प्रतिबिम्ब) करता है और कश्मीर के बारे में बहुमूल्य जानकारियां प्रदान करता है। नीलमतपुराण कश्मीर का एक प्राचीन इतिवृत है जिसमें क्रमानुसार हालात ओ वाकयात की जानकारियां दर्ज हैं। प्राचीन काल में कश्मीर की घाटी एक झील थी। चारों ओर पानी ही पानी था यानि कि यह पानी से लबरेज़ थी। एक विशाल सागर की मानंद दिखने वाली यह झील 'सती सर' के नाम से जानी जाती थी। यह काफी गहरी और चौड़ी थी। झील में एक निर्दयी राक्षस रहता था। झील को कश्मीरी में ''सर'' कहते हैं और ''सती'' स्वयं माता सती है जो शक्ति के नाम से भी जानी जाती है। यह शक्ति शिव के बगैर नामुकम्मल है। शिव, देवों के देव महादेव ही तो हैं। कहा जाता है कि महादेव जी इसी झील में नहाया करते थे और माता सती के नाम से ही यह झील ''सती सर'' कहलाने लगी। इस झील में रहने वाला यह राक्षस अक्सर पानी में से निकलकर आस पास के पहाड़ों पर रहने वाले लोगों को और पशु–पक्षियों को सताता था। इस राक्षस के व्यवहार से सब तंग आ चुके थे। यह जल देव राक्षस आदिवासी ''नागों'' को भी नहीं बख्शता था, उन को भी मारता था। यहां यह कहना उचित होगा कि ''नाग'' शब्द के कई अर्थ हैं– नाग, सांप को भी कहते हैं और चश्मे को भी। नाग पवित्र स्वभाव के लोग थे। उन्हें पवित्र नाग कहा जाता था। जो हमेशा पूजा अर्चना में लगे रहते थे। नाग पर्वतों पर रहा करते थे। अच्छा व्यवहार रखने के कारण इन्हें सताया भी जाता था। गुणवान, यह नाग खुद किसी को भी कोई कष्ट नहीं पहुंचाते थे, लेकिन राक्षस इन्हें बहुत तकलीफ पहुंचाता था। यह जल देव बड़ा जालिम था। नागों के राजा ''नील नाग'' बहुत ही रहमदिल थे। जलउदभव देव से तंग आकर, आखिरकार नील नाग ने महर्षि प्रजापति कश्यप ऋषि से संपर्क करके उन को सारी विपदा सुनाई। यहां यह बताना उल्लेखनीय होगा कि नील नाग ने कभी भी जल उद्भव देव को कोई कष्ट नहीं पहुंचाया बल्कि यों कहें कि उसको पाला–पोसा। फिर भी यह राक्षस उन को सताता था। जब महर्षि प्रजापति कश्यप ऋषि ने यह दर्दनाक दास्तान सुनी। कहते हैं कि दोनों कश्यप ऋषि और नील नाग मिलकर ब्रह्मा जी के पास पहुंचे और उन से प्रार्थना याचना की। ब्रह्मा जी ने सारे देवी देवताओं को इस राक्षस से छुटकारा हासिल करने का आदेश दिया और राक्षस का काम तमाम कर दिया गया। यह भी कहा जाता है कि कश्यप ऋषि ने भगवान विष्णु से कहा कि वे झील से पानी निकालें। उन्होंने भगवान श्री कृष्ण के भाई बलभद्र को बुलाया और उन्होंने बाराहमुल्ला में खादिन यार के निकट पहाड़ में छेद कर, झील का पानी निकाला। इस तरह झील खुश्क हो गई और पहाड़ों से लोग उतर कर घाटी में बसने लगे।

नागों के राजा, नील नाग ने कश्मीर में ''नीलमत'' की स्थापना की। इसी ''नीलमत'' की एक विशेष पुस्तक नीलमत पुराण अभी भी मौजूद है। इस नीलमत पुराण में नागों का वर्णन किया गया है जो कश्मीर के प्राचीन वासी माने जाते हैं। कश्मीर में इतिहास लिखने की कला भी बहुत

प्राचीन है। कश्मीर में जितने इतिहास लिखे गए उन में पंडित कलहण की राजतरंगणी को प्रामाणिक माना जाता है मगर पंडित कलहण ने राजतरंगणी लिखने के लिए नीलमत पुराण से काफी लाभ प्राप्त किया है। इस से यह बात साफ होती है कि नीलमत पुराण कश्मीर का सबसे प्राचीन उपलब्ध इतिहास है। महान शोधकर्ता एवं साहित्कार मोती लाल साकी लिखते हैं, ''कश्मीर के इबतिदाई इतिहास के बारे में नीलमत पुराण को प्राथमिकता है। मगर नीलमत इतिहास से ज्यादा सामाजिक एवं धार्मिक विषयों की निशानदेही करता है। मगर इस पुस्तक की अहमियत इस हैसियत से सर्वमान्य है कि कश्मीर की जियोग्राफी के बारे में नीलमत एक प्रामाणिक दस्तावेज की हैसियत रखता है।'' सर्वप्रथम नीलमत पुराण ही लिखा गया और बाद में राजतरंगणी। यह पहले भी वर्णन किया गया कि पंडित कलहण ने नीलमत पुराण से काफी फायदा हासिल किया। क्योंकि नीलमत पुराण एक स्रोत है जहां से राजतरंगणी और दूसरे कई सारे इतिहासों के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध रही। नीलमत पुराण उद्‌गम है उन सभी शोधकर्ताओं के लिए जो कश्मीर के इतिहास और इस से जुड़े हर पहलू पर लिखना चाहते हैं। साकी साहब आगे लिखते हैं कि,''मगर खुद कलहण ने इस बात को मान लिया है कि उन्होंने राजतरंगणी लिखते वक्त नीलमत के अलावा ग्यारह ऐतिहासिक मसौदों से फायदा उठाया है।'' नीलमत पुराण कब लिखा गया? इस के बारे में मुखतलिफ ख्यालात जाहिर किए गए हैं। मोती लाल साकी का कहना है कि नीलमत पुराण अंदाजे के मुताबिक सातवीं सदी ईसवी में लिखा गया। एक और शोधकर्ता सी. एल. कौल ने नीलमत पुराण की रचना का समय छठी या सातवीं सदी बताया है। और दूसरी जगह नीलमत पुराण के सृजन का समय छठी सदी से लेकर आठवीं सदी तक का बताया गया है।

वेद और पुराणों में भी कश्मीर का वर्णन किया गया है। भारत का एक प्राचीन राज्य होने की बदौलत वेदों और पुराणों में इसका ज़िक्र आता रहा है। ''नील नाग'' कश्मीर का सबसे प्राचीन नाग माना जाता है। अष्टकोणीय 'नील नाग' अनंतनाग के वेरीनाग क्षेत्र में स्थित है। यह पवित्र और काफी प्राचीन माना जाता है। ''वित्सता'' नील नाग से ही निकलती है। कहा जाता है कि नील राजा यहीं रहता था। हजारों की संख्या में कश्मीर के यह नाग 'चश्मे' ना सिर्फ अपनी पवित्रता एवं धार्मिक महत्व के लिए ही प्रसिद्ध हैं बल्कि ऐसे एक–एक पवित्र चश्मे का अपना एक महत्वपूर्ण इतिहास भी है।

एक और प्रसिद्ध नाग शेषनाग है अमरनाथ के रास्ते चंदनवाड़ी के बाद और पंचतरणी से पहले आने वाला यह पड़ाव अत्यंत पावन और पवित्र स्थान है। शेषनाग रवि शीशा के नाम से भी जाना जाता है और यह नागराज के नाम से भी पुकारा जाता है। अमर कथा में यह नीलकंठ के नाम से भी जाना जाता है। एक और नाग, वासूकी नाग काफी प्रसिद्ध है। यह अनंतनाग के निकट देवसर के इलाके में स्थित है। वासुकी नाग को शेषनाग का पुत्र भी माना जाता है। एक और महत्वपूर्ण नाग का ज़िक्र करना बहुत ही जरूरी है। यह नाग भी नील नाग के नाम से ही प्रसिद्ध है। यह नील नाग पर्यटन स्थल ''यूसमर्ग'' और ''च़रार'' के क्षेत्र में स्थित है।

यहां यह उल्लेख करना जरूरी है कि नाग मत और नील मत का एक दूसरे के साथ गहरा रिश्ता रहा है और दोनों का एक जमाने में कश्मीर में काफी बोलबाला रहा है।

पंडित कलहण की राजतरंगणी का अध्ययन करने के बाद यह सिद्ध होता है कि कश्मीर में नाग पूजा जो शिव को समर्पित होती थी। प्राचीन काल से ही प्रचलित थी और जगह–जगह शिव मंदिर स्थापित थे। महाराजा अशोक से पहले भी कश्मीर में शिव मंदिर थे और खुद भी शिव भक्त थे। कश्मीर के इतिहास को लेकर सबसे प्रमाणिक बातें हमें नीलमत पुराण में विस्तृत रूप में मिलती हैं। अगर राजतरंगणी की अहमियत अधिक है तो नीलमत पुराण की अहमियत उससे भी कहीं ज्यादा है। नीलमत पुराण कश्मीर की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति को दर्शाता है। विस्तार से हर पहलू पर प्रकाश डाला गया है। इसी की बदौलत आज हम प्राचीन कश्मीरी इतिहास को भलीभांति समझ सकते हैं। सबसे प्राचीन उपलब्ध इतिहास नीलमत पुराण अगरचि उस समय के हालात व वाकियात की एक आंखों देखी तस्वीर पेश करता है फिर भी कईयों का यह कहना है कि इस में देवमालाई किस्से कहानियों का भी एक मिश्रण है। मगर यह देवमालाई कथाएं और गाथाएं भी कश्मीर के इतिहास/ संस्कृति/ सभ्यता एवं सामाजिक परिदृश्य को समझने में काफी सहायक सिद्ध होतीं है। प्रोफेसर जॉन जॉर्ज बुहलर जो कि एक जर्मन स्कॉलर थे, ने प्राचीन भारतीय भाषाओं पर खूब काम किया है। उन्हों्ने नीलमत पुराण को कश्मीर की पवित्र जगहों आदि के बारे में सूचना की एक असली खान

करार दिया है। उनके मुताबिक यह पुराण सातवीं सदी का पुराण है। विख्यात शोधकर्ता डॉक्टर वेद कुमारी घई ने नीलमतपुराण को लेकर एक बहुत बड़ा कारनामा अंजाम दिया। महाविद्वान वेद कुमारी घई ने नीलमत पुराण का सरल भाषा में अनुवाद पाठकों तक पहुंचाया और इस असली पाठ का एक सही विश्लेषण भी किया। पहले भी 1924 में कांजीलाल और जगदधर जाडो ने और उनके बाद 1939 में डॉ. विरस ने नीलमत पुराण पर काम किया। मगर आलोचकों का कहना है कि पाठ की पूरी तरह से वजाहत न होने और पुराण के पाठों की पूरी तरह से स्पष्टता सामने ना आने के कारण प्यास और जिज्ञासा बरकरार रही। मोहन लाल ''आश'' अपने एक लेख में ''बुहलर'' का हवाला देते हुए लिखते हैं कि महाराजा रंबीर सिंह ने पंडित राम को नीलमत पुराण के संपादन का काम सौंपा था और उन्होंने व्याख्या करने का कार्य अपने हाथों में लिया।

कश्मीर में इतिहास लिखने की परम्परा काफी प्राचीन है और यह परम्परा आज भी जारी है। लगभग हर कोई इतिहासकार विशेषकर ''नीलमत पुराण'' और राजतरंगणी का केवल उल्लेख ही नहीं बल्कि इन दोनों कश्मीरी इतिहासों में से प्रसंग पेश करते हैं। पंडित कलहण ने भी नीलमत पुराण से प्रसंग दिए हैं। प्राचीन इतिहास नीलमतपुराण हर सामाजिक और राजनीतिक उथल –पुथल को झेलते हुए अपने आपको महफूज़ रखने में सफल रहा। नीलमत पुराण शुरू से ही कश्मीर का प्रतिनिधित्व करता आया है। यह इतिहास कश्मीर की सामाजिक सभ्यता और सियासी जिंदगी के हालात व वाक्यात की सही तर्जुमानी करता है। प्रोफेसर एस. के. कौल लिखते हैं, ''नीलमत शब्द का अर्थ है नील के निदेश'' पुराण का अर्थ है जिसमें पुरानी कथाएं दर्ज हों, यानि नील के पुराने निदेश जिस पुस्तक में हों वह नीलमत पुराण है। नील नागों का एक राजा था.... इस नील नामी राजा ने कश्मीर की पुरानी रिवायतें चंदर देव नाम के ब्राह्मण को बताई हैं। लिहाजा यह पुराने निदेश/रिवायतें और कथायें जिस किताब में हैं उसका नीलमत पुराण नाम है। इस किताब के पहले हिस्से में कुछ पुराने ऐतिहासिक हालात पुराने तरीके पर दर्ज हैं... आखिरी हिस्से में तीर्थों और जगहों के नाम और उनकी महिमा का गुनगान किया गया है। .... पुराने तर्ज पर लिखी गई यह किताब दो व्यक्तियों के आपसी वार्तालाप से शुरू होती है। यह दो व्यक्ति राजा जनमेजय और वैशम्पायन हैं। दोनों नाम महाभारत से लिए गए हैं।

चूंकि नीलमत पुराण कश्मीर की प्राचीन सभ्यता/संस्कृति और सामाजिक जिंदगी आदि के बारे में विस्तार से बात करता है इसलिए यह स्वाभाविक है कि सामाजिक जिंदगी से जुड़ी अहम व मुख्य बातों का वर्णन होगा ही होगा। प्रोफेसर कौल लिखते हैं, ''(मेला मनाने के लिए लोग अपने मकानों की सफेदी किया करते थे। मकानों को फूलों से सजाया जाता था। नहाने के बाद तेल लगाते थे)'' विशेष बात यह है कि , ''ब्राह्मण /राजपूत/वैश्य और शुद्र एक साथ जलसा करते थे। घर का मालिक/नौकर, महिलाएं और बच्चे सब एक साथ खाना खाते थे/गाना गाते थे/बाजा बजाते थे और ड्रामा देखते थे। इन मौकों पर हंसी मजाक भी किया करते थे। मूर्ति पूजन होता था। लोग हवन किया करते थे। गौ माता का मान सम्मान होता था। धान तैयार होने पर पहले ब्राह्मण को धान्य देते थे और उसके बाद ही खुद आहार किया करते थे।'' आगे लिखते हैं, कश्मीरियों पर वैष्णोमत का खास प्रभाव था उसके कारण कुछ त्योहारों पर मांस का सेवन वर्जित था। शिव को बलि देने के लिए आटे के पशु बनाए जाते थे। अगर मछली दान करनी हो तो रेत की मछली बनाई जाती थी। दूध, दही और भात एक भोज माना जाता था। खिचड़ी भी एक भात मानी जाती थी। नदी/नालों/दरियाओं एवं ''वितस्ता'' के पानी को पवित्र माना जाता था।

जॉर्ज बुहलर ने नीलमत पुराण को सही मायनों में सूचना का एक खजाना करार दिया है। नीलमत पुराण की बदौलत हम अपने भूतकाल/प्राचीन कश्मीर का सही अध्ययन कर सकते हैं। एक उल्लेखनीय बात का ज़िक्र करना बहुत ही मुनासिब होगा, वे बात है महिलाओं का समाज में स्थान। नीलमत पुराण से हमें पता चलता है कि प्राचीन कश्मीर में महिलाओं का जबरदस्त सम्मान होता था। महिला का आदर सत्कार किया जाता था। और समाज में महिला का एक ऊंचा स्थान था। नीलमत पुराण की विशेषता यह है कि यह छंदोबद्ध/पद्यात्मक फॉर्म में लिखा गया है और इसके 1453 श्लोक कश्मीरी इतिहास/संस्कृति और हमारी महान धरोहर की एक अमूल्य संपदा है। नीलमतपुराण एक प्राचीन संस्कृत मूल लेख ही नहीं बल्कि यह कश्मीर के स्वर्णिम युग एवं इतिहास की जीती जागती पहचान है।

लल्लेश्वरी

कश्मीरियत की मिसाल

कश्मीरी संत योगिनी कवि लल्लेश्वरी के 'वाख' (कथन, वचन, संस्कृत में 'वाक्') हर कश्मीरी की जुबान पर मौजूद रहे हैं, कश्मीरी भाषा उनकी वाणी से सराबोर है। कश्मीरी लोक – गायक अपना गायन ललदेह के वाख से शुरू करते हैं। यह वाख कश्मीरियों के जीवन में कहावतों, रूपकों और दृष्टांतों के रूप में इस्तेमाल होते हैं। कश्मीर के हिंदू और मुसलमान दोनों ही सम्मान से उन्हें ललदेद (लल्ला दादी), लल्ला माता कहते हैं। और ठीक ही कहते हैं, लल्लेश्वरी वास्तव में कश्मीरी साहित्य की जननी है। उनसे पहले कश्मीरी एक बोली मात्र थी जिसे लोग अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए इस्तेमाल करते या थोड़ी–बहुत कविता लिखने की कोशिश करते थे। लल्लेश्वरी ने कश्मीरी भाषा को संस्कृत में मौजूद ज्ञान की परंपरा से जोड़ा। ऋषियों की ज्ञान–संपदा को आम लोगों की बोली में प्रस्तुत किया और इस तरह प्रस्तुत किया कि लोगों की समझ में आए और याद भी रहे। तभी तो उनके वाख सदियों से लोक–स्मृति में मौजूद हैं। पढ़े–लिखे और गैर पढ़े सभी लोग उन्हें अपने चित्त में संजोए हैं। कश्मीरी साहित्य की शुरुआत उनकी कविताओं –'लाल वाख' से होती है ये वाख श्रेष्ठ कविता का उदाहरण हैं। ऐसी कविता जो मनुष्य के चित्त को निर्मल बनाती है, उसकी आत्मा को जगाती है, अपने–आपको सुधारने–संवारने को प्रेरित करती है। वह लल्ला आरिफा, लल्ला दिद्दी, लल्ला योगेश्वरी और लाली श्री आदि अनेक नामों से विख्यात हैं। वे उत्तरी भारत के भक्ति आंदोलन की अग्रणी संत कवयित्री हैं।

ललदेह का जन्म चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में सन् 1320 के आसपास हुआ था और वह 1392 तक मौजूद रहीं। श्रीनगर से पांच मील दूर पंद्रेथान (प्राचीन नाम पुराणाधिष्ठान) ग्राम में एक सारस्वत पंडित परिवार में सुल्तान अला–उद–दीन के समय में जन्मी ललदेह को बचपन में अपने पिता के घर में भलीभांति शिक्षा पाने का अवसर मिला था। वह एक कुशाग्र बुद्धि और जागरूक बालिका थीं, यह बात उनकी कविता से सिद्ध होती है। अपने 'वाखों' में वह अक्सर अपने गुरू सिद्ध श्रीकंठ का उल्लेख करती हैं –कभी उनसे प्रश्न करते हुए, कभी विनोदपूर्ण ढंग से आध्यात्मिक गुरु के रूप में उनकी अपर्याप्तता सिद्ध करती हुई।

बारह वर्ष की आयु में उनका विवाह पद्मपुर (आधुनिक पाम्पोर) के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। विवाह के बाद उन्हें पद्मावती नाम दिया गया। लल्लेश्वरी की बौद्धिक प्रखरता और विचारशीलता को समझने की सूक्ष्म ग्राहिता और कुशाग्रता उनके पति में न थी। अतः विवाह आरंभ से ही लल्ला के लिए कष्टकारक रहा। ललदेद को सास द्वारा सताए जाने संबंधी कहावतों से कश्मीरी भाषा भरी पड़ी है किंतु उपेक्षा, दुर्व्यवहार, सास की गालियों की टीस के बावजूद ललदेद ज्ञान–साधना और परम तत्व को पाने के प्रयास में लीन रहीं और एक दिन उन्होंने अपने पति का घर त्यागकर सन्यास ले लिया और 'योगिनी' बन गई। अपनी सिद्धि के परमानंद में तल्लीन तपस्विनी लल्लेश्वरी ने अपना शेष जीवन स्थान–स्थान पर घूमते, संत–संगति करते कविता रचने में बिताया।

अपने समय में मौजूद हर तरह के अन्याय और असमानता स्थापित करने वाली व्यवस्था का विरोध करने वाली ललदेद उच्च कोटि की शैव योगिनी थी। उन्होंने शैव दर्शन अथवा 'त्रिक' का शास्त्रीय ज्ञान सामान्य लोगों को उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध कराया और स्वयं अपने जीवन में ढालकर दिखाया। लोग क्या कहते हैं, क्यों कहते हैं, उन्हें बुद्धिमान समझते हैं या पागल कहते हैं, इसकी

उन्होंने परवाह नहीं की।

लल्लेश्वरी की 'लाल वाख' (लाल की वाणी) कश्मीरी साहित्य और संस्कृति का आधार है। कश्मीर प्राचीन ज्ञान साहित्य चिंतन और दर्शन का केन्द्र रहा है। संस्कृत भाषा में उपलब्ध इस ज्ञान को जन भाषा में उपलब्ध कराने, जन–जन तक पहुंचाने का श्रेय ललदेद को है। कश्मीरी कविता ललदेद से शुरू होती है, वह कश्मीरी भाषा का सर्वाधिक सशक्त और लोक–चेतना में समाया हुआ नाम है। उनकी कविता प्रेरणादायी है। कश्मीर के लोग ललदेद को वाख के पवित्र ज्ञान–कथन मानते हैं। हर कश्मीरी उनकी धुन पर नाचता है, हालांकि बहुत कम हैं जो उनको भलीभांति समझते हैं।

लल्लेश्वरी के वाख उनके आध्यात्मिक ज्ञान और सिद्धि से दीप्त हैं। अपने वाखों को उन्होंने अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। हर शब्द सारगर्भित है और हर वाख पाठक के लिए विचार और कल्पना तथा परिदृश्य खोलता है। उसकी जीवनदृष्टि जीवन का श्रेष्ठतम विज्ञान है।

लल्लेश्वरी प्राचीन और नवीन के बीच सेतु बनकर आती हैं। शताब्दियों से कश्मीर में विकसित हो रही अध्यात्म और दर्शन की –वासुगुप्त ऋषि, आचार्य सोमानंद, आचार्य उत्पलदेव और आचार्य अभिनव गुप्त् की परंपरा उन्हें मिली थी। उन्होंने कश्मीरी भाषा को इस परंपरा के वहन के लिए सक्षम बनाया। उनके समकालीन उत्तरवर्ती और कश्मीर में मुस्लिम ऋषि वर्ग के संस्थापक नुंद ऋषि ललदेह का ऋण स्वीकार करते हुए लिखते हैं–

पद्मपुर लल्ला ने भरे थे

दिव्य अमृत के बड़े–बड़े घूंट

वे हमारे लिए दैवीय आविर्भाव थीं।

हे देवी! मुझे भी अपना मंगल वरदान प्रदान करो।

जाति, धर्म, वर्ण, लिंग, क्षेत्र की सीमाओं को तोड़ते हुए उन्होंने सभी तरह की रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध किया। शैवाद्वैतवाद अथवा 'त्रिक' आत्मज्ञान के मार्ग में किसी तरह के भेद को स्वीकार नहीं करता। ललदेद का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने कश्मीरी शैव दर्शन को जन सामान्य के लिए सुलभ बनाया और कर्मकांड को अस्वीकार किया। इतना ही नहीं उन्होंने बौद्धों से अहिंसा, करुणा और शून्य की अवधारणा लेकर कविता को बहुजन हिताय बनाया। वह सही मायने में विद्रोही संत थीं जिन्होंने रूढ़ियों, अंधविश्वास, कर्मकांड की निरर्थकता के प्रति लोगों का ध्यान दिलाया। प्राणिमात्र के प्रति दया का संदेश दिया –

तन ढकने को ऊन देकर

यह बचाती है तुम्हें सर्दी से

खाने को कुछ और नहीं मांगती

घास और पानी के सिवाय

अरे ब्राह्मण, किसने दी तुम्हें राय

निर्जीव पत्थर के लिए

जीवित भेड़ की बलि देने की।

उन्होंने अपनी शब्दावली, शब्द–संपदा और अभिव्यक्ति शैव शास्त्रों से ली और उसे आम लोगों की विरासत बनाया। 'त्रिक' उनकी वाणी से प्रवाहित होता है। उनकी वाणी का रहस्यपरक स्वर भी शैवाद्वैत दर्शन की देन है। उसमें सूफी रहस्य वाद की मौजूदगी के कोई प्रमाण नहीं हैं क्योंकि उनके समय तक इस्लामी रहस्यवाद कश्मीर में स्थापित नहीं हुआ था। कश्मीरी कवियों, खासतौर पर सूफी कवियों पर ललदेद का गहरा प्रभाव है, लगभग सभी कवियों ने उनका ऋण स्वीकार किया है। 17वीं–18वीं सदी की कश्मीरी संत कवयित्री रूपा भवानी ललदेद को अपना गुरु मानती हैं और उनकी प्रस्तुति शैली का अनुकरण करती हैं।

बाबा कमाल–उद–दीन और बाबा खलील के ऋषिनामा में ललदेद पर एक अलग अध्याय है। कुछ वाख इन ऋषिनामाओं के बीच बिखरे हुए हैं। 30 वाखबाबा खलील के ऋषिनामा में और 25 बाबा कमाल के ऋषिनामा में।

मौखिक परंपरा में सदियों से चले आते ललदेद के वाखों का संग्रह पहली बार 18वीं सदी में भास्कर राज़दान

नामक एक शैव सावंत ने पहली बार शारदा लिपि में लिपिबद्ध किया और साथ में इन वाखों का संस्कृत रूपांतर और व्याख्या भी प्रस्तुत की।

लल्लेश्वरी को भारतीय भाषाओं के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। जॉर्ज अब्राहिम ग्रियर्सन ने उनके संग्रह का अंग्रेजी में अनुवाद किया। उसके बाद और भी अनुवाद अंग्रेजी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं में हुए।

14वीं सदी में हुई ललदेद कश्मीर ही नहीं भारतीय भक्ति कविता की अमूल्य निधि हैं। हमारे आज के समय में भी भारत ही नहीं दुनियाभर के लिए वह प्रासंगिक हैं। वह मनुष्य को एकता और सामरस्य की सीख देती है। हिंदू–मुस्लिम एकता का संदेश देती है–

ईश्वर मौजूद है हर जगह
भेद मत करो हिंदू और मुसलमान के बीच
यदि तुम्हारे पास अक्ल है
तो स्वयं ईश्वर को जानने का प्रयास करो
और यही सबसे अच्छा रास्ता है
ईश्वर को जानने का।

साभार : प्राचीन भारत के स्त्री रत्न
प्रकाशन विभाग

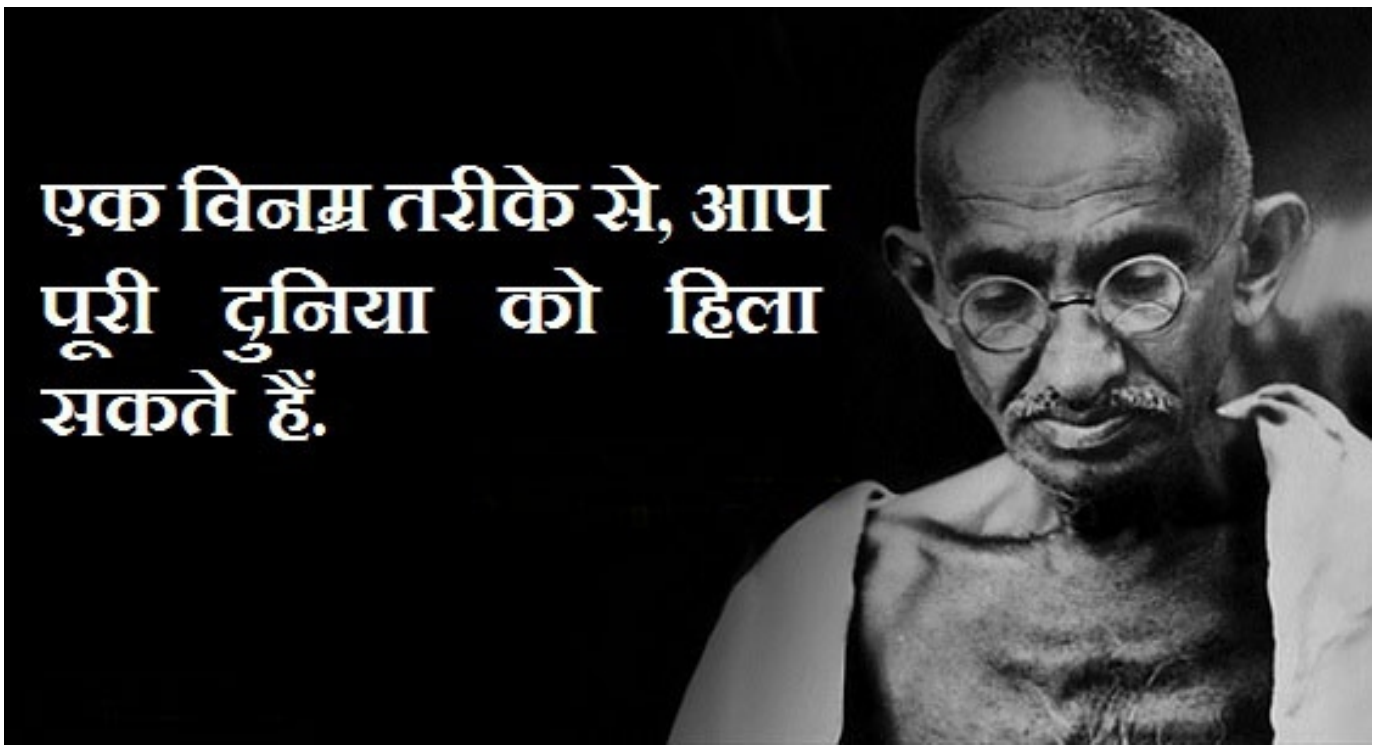

भारत– यू.ए.ई. मैत्री का प्रतीक : गांधी–ज़ायद प्रदर्शनी

कंचन प्रसाद
विशेष संवाददाता, दुबई

जहां भारत शांतिदूत बापू की 150वीं जयंती मना रहा है, वहीं यू.ए.ई.भी बाबा ज़ायद की मानवीय, करूणा तथा जन कल्याणकारी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर **'सहिष्णुता –वर्ष – इयर– ऑफ –टॉलरेंस'** मना रहा है। बाबा ज़ायद का यह जन्म शताब्दी वर्ष भी है। भारत के राष्ट्रपिता बापू और यू.ए.ई. के संस्थापक बाबा ज़ायद को यह सच्ची श्रद्धांजलि है। बापू ने जहां भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को सत्य अहिंसा और मानवता का पाठ पढ़ाया वहीं बाबा ज़ायद ने नवनिर्मित यू.ए.ई. संघ को शांति, करूणा, सहिष्णुता और प्रगति का संकल्प दिया।

भारत और संयुक्त अरब अमीरात के व्यापारिक –सांस्कृतिक संबंधों की समृद्ध परंपरा रही है। 1971 में संयुक्त अरब अमीरात के गठन के तुरंत बाद ही, 1972 में भारत में यू.ए.ई. का दूतावास कायम हो गया। भारत सरकार ने भी उसके अगले ही वर्ष, 1973 में यू.ए.ई. में भारतीय दूतावास की स्थापना की।

भारत– यू.ए.ई. के घनिष्ठ मैत्री संबंधों की बुनियाद में हैं 33 लाख के करीब भारतीय प्रवासी– जो अपनी मेहनत और निष्ठा से यू.ए.ई. में विभिन्न जगहों पर काम कर रहे हैं। इनमें 20 प्रतिशत प्रोफेशनल योग्यताओं वाले विशेषज्ञ भी हैं। people to people contact और आपसी सहयोग दोनों देशों की आर्थिक समृद्धि और सौहार्दपूर्ण संबंधों का आधार दोनों देशों के बीच व्यापारिक भागीदारी बहुत मजबूत है – और उतना ही मजबूत आपसी सौहार्द भी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अगस्त 2015 की यू.ए.ई. यात्रा के बाद, हर क्षेत्र में परस्पर संबंधों में नई ऊर्जा और नया उल्लास आया। दोनों देशों के बीच संबंधों की गर्माहट का नतीजा है कि अबू धाबी में पहले भव्य हिंदू मंदिर का निर्माण हो रहा है। पिछले कुछ सालों में दोनों देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक और सुरक्षा क्षेत्रों में सहयोग के नये आयाम खुले हैं। प्रधानमंत्री मोदी के दूसरे कार्यकाल का जश्न् यू.ए.ई. ने बड़े शानदार तरीके से मनाया। अबू धाबी का ADNOL टावर दोनों देशों के झंडों के रंगों से रंग गया। प्रधानमंत्री मोदी और अबू धाबी के युवराज (Crown prince) शेख मोहम्मद बिन ज़ायद की हाथ मिलाती तस्वीरों के सार्वजनिक प्रदर्शन से यू.ए.ई.ने दोनों देशों के करीबी रिश्ते का इज़हार किया। भारत में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व संभालने के बाद दोनों देशों के बीच की आपसी मित्रता अब तक के उच्चतम स्तर तक पहुंची है। राजदूत नवदीप सूरी के अनुसार भारत– यू.ए.ई. रिश्ते का सबसे ''सुनहरा दौर'' है।

इस मैत्री को एक नया सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक आयाम मिला, जब अबू धाबी में गांधी–ज़ायद डिजिटल प्रदर्शनी के मार्च 2019 में पूरी तरह शुरू होने से। प्रदर्शनी का सांकेतिक शुभारंभ (Soft Launch) दिसम्बर 2018 में दोनों देशों के विदेश मंत्रियों, भारत की (तत्कालीन) विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और यू.ए.ई. के विदेश मंत्री शेख अबदुल्ला बिन ज़ायद अल नहयान ने किया। इस प्रदर्शनी ने विश्व में बापू की लोकप्रियता और प्रासंगिकता को सिद्ध कर दिया। यह भी सिद्ध होता है कि बापू की लोकप्रियता देश ही नहीं विदेशों में भी है।

महात्मा गांधी जहां भारत के राष्ट्रपिता हैं, वहीं शेख ज़ायद बिन सुल्तान अल नहयान को यू.ए.ई. में लोग स्नेहपूर्वक बाबा ज़ायद कहते हैं। जहां भारत शांतिदूत बापू की 150वीं जयंती मना रहा है, वहीं यू.ए.ई.भी बाबा ज़ायद की मानवीय, करुणा तथा जन कल्याणकारी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर **'सहिष्णुता –वर्ष–इयर– ऑफ –टॉलरेंस'** मना रहा है। बाबा ज़ायद का यह जन्म शताब्दी वर्ष भी है। भारत के राष्ट्रपिता बापू और यू.ए.ई. के संस्थापक बाबा ज़ायद को यह सच्ची श्रद्धांजलि है। बापू ने जहां भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्वे को सत्य, अहिंसा और मानवता का पाठ पढ़ाया वहीं बाबा ज़ायद ने नवनिर्मित यू.ए.ई. संघ को शांति, करूणा, सहिष्णुता और प्रगति का संकल्प दिया।

इस प्रदर्शनी को सजाने, संवारने और आधुनिक रूप में गांधी और ज़ायद के जीवन दर्शन को सामने लाने का कार्य किया लेखक– क्यूरेटर (curator) श्री बिराद राजाराम याग्निक ने। अबू धाबी स्थित भारतीय दूतावास ने इस कार्य में उत्साह से सहयोग दिया।

प्रदर्शनी में मल्टी मीडिया तकनीकों और इंटरैक्टिव साधनों का उपयोग करके, गांधी और शेख ज़ायद, दोनों महान नेताओं की सोच और उनके विचार को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही नई पीढ़ी तक उनके विचारों की प्रासंगिकता को भी बखूबी उभारा गया है।

इस प्रदर्शनी को छहः खंडों में बांटा गया है। इनमें दोनों नेताओं की मानवीयता, दृढ़ता, राष्ट्र निर्माता, भविष्य दृष्टा, प्रेरक वाणी और संकल्प शक्ति से परिचित कराया गया है।

प्रदर्शनी के 'साफ्ट लॉंच' के समय दिसम्बर, 2018 में यू.ए.ई. के विदेशमंत्री शेख अब्दुल्ला बिन ज़ायद अल नहयान ने उम्मीद जाहिर की थी कि वह प्रदर्शनी दोनों विश्व नेताओं के विचारों और संदेश को भावी पीढ़ियों तक ले जाएगी और उन्हें प्रेरित करेगी। प्रदर्शनी की सराहना करते हुए श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि दोनों ही नेताओं का मानवता के प्रति प्रेम, उनके शांति और सहिष्णुता के संदेश तथा अदम्य इच्छा शक्ति वर्षों तक हमें प्रेरित करती रहेगी।

मार्च, 2019 में प्रदर्शनी के विधिवत आम लोगों के लिए खोले जाने के समय यू.ए.ई. की संस्कृति और ज्ञान विकास मंत्री सुश्री नौरा बिंत मोहम्मद अल काबी (Noura Bint Mohammed Al Kaabi) ने बताया कि यह कोई परंपरागत प्रदर्शनी नहीं है, बल्कि यह तो एक ऐसा सांस्कृतिक मंच है जो दर्शकों को शांति, सहिष्णुता और बंधुत्व के मूल्यों से परिचित कराते हैं और अपने शीर्षक के अनुरूप प्रेम, राष्ट्रवाद और विवेकपूर्ण नेतृत्व की राह दिखाती है।

यू.ए.ई. में भारत के राजदूत श्री नवदीप सूरी ने बड़ी सुंदरता से प्रदर्शनी के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि यह प्रदर्शनी बापू और बाबा ज़ायद के शांति, सहिष्णुता और मानवता के संदेश को बखूबी व्यक्त करती है।

निश्चय ही, यह प्रदर्शनी भारत और यू.ए.ई. की मैत्री और सहयोग की कड़ी में एक और महत्वूर्ण कदम है। परस्पर सहयोग के ऐसे प्रयास महात्मा गांधी और बाबा ज़ायद जैसे महापुरुषों के संदेशों की मानव–जाति को निरंतर याद दिलाते रहेंगे और मानवता को अनुप्राणित करते रहेंगे।

श्रीलंका में रामायण से जुड़े स्थल

संतोष कुमार
विशेष संवाददाता, कोलंबो

भारत और श्रीलंका के बीच सदियों पुराने सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। श्रीलंका में बहुतायत जनसंख्या बौद्ध अनुयायियों की है और यहां बौद्ध धर्म की शुरुआत सम्राट अशोक के काल में हुई थी, जब उनके पुत्र ने यहां का भ्रमण किया था। लेकिन दोनों देशों के बीच संबंधों की कड़ी कहीं और गहरी है और श्रीलंका का संबंध रामायण काल में वर्णित रावण की लंका से भी किया जाता है। श्रीलंका में कई ऐसे स्थल हैं जो रामायण में वर्णित स्थलों से मेल खाते हैं और जिनके बारे में किंवदंति है कि ये उस काल से जुड़े हुए स्थल हैं। श्रीलंका सरकार ने ऐसे स्थलों की पहचान कर भारतीय पर्यटकों को लुभाने के लिए रामायण सर्किट विकसित करने की योजना बनाई है। श्रीलंका के पर्यटन मंत्री जॉन अमर तुंगा के अनुसार रामायण काल से जुड़ी सच्ची कथाओं और विभिन्न स्थलों की पहचान की गई है। पर्यटन विभाग ने इस बाबत एक वेबसाइट बनाई है जिसमें ऐसे कुल पचास के लगभग स्थल हैं इनमें लगभग 20 स्थलों का भ्रमण सुगम है और उनकी यात्रा दो सप्ताह के भीतर की जा सकती है। ऐसे कुछ स्थानों का विवरण इस प्रकार हैः—

1. मुन्नेश्वर कोविल चिलाव :

यहां रामायण काल से जुड़ा भगवान शिव का पौराणिक मंदिर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि रावण पर जीत के बाद श्रीराम जब अयोध्या लौट रहे थे तो उन्होंने यहां भगवान शिव की पूजा की थी। भगवान शिव ने श्रीराम को दोष निवारण के लिए मनावरी, थिरूकोणेश्वरम, थिरूमिथेश्वनरम् और रामेश्वरम् में पूजा करने का आग्रह किया था।

मुन्नेश्वरम् कोविल के पास में ही मनावरी का शिवलिंग है, जिसे श्रीराम द्वारा स्थापित माना जाता है। रामेश्वरम् के अलावा यह एकमात्र शिवलिंग है जो श्रीराम द्वारा स्थापित माना जाता है।

2. सीता कोविल और अशोक वाटिका नुवारा एलियाः—

कोलंबों से लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर दूर नुवारा एलिया पर्यटकों के लिए रमणीय स्थल है। यहां के पहाड़ और चाय बागान वैसे ही लोगों के आकर्षण का केन्द्र हैं। यहां से लगभग 15 किलोमीटर दूर अशोक वाटिका स्थित है। माना जाता है कि रावण ने सीता हरण के बाद माता सीता को यहां रखा था। वाटिका के पास ही माता सीता का एक पौराणिक मंदिर है जो हिंदू अनुयायियों और पर्यटकों का मन लुभाते हैं। यहां एक छोटी सी मूर्ति भी स्थापित की गई है जिसमें हनुमान को माता सीता की पहचान के लिए अंगूठी देना दर्शाया गया है।

3. डोलू कांडा, संजीवनी पहाड़ः—

जब रावण के पुत्र मेघनाथ के बाणों से लक्ष्मण मूर्छित हुए तो हनुमान को हिमालय से जड़ी—बूटी लाने को कहा गया था। हनुमान को जड़ी—बूटी की पहचान नहीं थी सो उन्होंने एक पूरा पहाड़ उठाया और लंका की ओर चल दिये। रास्ते में पहाड़ के कुछ अवशेष गिरे जिन्हें श्रीलंका के पांच स्थानों पर चिन्हित किया गया है। इनमें गाल के पास रूमासाला, हीरी पिटाम के पास डोलूकांडा, हवराना के पास रिटीगाला, मन्नार के पास थालाड़ी और उत्तर में कछातीवु शामिल हैं।

4. दिवुरूमपोला :– इसका शाब्दिक अर्थ है ''शपथ की जगह''

इस जगह को यह नाम इसलिए मिला क्योंकि माता सीता ने कथित तौर पर यहां अग्नि परीक्षा दी थी। रावण के वध के बाद श्रीराम ने माता सीता की पवित्रता साबित करने के लिए अग्नि परीक्षा ली थी। जिसके चिन्ह इस स्थान पर मौजूद हैं। इस जगह की मिट्टी का रंग लाल जैसा है। जो कि आसपास की मिट्टी से भिन्न है। यहां पर माता सीता के नाम पर मंदिर स्थापित किया गया है जहां नवविवाहित अभी भी सात जन्मों तक वचन निभाने की शपथ लेते हैं। मंदिर में की गई शादियों को स्थानीय तौर पर कानूनी मान्यता भी दी जाती है। मंदिर एक बौद्ध वृक्ष के नीचे स्थित है जिस पर रामायण काल की चित्रकला दर्शाई गई है।

5. रावण काल की गुफाएं:

कई स्थलों पर रावण काल की गुफाएं स्थित हैं। जो उस समय की संरचनात्मक कुशलता को दर्शाती हैं। सभी प्रमुख शहर और मार्ग इन गुफाओं के माध्यम से लंका की राजधानी से जुड़े हुए थे, जो अब के कालूतारा नामक स्थान से जानी जाती हैं। इन गुफाओं के बारे में मान्यता है कि ये मानव निर्मित थे। इसके अलावा कई अन्य स्थल हैं जहां रामायण काल की गाथाएं प्रचलित हैं। इनमें सीता कोटुवा; माता सीता को बंदी बनाकर रखे जाने की जगह बेरांगा टोटा (जहां माता सीता को हरण करके विमान से लाया गया था) दुनुविला (यहां से श्रीराम ने रावण के वध के लिये ब्रह्मास्त्र चलाया था) और गावागाला (रावण की गौशाला) प्रमुख है।

श्रीलंका में पर्यटन की भूमिका:

पर्यटन क्षेत्र श्रीलंका की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख अंग है और पिछले साल पर्यटन का देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में पांच प्रतिशत से ज्यादा का योगदान रहा था। श्रीलंका में पिछले साल पच्चीस लाख पर्यटक आये थे और उनमें भारतीयों की संख्या सर्वाधिक चार लाख पचास हजार से ऊपर थी। श्रीलंका पर्यटन का लक्ष्य था कि रामायण यात्रा से जुड़े स्थलों का विकास कर भारतीय पर्यटकों को और आकर्षित किया जाये और 2019 में उनकी संख्या को दस लाख से ऊपर ले जाया जाये।

हालांकि 21 अप्रैल को हुए बम हमलों के बाद श्रीलंका में पर्यटन को बड़ा झटका लगा है और यह क्षेत्र इससे उबरने की पुरजोर कोशिश कर रहा है। हमलों के कुछ महीनों बाद पर्यटकों का आवागमन फिर जोर पकड़ रहा है और इसमें भारतीय पर्यटकों ने बड़ी भूमिका निभाई है। जहां कुल पर्यटन में यूरोपीय देशों और चीन की भागीदारी कम हुई है, वहीं भारतीय पर्यटकों का प्रतिशत पहले की अपेक्षा बढ़ा है। श्रीलंका का पर्यटन विभाग इस पहलू को मद्देनजर रखते हुए भारतीय पर्यटकों को लुभाने की पुरजोर कोशिश कर रहा है। विभाग ने पिछले महीने केरल के कोचीन शहर में एक रोड शो का आयोजन किया जिसमें रामायण यात्रा से जुड़े पहलुओं को रेखांकित किया गया।

भारत और श्रीलंका के बीच हवाई सेवा काफी सुगम है और कोलंबो भारत के विभिन्न शहरों से दो दर्जन से ज्यादा साप्ताहिक उड़ानों से जुड़ा है। श्रीलंका सरकार तमिल–बहुल उत्तरी प्रांत में जाफना के पास एक हवाई अड्डा विकसित करने की योजना बना रही है जिससे दक्षिणी राज्यों के साथ विमान सेवा और भी सुगम हो जायेगी। तमिलनाडु स्थित रामेश्वरम् और श्रीलंका में थलाईमन्नार के बीच नौका सेवा शुरू करने की भी योजना है। जिससे लोगों को कम खर्च और कम समय में श्रीलंका का पर्यटन संभव हो सकेगा।

भारत सरकार ने भी स्वदेश दर्शन योजना के तहत रामायण यात्रा को प्रमुखता दी है। भारत में रामायण से जुड़े स्थलों को नेपाल, श्रीलंका और अन्य देश के स्थलों से जोड़कर यात्रा वृतांत बनाए गए हैं, ताकि पर्यटकों को सुगमता हो। पिछले साल भी आईआरसीटीसी ने भारत और श्रीलंका के रामायण स्थलों को जोड़कर एक यात्रा वृतांत विकसित किया था। जिसके परिणाम उत्साहजनक थे। 16 दिवसीय इस यात्रा में भारतीय रेल के माध्यम से अयोध्या और रामेश्वरम् सहित कई स्थलों का भ्रमण शामिल था। वहीं चेन्नै से कोलंबों की हवाई यात्रा के बाद श्रीलंका में रामावाड़ा नुवार एलिया और चिलाव जैसे रमणीय स्थल शामिल किए गए थे।

भारत–नेपाल संबंध : एक नए युग की शुरुआत

राजकुमार
विशेष संवाददाता, नेपाल

भारत नेपाल संबंधों में पिछले पाँच साल में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। मई 2014 के बाद से दोनों देशों के बीच प्रधानमंत्री स्तर की ग्यारह यात्राएं हुई हैं जबकि इस दौरान दोनों देशों के राष्ट्रपति भी एक दूसरे के यहाँ यात्राएं कर चुके हैं। इन उच्च स्तरीय यात्राओं ने आपसी सहयोग, समझ और विश्वास की एक मजबूत बुनियाद रखी है। इस दौरान विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाओं में विश्वसनीय प्रगति होने के साथ ही भारत तथा नेपाल के बीच हुए समझौतों को समय सीमा के भीतर पूरा करने का काम भी शुरू हो गया है। हालाँकि सीमांकन, बाढ़ और जल भराव, विशिष्ट व्यक्ति समूह (E.P.G) रिपोर्ट, प्रत्यर्पण संधि और कुछ परियोजनाओं को लेकर दोनों देशों के बीच सहमति नहीं बन पाई है लेकिन दोनों तरफ से इन मुद्दों को हल करने के प्रयास जारी हैं। उम्मीद है कि भारत और नेपाल में राजनीतिक स्थिरता और मजबूत सरकारों के गठन से दोनों देशों में जो सकारात्मक, अनुकूल और विश्वास का माहौल बना है उससे भारत तथा नेपाल के बीच युगों पुराने मैत्री संबंध और प्रगाढ़ होंगे।

हिमालय की गोद मे बसा नेपाल नजदीकी पड़ोसी देश होने के साथ ही साँझी सभ्यता और संस्कृति की एक अनूठी मिसाल है। भारत और नेपाल के बीच युगों पुराने सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध हैं। दोनो देशों की जनता के बीच बहुत ही गहरे तथा निकट पारिवारिक रिश्ते हैं और लंबे समय से सीमा के दोनों ओर लोगों के मुक्त आवागमन से द्विपक्षीय संबंध और प्रगाढ़ हुए हैं। नेपाल के साथ भारत की 1850 किलोमीटर से अधिक लंबी सीमा है, इसके पूर्व में सिक्किम और पश्चिम बंगाल, दक्षिण में बिहार और उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम में उत्तराखण्ड राज्य हैं। 1950 की भारत–नेपाल शांति और मित्रता संधि दोनों देशों के बीच विशेष संबंधों का आधार है। इसके अंतर्गत नेपाली नागरिक भारत में अद्वितीय लाभ उठाते हुए भारतीय नागरिकों के समान ही सुविधाओं और अवसरों का उपयोग करते हैं। दोनों देशों के बीच नियमित उच्चस्तरीय यात्राएं और बातचीत घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंधों की विशेषता है। इन यात्राओं से आपसी सद्भाव, विश्वास, समझ और सहयोग को बढ़ावा मिलने के साथ ही दोनों देशों के बीच युगों पुराने बहुआयामी संबंधों को और सुदृढ़ करने के प्रयासों को नई गति मिली है।

नए युग की शुरुआत

2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के देश की बागडोर संभालने के बाद भारत–नेपाल संबंधों में एक नए युग का आरम्भ हुआ। इसकी शुरुआत मई 2014 में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन–सार्क (SAARC) देशों के राष्ट्राध्यक्षों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शपथग्रहण में शामिल होने के निमंत्रण से हुई। नेपाल की तरफ से तत्कालीन प्रधानमंत्री सुशील कोईराला इसमें शामिल हुए।

कुछ सप्ताह बाद ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अगस्त 2014 मे नेपाल की यात्रा की। 17 साल के लंबे अंतराल के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली नेपाल यात्रा थी। अपनी दो दिवसीय यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने कहा कि नेपाल के साथ संबंधों को और सुदृढ़ करना उनकी सरकार की उच्च प्राथमिकता है। श्री मोदी ने उम्मीद जताई कि भारत–नेपाल संबंध दक्षिण एशिया में विकास का 'मॉडल और उत्प्रेरक साबित होंगे। नेपाल की संविधान सभा और संसद को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि 'नेपाल सीता जनक और गौतम बुद्ध की भूमि है और भारत तथा नेपाल के संबंध गंगा और हिमालय जितने पुराने हैं'। दो महीने बाद ही नवंबर 2014 में काठमांडू में आयोजित 18 वें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने दूसरी बार नेपाल की यात्रा की।

नेपाल की तरफ से तत्कालीन प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली ने फरवरी 2016 में भारत की यात्रा की। छह महीने बाद सितंबर में तत्कालीन प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' भारत की यात्रा पर आए। अगले महीने ही अक्टूबर 2016 में गोवा में आयोजित ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका संगठन तथा बंगाल की खाड़ी बहु क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग संगठन (BRICS-BIMSTEC Outreach Summit) सम्मेलन में भी उन्होंने शिरकत की।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने नवंबर 2016 में नेपाल की यात्रा की। 18 साल बाद किसी भारतीय राष्ट्रपति की यह पहली नेपाल यात्रा थी। इससे पहले 1998 में तत्कालीन राष्ट्रपति के आर नारायणन ने नेपाल की यात्रा की थी। श्री मुखर्जी के सम्मान में नेपाल सरकार ने यात्रा के पहले दिन 2 नवंबर को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया। नेपाल की राष्ट्रपति विद्या देवी भंडारी द्वारा आयोजित रात्रिभोज में श्री मुखर्जी ने कहा ''मुझे विश्वास है कि हमारे दो देशों का भविष्य आपस में जुड़ा है। एक दूसरे की सुख समृद्धि में हमारी महत्वपूर्ण साझेदारी है। नेपाल का सबसे नजदीकी पड़ोसी होने के नाते भारत, नेपाल के लोगों की उपलब्धियों और नेपाल के साथ अपनी विकास साझेदारी की सफलता पर गर्व महसूस करता है''।

उच्च स्तरीय यात्राओं के क्रम को आगे बढ़ाते हुए नेपाल की राष्ट्रपति विद्या देवी भंडारी ने अप्रैल 2017 में भारत की यात्रा की। राष्ट्रपति बनने के बाद उनकी यह पहली विदेश यात्रा थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मुलाकात में राष्ट्रपति भंडारी ने शानदार आर्थिक प्रगति और विकास के लिए भारत सरकार को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि एक निकट पड़ोसी और बहुत नजदीक से जुड़ी अर्थव्यवस्था होने के नाते नेपाल अपने पड़ोसी देश की प्रगति और समृद्धि से लाभ उठाना चाहता है। इसके तीन महीने बाद ही अगस्त 2017 में तत्कालीन प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा ने भारत की यात्रा की।

द्विपक्षीय संबंध नई ऊँचाई पर

2015 में नया संविधान लागू होने के बाद नेपाल में 2017 में त्रिस्तरीय चुनाव कराए गए। इन ऐतिहासिक चुनावों के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने के बाद नेपाल में संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य और राजनीतिक स्थायित्व के एक नए युग की शुरुआत हुई। चुनाव में वाम गठबंधन को शानदार सफलता मिली और फरवरी 2018 में के पी शर्मा ओली के नेतृत्व में नई सरकार का गठन हुआ। प्रधानमंत्री का पदभार संभालने के डेढ़ महीने बाद श्री ओली पहली विदेश यात्रा पर अप्रैल 2018 में भारत आए। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत सरकार की 'सबका साथ सबका विकास' की परिकल्पना पड़ोसी देशों के साथ समावेशी विकास और समृद्धि की साँझी परिकल्पना का मार्गदर्शक सिद्धांत है।

प्रधानमंत्री ओली ने कहा कि नेपाल में ऐतिहासिक राजनीतिक परिवर्तन के बाद उनकी सरकार ने 'समृद्ध नेपाल सुखी नेपाली' सिद्धांत के साथ आर्थिक रूपांतरण को प्राथमिकता दी है। श्री ओली ने यह भी कहा कि उनकी सरकार भारत के साथ मैत्री संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने को उच्च प्राथमिकता देती है। दोनों प्रधानमंत्रियों ने नेपाल के बीरगंज में भारत के सहयोग से बनी समन्वित जाँच चौकी (Integrated Check Post) का उद्घाटन किया। साथ ही उन्होंने मोतिहारी में मोतिहारी–अमलेखगंज पेट्रोलियम उत्पाद पाइप लाइन के लिए जमीन खोदने के काम की शुरुआत का अवलोकन भी किया। यात्रा के दौरान कृषि, भारत में रक्सौल से नेपाल में काठमांडू तक रेल संपर्क और दोनों देशों के बीच आंतरिक जल मार्ग के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग पर सहमति हुई। इन क्षेत्रों में सहयोग के लिए तीन अलग–अलग वक्तव्य भी जारी किए गए।

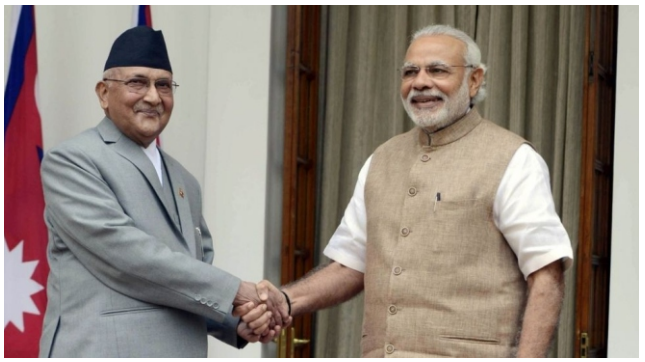

श्री ओली की भारत यात्रा के एक महीने बाद मई 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल की यात्रा की। दोनों प्रधानमंत्रियों ने भारत और नेपाल के बीच व्यापार तथा आर्थिक संबंधों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने संयुक्त रूप से 900 मेगावाट की महत्वाकांक्षी अरुण –3 जल विद्युत परियोजना की आधारशिला भी रखी। दोनों प्रधानमंत्रियों ने विश्वास व्यक्त किया कि इस परियोजना के चालू हो जाने पर दोनों देशों के बीच विद्युत उत्पादन और इसके व्यापार में सहयोग बढ़ेगा। इसके अलावा दोनों देशों में इस बात पर भी सहमति बनी कि सभी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से बकाया मुद्दों को निर्धारित समय सीमा में निपटाया जाए। दोनों प्रधानमंत्रियों ने इस बात पर भी सहमति जतायी कि प्रधानमंत्री मोदी की तीसरी नेपाल यात्रा से दोनों देशों के बीच युगों पुराने मैत्री संबंध और मजबूत हुए हैं तथा भारत और नेपाल के बीच बढ़ती साझेदारी को एक नई गति मिली है। भारत रवाना होने से पहले काठमांडू महानगरपालिका द्वारा आयोजित नागरिक अभिनंदन में प्रधानमंत्री मोदी ने नेपाल में ऐतिहासिक चुनाव सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर बधाई देते हुए कहा कि 'नेपाल की विकास यात्रा में भारत एक शेरपा की तरह साथ देने के लिए तैयार है'। श्री मोदी ने कहा कि ''नेपाल अपनी आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार आगे बढ़े, आपकी सफलता के लिए भारत हमेशा नेपाल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उसके साथ चलेगा। आप की सफलता में ही भारत की सफलता है, नेपाल की खुशी में ही भारत की खुशी है।'' अगस्त 2018 में चौथे बिम्सटेक (BISMTEC) शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चौथी बार नेपाल आए।

पिछले पाँच साल में दोनों देशों के बीच अन्य महत्वपूर्ण उच्च स्तरीय यात्राएं भी हुईं। नेपाल के तत्कालीन उपप्रधानमंत्री और विदेश मंत्री कमल थापा ने नवंबर 2015 में भारत की यात्रा की। उनके बाद सितंबर और अक्तूबर 2016 में तत्कालीन विदेश मंत्री डॉक्टर प्रकाश शरण महत भारत यात्रा पर आए। जुलाई 2017 में तत्कालीन उपप्रधानमंत्री और विदेश मंत्री कृष्ण बहादुर महरा ने भारत की यात्रा की। भारत की ओर से भी उच्च स्तरीय संपर्क गतिमान रहा। तत्कालीन विदेशमंत्री स्वर्गीय सुषमा स्वराज ने जुलाई 2014, जून 2015, अगस्त 2017 और फरवरी 2018 में नेपाल की यात्रा की। तत्कालीन रेलमंत्री सुरेश प्रभु फरवरी 2017 और तत्कालीन वित्तमंत्री स्वर्गीय अरुण जेटली मार्च 2017 में नेपाल की यात्रा पर आए। पिछले साल सितंबर में पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने नेपाल की यात्रा की।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूसरे कार्यकाल में भी दोनों देशों के बीच उच्चस्तरीय संपर्क जारी है। इस साल हुए आम चुनाव में शानदार सफलता के बाद श्री नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण में नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली भी शामिल हुए। हाल ही में अगस्त 2019 में विदेश मंत्री डॉक्टर एस जयशंकर नेपाल की यात्रा पर आए।

राजनयिक संबंधों के 70 साल

भारत और नेपाल के बीच राजनयिक संबंधों के 70 साल पूरे हो गए हैं। दोनों देशों के बीच जून 1947 में राजनयिक संबंधों की शुरुआत हुई थी। इस उपलक्ष्य में भारतीय दूतावास ने ''India & Nepal: 70 years of Diplomatic Ties'' शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की है। नेपाल के उपराष्ट्रपति नंद बहादूर पुन ने भारतीय गणतंत्र दिवस के मौके पर 26 जनवरी 2019 को इस पुस्तक का लोकार्पण किया। पुस्तक में भारत–नेपाल के बीच 70 साल के राजनयिक संबंधों की यात्रा को चित्रों और दस्तावेजों के माध्यम से रेखांकित किया गया है।

द्विपक्षीय संबंधों की नियमित समीक्षा और निगरानी के लिए पिछले पाँच साल में दोनों देशों की तरफ से अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इसके अंतर्गत कई द्विपक्षीय व्यवस्थाओं का गठन किया गया है और पुरानी संस्थाओं को गतिशील बनाया गया है।

भारत–नेपाल संयुक्त आयोग

भारत–नेपाल संयुक्त आयोग दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों की समग्र समीक्षा का एक उच्च निकाय है। आयोग की बैठक की सह अध्यक्षता दोनों देशों के विदेश मंत्री करते हैं और इसकी बैठकें बारी–बारी से दोनों देशों में होती हैं। हालाँकि आयोग का गठन जून 1987 में हुआ था लेकिन 2014 तक इसकी केवल दो ही बैठकें हुईं। मई 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई सरकार के गठन के बाद से संयुक्त आयोग की बैठकें फिर शुरू हुई। जुलाई 2014 में आयोग की तीसरी बैठक काठमांडू में आयोजित की गई। इसके बाद चौथी बैठक अक्तूबर 2016 में नई दिल्ली में हुई। संयुक्त आयोग की पांचवीं बैठक हाल ही में 21 अगस्त 2019 को काठमांडू में आयोजित की गई। विदेश मंत्री डॉक्टर एस जयशंकर और नेपाल के विदेश मंत्री प्रदीप कुमार गेवाली ने बैठक की सह–अध्यक्षता की। बैठक में द्विपक्षीय संबंधों की समग्र समीक्षा की गई और दोनों देश आर्थिक साझेदारी, व्यापार, संपर्क, पारगमन, ऊर्जा, जल संसाधन और संस्कृति समेत विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए। आयोग ने पिछले दो वर्षों में दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय संपर्क की वजह से भारत–नेपाल संबंधों के सभी पक्षों मे आई गतिशीलता पर प्रसन्नता भी व्यक्त की।

विशिष्ट व्यक्ति समूह

भारत–नेपाल संबंधों पर निष्पक्ष और गैर सरकारी दृष्टिकोण से विचार करने और दोनों देशों के बीच निकट तथा बहु–आयामी रिश्तों का विस्तार और उन्हें सुदृढ़ करने के लिए फरवरी 2016 में विशिष्ट व्यक्तियों के समूह का गठन किया गया। इसमें दोनों देशों की तरफ से चार–चार विशेषज्ञों और बुद्धिजीवियों को शामिल किया गया। समूह की बारी–बारी से दोनों देशों में कुल नौ बैठकें हुईं जिनमें 1950 की शांति और मित्रता संधि, व्यापार, पारगमन और सीमा सहित विभिन्न द्विपक्षीय मुद्दों पर गहन विचार विमर्श किया गया। दल ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली है और उम्मीद है कि जल्द ही इसे दोनों सरकारों को सौंपा जाएगा।

भारत–नेपाल संयुक्त निगरानी तंत्र

भारत नेपाल संयुक्त निगरानी तंत्र का 2016 में गठन किया गया। इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों की प्रगति की नियमित समीक्षा करना और भारत की आर्थिक तथा विकास साझेदारी के अंतर्गत विभिन्न परियोजनाओं को लागू करने से जुड़े मुद्दों का समाधान करना है। नेपाल के विदेश सचिव और नेपाल में भारत के राजदूत इसकी बैठक की सह–अध्यक्षता करते हैं। जुलाई 2019 में हुई संयुक्त तंत्र की सातवीं बैठक में नेपाल के विदेश सचिव शंकर दास बैरागी और नेपाल में भारत के राजदूत मंजीव सिंह पुरी ने भारत द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए इन परियोजनाओं को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए मिलकर काम करने पर सहमति जतायी।

विकास साझेदारी

भारत, नेपाल का एक प्रमुख विकास भागीदार है। दोनों देशों के बीच विकास साझेदारी की शुरुआत 1952 में हुई और तब से भारत लगातार नेपाल में आधारभूत सुविधाओं के विकास और मानव संसाधन क्षमता बढ़ाने में मदद कर रहा है। भारत से प्राप्त सहायता से नेपाल के विकास प्रयासों को आगे बढ़ाने मे काफी मदद मिली है। पिछले कुछ दशकों में नेपाल को भारत से मिलने वाली आर्थिक सहायता में कई गुना बढ़ोतरी हुई है। विकास साझेदारी के तहत भारत द्वारा आधारभूत स्तर पर स्वास्थ्य, शिक्षा, संपर्क, पेयजल, दक्षता प्रशिक्षण, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण तथा सामुदायिक विकास के क्षेत्र में सैकड़ों परियोजनाएं चलायी जा रही हैं। इसके लिए भारत सरकार की ''नेपाल को सहायता'' मद से वित्तीय अनुदान दिया जाता है। वित्त वर्ष 2018–19 के दौरान विभिन्न विकास साझेदारी परियोजनाओं पर 675 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। अनुदान सहायता के अलावा भारत सरकार ने नेपाल को पहले 10 करोड़ अमेरिकी डॉलर और 25 करोड़ अमेरिकी डॉलर की ऋण सहायता दे रखी थी। नेपाल के साथ भारत की विकास भागीदारी के प्रति वचनबद्धता दोहराते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अगस्त 2014 में अपनी नेपाल यात्रा के दौरान एक अरब अमेरिकी डॉलर की एक और ऋण सहायता की घोषणा की।

लघु विकास परियोजनाएं

भारत–नेपाल विकास साझेदारी की एक महत्वपूर्ण विशेषता लघु विकास परियोजनाएं हैं। अब इनका नाम बदलकर उच्च प्रभाव सामुदायिक विकास परियोजनाएं कर दिया गया है। भारत ने अब तक 407 परियोजनाएं पूरी कर ली हैं और करीब 111 कार्यान्यवन के विभिन्न चरणों में हैं। इन परियोजनाओं से नेपाल के दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल और अन्य जरूरी सुविधाएँ उपलब्ध कराने में मदद दी जा रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक नेपाल के सभी 77 जिलों में 752 एम्बुलेंस और 148 स्कूल बसें भी भेंट की गयी हैं।

मध्यम और बड़ी परियोजनाएं

विकास साझेदारी के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा नेपाल में कई मध्यम और बड़ी परियोजनाएं भी चलायी जा रही हैं। इनमें बी पी कोईराला स्वास्थ्य सेवाएँ संस्थान धरान, काठमांडू स्थित बीर अस्पताल का आपातकाल और ट्रामा सेंटर, मनमोहन स्मारक पॉलिटेक्निक बिराटनगर, समन्वित जाँच चौकी बीरगंज, नेपाल अकादमी पुस्तकालय और नेपाल भारत मैत्री पशुपति धर्मशाला समेत अनेक परियोजनाएं पूरी हो गई हैं जबकि अनेक कार्यान्यवन के विभिन्न चरणों में है।

समन्वित जाँच चौकी बीरगंज

विकास साझेदारी के अंतर्गत दोनों देशों के बीच व्यापार को बढ़ावा देने और वस्तुओं तथा लोगों के सुगम आवागमन के लिए रक्सौल–बीरगंज, सुनौली–भेरहवा, जोगबनी–बिराटनगर और नेपालगंज रोड–नेपालगंज में समन्वित जाँच चौकियों का निर्माण किया जा रहा है। अप्रैल 2018 में नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली ने अपनी भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मिलकर समन्वित जाँच चौकी बीरगंज का उद्घाटन किया। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त इस जाँच चौकी में एक ही छत के नीचे आप्रवासन, सीमाशुल्क, भंडारण, बैंक और सुरक्षा समेत सभी जरूरी सेवाएँ उपलब्ध हैं। बीरगंज को नेपाल का प्रवेश द्वार कहा जाता है और नेपाल का करीब एक तिहाई व्यापार बीरगंज के रास्ते होता है। बीरगंज में समन्वित जाँच चौकी शुरू हो जाने से न केवल सीमा पर औपचारिकताएं पूरी करने के समय में काफी कमी आयी है बल्कि इससे नेपाल में व्यापार करना सुगम हो गया है। बिराटनगर में समन्वित जाँच चौकी का काम भी लगभग पूरा हो गया है और इसके जल्द ही शुरू हो जाने की उम्मीद है।

नेपाल अकादमी पुस्तकालय और नेपाल भारत मैत्री पशुपति धर्मशाला

विकास साझेदारी के तहत भारत द्वारा काठमांडू स्थित प्रतिष्ठित नेपाल अकादमी के लिए एक पुस्तकालय का निर्माण भी किया गया है। नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली ने जुलाई 2018 में इसका उद्घाटन किया। 4.39 करोड़ नेपाली रुपये की लागत से बने इस पुस्तकालय में किताबें छापने के लिए आधुनिक ऑफसेट प्रिंटिंग की सुविधा भी उपलब्ध है। काठमांडू में विश्व प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर परिसर में 20 करोड़ नेपाली रुपये की सहायता से नेपाल भारत मैत्री पशुपति धर्मशाला का निर्माण किया गया है। अगस्त 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेपाल यात्रा के दौरान दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने इसका उद्घाटन किया। 400 बिस्तर वाली इस तीन मंजिला धर्मशाला में तीर्थ यात्रियों के लिए रसोईघर, भोजनकक्ष, पुस्तकालय और प्रार्थनाकक्ष आदि की सुविधा उपलब्ध है।

सीमाई क्षेत्रों में सड़क –रेल संपर्क

भारत सीमाई क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं के विकास में भी नेपाल की सहायता कर रहा है। इसके अंतर्गत तराई में सड़कों और राजमार्गों के सुधार में मदद दी जा रही है। तराई सड़क परियोजनाओं के लिए भारत सरकार ने 500 करोड़ रुपये स्वीकृत किए हैं जिसमें से अब तक 228 करोड़ रुपये जारी किए जा चुके हैं। इसके अलावा जयनगर–बरदीपास, जोगबनी–बिराटनगर नेपालगंज रोड–नेपालगंज, नौतनवा –भेरहवा और न्यू जलपाईगुड़ी–कांकडभिट्टा के बीच रेल संपर्क विकसित करने का काम जारी है। इनमें जयनगर से जनकपुर तक रेल निर्माण का काम पूरा हो चुका है और इसके परिचालन की तैयारियां की जा रही है। जनकपुर से बरदीपास और जोगबनी–बिराटनगर रेल लाइन का कार्य अभी जारी है जबकि बाकी तीन रेल परियोजनाओं का प्राथमिक कार्य शुरू हो गया है।

विकास साझेदारी के अलावा भारत नेपाल में अन्य विकास परियोजनाओं में भी भागीदारी कर रहा है। इनमें मोतिहारी–अमेखगंज पेट्रोलियम उत्पाद पाइप लाइन और 900 मेगावाट की अरुण-3 जल विद्युत परियोजना प्रमुख है।

मोतिहारी–अमलेखगंज तेल पाइपलाइन

मोतिहारी अमलेखगंज पेट्रोलियम उत्पाद पाइपलाइन दक्षिण एशिया में अपनी तरह की ऐसी पहली परियोजना है। इस पाइप लाइन से नेपाल को सुगम और पर्यावरण अनुकूल तरीके से पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। अप्रैल 2018 में नेपाल के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान दोनों प्रधानमंत्रियों ने दिल्ली से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए इस प्रतिष्ठित पाइप लाइन के लिए जमीन खोदने के काम का उद्घाटन किया था। भारत में मोतिहारी से नेपाल में अमलेखगंज तक 69 किलोमीटर लंबी इस पाइप लाइन का निर्माण निर्धारित 30 महीने से आधे समय में ही पूरा हो गया है। जुलाई 2019 में मोतिहारी से छोड़े गए डीजल के अमलेखगंज पहुँचने के साथ ही पाइपलाइन का तकनीकी परीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। पाइप लाइन के निर्माण पर करीब 324 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं और भारतीय तेल निगम ने यह पूरी लागत वहन की है। नेपाल के विदेश मंत्री प्रदीप कुमार गेवाली के अनुसार इस पाइप लाइन से सुगम और पर्यावरण अनुकूल पेट्रोलियम पदार्थों के आयात के साथ–साथ तेल की ढुलाई और रिसाव कम होने की वजह से नेपाल को हर साल अरबों रुपयों की बचत होगी।

अरुण–3 जल विद्युत परियोजना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मई 2018 में नेपाल यात्रा के दौरान नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली के साथ संयुक्त रूप से 900 मेगावाट की इस महत्वपूर्ण परियोजना की आधारशिला रखी। संखुवासभा जिले में अरुण नदी पर स्थित यह परियोजना नेपाल की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं में से एक है। इसका निर्माण भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी सतलुज जल विद्युत निगम द्वारा किया जा रहा है। परियोजना का लगभग 25% काम पूरा हो गया है। नेपाल की वर्तमान बिजली माँग 1300 मेगावाट से अधिक है जबकि उसका मौजूदा विद्युत उत्पादन करीब 900 मेगावाट है। इस कमी को पूरा करने के लिए उसे भारत से 425 मेगावाट बिजली आयात करनी पड़ती है। 900 मेगावाट की अरुण–3 परियोजना चालू हो जाने से नेपाल का मौजूदा विद्युत उत्पादन बढ़कर दुगना हो जाएगा। परियोजना से नेपाल को उत्पादित विद्युत में से 21.9 प्रतिशत बिना शुल्क मिलेगी। इसके अलावा नेपाल सरकार को पहले 15 साल 7.5 प्रतिशत और उसके बाद 12 प्रतिशत बिजली ऊर्जा रॉयल्टी के तौर पर मिलेगी। साथ ही नेपाल सरकार को क्षमता रॉयल्टी के रूप में पहले 15 वर्षों में 400 नेपाली रुपये प्रति किलोवाट और उसके बाद 1800 नेपाली रुपये प्रति किलोवाट की दर से भुगतान किया जाएगा। यदि नेपाल को मुफ्त बिजली के अलावा और विद्युत की आवश्यकता होगी तो उसे दोनों देशों के बीच हुए समझौते के अनुसार बिजली उपलब्ध करायी जाएगी। बाकी बची हुई विद्युत की आपूर्ति भारत को की जाएगी। अरुण–3 परियोजना नेपाल के विकास में मील का पत्थर साबित होगी। इससे जहाँ नेपाल की मौजूदा बिजली की कमी पूरी होगी वहीं नेपाल के आर्थिक विकास को एक नई गति मिलेगी। हालाँकि इस प्रतिष्ठित परियोजना का कार्य आगे बढ़ रहा है लेकिन हाल में परियोजना को नुकसान पहुँचाने की कुछ घटनाओं की वजह से इसकी सुरक्षा को लेकर थोड़ी चिंता उत्पन्न हुई है जिससे इस महत्वाकांक्षी परियोजना के समय पर पूरा होने में विलंब हो सकता है।

भूकंप पुनर्निर्माण

अप्रैल 2015 के विनाशकारी भूकंप के बाद भारत ने तुरंत बचाव और राहत कार्य में नेपाल की मदद की। भूकंप के कुछ ही घंटों के भीतर भारत के राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF) की टीमें और चिकित्सा दल विशेष विमानों से बचाव तथा राहत उपकरण, दवाइयाँ, भोजन, पानी और अन्य जरूरी सामान के साथ नेपाल पहुँच गए। भूकंप के बाद जून 2015 में नेपाल सरकार द्वारा पुनर्निर्माण के लिए आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत ने एक अरब अमेरिकी डॉलर की सहायता प्रदान करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। इसमें से 25 करोड़ अमेरिकी डॉलर अनुदान के तौर पर और 75 करोड़ अमेरिकी डॉलर ऋण सहायता के रूप में देने की घोषणा की गई। 25 करोड़ अमेरिकी डॉलर का अनुदान आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक धरोहर क्षेत्रों के लिए आवंटित किया गया।

2015 के भूकंप में नेपाल के गोरखा और नुवाकोट जिले सबसे अधिक प्रभावित हुए थे। भारत सरकार इन जिलों में 50000 घरों के पुनर्निर्माण में सहायता प्रदान कर रही है। इन घरों के पुनर्निर्माण में सामाजिक तकनीकी सलाहकार सुविधा उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार ने मार्च 2018 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) और संयुक्त राष्ट्र परियोजना सेवाएँ कार्यालय (UNOPS) के साथ भागीदारी समझौते किए हैं। इसका मुख्य उद्देश्य गृह स्वामियों को मौके पर ही पुनर्निर्माण के लिए तकनीकी सलाह और मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सभी संबंधित पक्षों की क्षमता का निर्माण करना भी है ताकि नेपाल

सरकार के भूकंपरोधी मानकों के अनुसार घरों का पुनर्निर्माण सुनिश्चित हो सके। गोरखा और नुवाकोट जिलों में अब तक 40000 से अधिक घरों का पुनर्निर्माण पूरा हो चुका है। भारत सरकार ने अब तक इसके लिए नेपाल सरकार को 696.31 करोड़ नेपाली रुपये जारी किए हैं। घरों के साथ ही गोरखा और नुवाकोट जिलों में आठ स्कूलों के पुनर्निर्माण का काम भी जारी है। साथ ही भारत सरकार की ओर से 12 जिलों में 157 स्वास्थ्य सुविधाओं के पुनर्निर्माण और 8 जिलों में 28 सांस्कृतिक धरोहर परियोजनाओं के लिए अनुदान भी दिया गया है।

आर्थिक और व्यापारिक संबंध

आर्थिक और व्यापारिक संबंध भारत–नेपाल संबंधों की रीढ़ है। भारत, नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार होने के साथ–साथ नेपाल में विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्रोत भी है। इसके अलावा भारत अन्य देशों के साथ नेपाल के लगभग समूचे व्यापार के लिए पारगमन की सुविधा भी उपलब्ध कराता है। नेपाल का दो तिहाई से अधिक व्यापार भारत के साथ है। जबकि सेवा क्षेत्र में करीब एक तिहाई व्यापार, एक तिहाई प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, लगभग शत प्रतिशत पेट्रोलियम पदार्थों की आपूर्ति और पेंशनधारकों, पेशेवर लोगों तथा मजदूरों द्वारा विदेशों से भेजे जाने वाले धन का एक बड़ा हिस्सा भी भारत से ही आता है। 1996 में व्यापार संधि में संशोधन के बाद से दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। 1996 के बाद से नेपाल से भारत को होने वाले निर्यात में ग्यारह गुना से अधिक वृद्धि हुई है और द्विपक्षीय व्यापार सात गुना से ज्यादा बढ़ा है।

भारत और नेपाल के बीच नेपाली वित्त वर्ष 2018–19 के दौरान कुल द्विपक्षीय व्यापार 612.90 अरब रुपये रहा जो इससे पिछले वर्ष के मुकाबले करीब 14.50 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान भारत से नेपाल को 573.70 अरब रुपये का निर्यात किया गया जबकि नेपाल से भारत में करीब 39.20 अरब रुपये का आयात हुआ। भारत से नेपाल को मुख्य रूप से पेट्रोलियम उत्पाद, मोटर गाड़ियां और अतिरिक्त पुर्जे, मशीनरी और कलपुर्जे, दवाइयाँ, नरम इस्पात उच्च ताप पर मोड़ी गई इस्पात चादरें, तार, कोयला, सीमेंट और रसायन का निर्यात किया जाता है जबकि नेपाल से मुख्यतः पॉलिएस्टर धागे, कपड़ा, जूट से बनी वस्तुएँ, धागे, जस्ते की चादरें, पैकेज जूस, इलायची, जी आई पाइप (GI pipes), जूते, सैंडल और ताँबे के तार आदि का आयात किया जाता है।

शिक्षा में सहयोग

नेपाल में मानव संसाधन के विकास में भारत महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। भारत सरकार नेपाली नागरिकों को 11वीं कक्षा से लेकर डॉक्टरेट की उपाधि (PHD) तक की पढ़ाई के लिए हर साल करीब 3000 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है। इसके अंतर्गत भारत और नेपाल में इंजीनियरिंग, मेडिकल, कृषि, कंप्यूटर विज्ञान, व्यवसाय प्रबंध, संगीत और ललित कला समेत विभिन्न विषयों में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है। साथ ही भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम और कोलंबो योजना के तहत नेपाल सरकार और सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र कर्मियों को अपना व्यावसायिक कौशल बढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में लघु अवधि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

लोगों के बीच संपर्क

लोगों के बीच आपसी संपर्क भारत–नेपाल संबंधों की नींव है। दोनों देशों के बीच रामायण काल और शायद उससे भी पहले से बेटी–रोटी का नाता है। रामायण काल में राजा जनक की बेटी सीता माता का विवाह भगवान राम से हुआ था और तब से दोनों देशों के लोगों के बीच पारिवारिक और सामाजिक संबंधों की यह परंपरा आज भी जारी है। खुली सीमा दोनों देशों के बीच घनिष्ठ संबंधों की एक अनूठी विशेषता और भारत तथा नेपाल के लोगों को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। एक अनुमान के अनुसार भारत में करीब साठ लाख नेपाली नागरिक काम करते या रहते हैं। इसी

तरह लगभग छह लाख भारतीय नागरिक नेपाल में रहते या अधिवास करते हैं। दोनों देशों के बीच सड़क, रेल और हवाई सम्पर्क बढ़ाने की दिशा में कई कदम उठाए गए हैं। इसी क्रम में 2014 में भारत और नेपाल के बीच मोटर वाहन समझौता हुआ था। इसके तहत अब तक दोनों देशों के बीच 13 मार्गों पर नियमित बस सेवाएँ शुरू करने की अनुमति प्रदान की जा चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री सुशील कोईराला ने नवंबर 2014 में काठमांडू से काठमांडू– दिल्ली बस सेवा का उद्घाटन किया। यह दोनों देशों के बीच पहली नियमित बस सेवा थी। मई 2018 में अपनी तीसरी नेपाल यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली ने जनकपुर से जनकपुर–अयोध्या बस सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। अभी हाल ही में 26 अगस्त 2019 को काठमांडू से काठमांडू– सिलिगुड़ी बस सेवा आरम्भ हुई। दोनों देशों के बीच यह 11वीं बस सेवा है। इन बसों के परिचालन से जहाँ भारत और नेपाल के बीच आवागमन सुगम तथा सुविधा जनक हुआ है वहीं इससे दोनों देशों के लोग और नजदीक आ रहे हैं।

सांस्कृतिक संबंध

भारत और नेपाल की युगों पुरानी साँझा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। दोनों ही देशों में सदियों से विभिन्न जाति, धर्म और संप्रदाय के लोग रहते हैं जिनकी अलग–अलग भाषा, वेशभूषा, रीति रिवाज और खानपान है। यही सांस्कृतिक विविधता में एकता भारत और नेपाल की बहुलवादी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। नेपाल में हिंदू और बौद्ध धर्म के अनेक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। इनमें सीता माता की जन्मस्थली जनकपुरधाम का प्रसिद्ध जानकी मंदिर, काठमांडू स्थित विश्वविख्यात पशुपतिनाथ मंदिर, गौतम बुद्ध का जन्मस्थान लुम्बिनी और मुस्तांग जिले में स्थित मुक्तिनाथ मंदिर शामिल है। हर साल भारत से लाखों श्रद्धालु आस्था के इन प्रमुख केंद्रों की तीर्थयात्रा करते हैं। इन युगों पुराने सांस्कृतिक संबंधों को एक नई ऊर्जा प्रदान करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मई 2018 में अपनी नेपाल यात्रा जनकपुर से शुरू की। उन्होंने जानकी मंदिर में विशेष पूजा अर्चना की। बाद में वे हिंदू और बौद्ध धर्म के प्रमुख तीर्थस्थल मुक्तिनाथ भी गए और आराधना की। प्रधानमंत्री ने काठमांडू में भगवान पशुपतिनाथ के दर्शन भी किए। काठमांडू महानगरपालिका द्वारा आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ये तीनों स्थान सिर्फ महत्वपूर्ण तीर्थस्थल ही नहीं हैं बल्कि भारत और नेपाल के अडिग और अटूट संबंधों का हिमालय हैं। शान्ति, प्रकृति के साथ संतुलन और आध्यात्मिक जीवन के मूल्यों से परिपूर्ण हमारे दोनों देशों के आदर्श पूरी मानव जाति और पूरे विश्व की अनमोल धरोहर हैं। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा के बाद जनकपुर और मुक्तिनाथ में तीर्थयात्रियों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हुई है। युगों पुराने इन सांस्कृतिक संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने के लिए नेपाल और भारत के तीन–तीन प्रमुख शहरों काठमांडू– वाराणसी, लुम्बिनी–बोधगया और जनकपुर–अयोध्या को आपस में जोड़ने के लिए दोनों देशों की सरकारों के बीच तीन समझौते किए गए हैं।

हिन्दू और बौद्ध धर्म के अलावा सिख समुदाय का भी नेपाल से गहरा नाता है। सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी ने अपनी तीसरी उदासी के समय नेपाल की यात्रा की थी। काठमांडू में जिस स्थान पर गुरु साहब ने साधना की उस जगह आज गुरु नानक मठ गुरुद्वारा है। इसके अलावा

नेपाल में गुरुग्रंथ साहिब की अनेक हस्तलिखित प्रतियां भी हैं, इनमें से कुछ पशुपतिनाथ मंदिर परिसर में हैं। सिख समुदाय के साथ संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए नेपाल सरकार ने गुरु नानक देव की 550 वीं जयंती के उपलक्ष्य में 2500, 1000 और 100 नेपाली रुपये के स्मारक सिक्के जारी करने का फैसला किया है। इन सिक्कों की ढलाई शुरू हो गई है और जल्दी ही इन्हें जारी किया जाएगा।

भारत और नेपाल के बीच कला संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में भी बड़े ही घनिष्ठ संबंध हैं। इन रिश्तों को और प्रगाढ़ बनाने के प्रयास के तहत भारत सरकार द्वारा नेपाल में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पिछले 2 वर्षों के दौरान नेपाल में विख्यात तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन, मशहूर गायक कैलाश खेर, प्रसिद्ध वॉयलिन वादक डॉ. एल सुब्रमण्यम, सुप्रसिद्ध पार्श्वगायिका कविता कृष्णमूर्ति और प्रख्यात बाँसुरी वादक पंडित हरिप्रसाद चौरसिया समेत भारत के अनेक जाने माने कलाकारों के कार्यक्रम आयोजित किए गए। हिन्दी फिल्में और टेलिविजन कार्यक्रम नेपाल में बहुत ही लोकप्रिय हैं और दोनों देशों को जोड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इस कड़ी को और मजबूत करने के लिए भारतीय फिल्म और टेलिविजन संस्थान (FTII) पुणे में नेपाल के 20 कलाकारों के लिए फरवरी 2018 में तीन सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह पहला मौका था जब इस प्रतिष्ठित संस्थान में विदेशी कलाकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

भारत सरकार नेपाल के संपादकों, पत्रकारों और अन्य विशेषज्ञों के लिए भी विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है। साथ ही भारतीय संस्कृति और भारत–नेपाल संबंधों को बढ़ावा देने के क्षेत्र में काम कर रहे विभिन्न मैत्री संगठनों को सहायता भी प्रदान की जाती है। भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए नेपाल में सन 2007 में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना की गई। अब इसका नाम स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र हो गया है। इस केन्द्र ने अब तक नेपाल के विभिन्न हिस्सों में सैकड़ों सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए हैं। सांस्कृतिक संबंधों को और सुदृढ़ बनाने तथा दोनों देशों के बीच सूचना के आदान–प्रदान के लिए 1951 में नेपाल भारत पुस्तकालय का गठन किया गया था। इसे नेपाल का पहला विदेशी पुस्तकालय माना जाता है और आज भी इसकी गिनती नेपाल के सबसे प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में की जाती है।

हिन्दुस्तान की सभी भाषाएं, जिनमें जो उत्तम चीजें हैं, उनको हमें समय–समय पर हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाने का प्रयास करना चाहिए और यह अविरल प्रक्रिया चलती रहे।

नरेन्द्र मोदी

आजाद मीडिया और राष्ट्रभाषा के शिल्पकार सरदार पटेल

उमेश चतुर्वेदी

अनायास नहीं है कि भारत के पहले उप प्रधानमंत्री सरदार बल्लभभाई पटेल की ख्याति भारतीय बिस्मार्क के रूप में है। जर्मनी के एकीकरण के लिए बिस्मार्क ने जो भूमिका निभाई थी, उससे कहीं ज्यादा चुनौतीपूर्ण अंग्रेजों से भारत की आजादी हासिल होने के बाद भारत को एक राष्ट्र राज्य के रूप में अखंड स्वरूप में स्थापित करना था। 562 देसी रियासतों के एकीकरण में सरदार पटेल ने जो कठिन और अहम भूमिका निभाई, वह बिस्मार्क के योगदान से कहीं ज्यादा चुनौतीपूर्ण थी। आजाद भारत में अखंडता और एकीकरण का जो भाव सरदार पटेल ने भरा, उसका ही असर है कि आजादी के इतने सालों बाद भी जब राष्ट्रीय एकता पर सवाल उठते हैं, भारत के बच्चे–बच्चे की देशभक्ति जाग जाती है.. और इस देशभक्ति के सामने भारत विरोधी– एकता को खंडित करने वाली ताकतों को मुंह की खानी पड़ती है।

मौजूदा दौर में भले ही मीडिया दैत्याकार हो गया हो, उसमें कई तरह की बुराइयां भी आ गईं हों। लेकिन हमें यह मानने से गुरेज नहीं होना चाहिए कि इस देशभक्ति का अप्रतिम पैरोकार और वाहक यह विशालकाय मीडिया भी है। लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि देश के एकीकरण का शिल्पकार भारत में आजाद मीडिया की बुनियाद रखने का भी मिस्त्री था। भारत को जब आजादी मिली, तब भारत में मीडिया दो ही रूपों में था। ऑल इंडिया रेडियो के नाम से रेडियो था, तो कुछ अखबार और पत्रिकाएं भी थीं। बहुत कम लोगों को पता होगा कि जब आजादी मिली, तब भारत में सिर्फ नौ ही रेडियो स्टेशन थे। बंटवारे के बाद दिल्ली, मद्रास, बंबई, कलकत्ता, लखनऊ और त्रिचिरापल्ली जहां भारत को मिले, वहीं पेशावर, लाहौर और ढाका स्टेशन पाकिस्तान को मिले। स्लाइडशेयर डॉट कॉम नामक एक वेबसाइट के मुताबिक उस वक्त देशभर में करीब दो लाख 75 हजार रेडियो सेट थे। जिनमें से करीब 2 लाख 48 हजार रेडियो सेट भारत के हिस्से में आए। इनके अलावा रजवाड़ों में भी कुल पांच रेडियो स्टेशन काम कर रहे थे। आज देशभर में 231 रेडियो स्टेशन और उनकी देश के 99 प्रतिशत से कुछ ज्यादा हिस्से पर पहुंच होने के पीछे देश के पहले सूचना और प्रसारण मंत्री सरदार पटेल का बड़ा योगदान है। सरदार पटेल दूरदर्शी राजनेता थे। अंतर्राष्ट्रीय राजनय को लेकर सीमावर्ती देशों नेपाल और चीन को लेकर उन्होंने जो विचार एवं अंदेशे जाहिर किए थे, नेपाल में जहां वह अब साबित हो रहा है. वहीं चीन की साम्राज्यवादी नीति का देश ने 1962 में ही दर्शन कर लिया। सरदार पटेल जानते थे कि आने वाले दिनों में रेडियो और मीडिया देश के एकीकरण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। चूंकि देश के वे पहले सूचना और प्रसारण मंत्री भी थे, लिहाजा उन्होंने रेडियो के तेज विकास की योजना भी बनाई। इसके तहत देश के सभी हिस्सों में रेडियो स्टेशन एवं स्टूडियो स्थापित करना तय किया गया। इस पायलट प्रोजेक्ट के तहत जालंधर, जम्मू, पटना, कटक, गुवाहाटी, नागपुर, विजयवाड़ा, श्रीनगर, इलाहाबाद, अहमदाबाद, धारवाड़ और कोझिकोड में रेडियो स्टेशन स्थापित किए गये। 4 नवंबर 1948 को नागपुर रेडियो स्टेशन का उद्घाटन करते वक्त सरदार पटेल का यह कहना कि रेडियो देश की एकता और विकास में अहम भूमिका निभाएगा, मीडिया को लेकर उनकी सोच को ही जाहिर कर रहा था। तब उन्होंने कहा था कि रेडियो के इसी महत्व को देखते हुए उसके तेज विस्तार की योजना बनाई गई है। चूंकि उसके लिए जरूरी तकनीकी सरंजाम देश में उन दिनों नहीं थे, लिहाजा उन्हें विदेशों से मंगाए जाने को भी जानकारी पटेल ने देश को दी थी । पटेल ने तब कहा था कि सामान के आने में देर होगी। फिर भी रेडियो का तेज विस्तार किया जाएगा। इस मौके पर सरदार ने प्रबुद्ध लोगों से अपील की थी कि आम लोगों को रेडियो के प्रति सहज बनाने के लिए कोशिश की जाय । पटेल को पता था कि अंतर्राष्ट्रीय

राजनय में विदेश प्रसारण अपनी भूमिका निभाएगा। इसलिए उन्होंने विदेशी भाषाओं में रेडियो प्रसारण की भी योजना बनाई। सूचना और प्रसारण मंत्री के नाते सरदार पटेल को पता था कि विदेशी भाषाओं में प्रसारण के जरिए भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय राजनय में हस्तक्षेप किया जा सकता है। हालांकि आजादी के पहले तक चीनी, जापानी, पश्तो और बर्मी जैसी विदेशी भाषाओं में ही ऑल इंडिया रेडियो प्रसारण करता था। यही वजह है कि आज आकाशवाणी से 16 विदेशी भाषाओं में प्रसारण हो रहा है। यह सरदार पटेल की ही सोच थी कि उनके निधन के पहले तक छह रेडियो स्टेशनों वाला ऑल इंडिया रेडियो 1950 तक 21 केंद्रों से प्रसारण करने लगा था। जिसकी पहुंच देश की उस वक्त तक 21 फीसद जनसंख्या और 12 प्रतिशत भूभाग तक हो गई थी।

सूचना तंत्र में साम्राज्यवाद का बड़ा असर है। आजादी के पहले तक भारत में भले ही यूपीआई जैसी एक–दो एजेंसियां काम कर रही थीं। लेकिन विदेशी एजेंसियों जितनी उनकी धाक और पहुंच नहीं थी। पटेल को अंदाजा था कि आजाद भारत के स्वतंत्र प्रेस के लिए किफायती और भारतीय समाचार एजेंसियों की किफायती अखबारों तक पहुंच जरूरी होगी। उन्होंने इसके लिए प्रयास किया और 21 सितंबर 1948 को प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया का गठन करवाया। वैसे उसके पहले तक वह ब्रिटिश समाचार एजेंसी रायटर की एजेंसी थी। रायटर से समझौते के नाम पर एक तरह से उन्होंने पीटीआई को पूरी तरह देशी एजेंसी बना दिया ताकि भारतीय अखबारों को विदेशी खबरों तक आसानी से पहुंच हो सकें। इसके तहत रायटर से पीटीआई के शेयर खरीदने के लिए कोष का भी इंतजाम किया। जैसे ही रायटर और पीटीआई के बीच समझौता हुआ, पीटीआई ने सौ रुपये के मूल्य वाले 10 हजार डिबेंचर जारी कर दिए । तब पटेल ने बड़ौदा के नरेश गायकवाड़ को ज्यादातर डिबेंचर खरीदने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद ही पीटीआई विदेशी एजेंसी रायटर का शेयर खरीद पाने में समर्थ हुई और रायटर की सहयोगी बन पाई।

ऑल इंडिया रेडियो का आकाशवाणी नाम 1957 में हुआ। लेकिन यह सच है कि ऑल इंडिया रेडियो को भारतीय संस्कृति और परंपरा के मुताबिक ढालने और उसके कार्यक्रम बनाने को प्रेरित पटेल ने ही किया। रेडियो प्रसारण में पटेल ने स्थानीयता को भी बढ़ावा दिया। चूंकि उन दिनों रेडियो ही एक मात्र प्रमुख माध्यम था। लिहाजा गीत–संगीत के साथ ही नाटक भी रेडियो पर प्रसारित किए जाते थे और उन्हें काफी लोकप्रियता हासिल थी। हालांकि तब तक भारतीय समाज इतना सहज और खुला नहीं था कि उस दौर में अच्छे घर की महिलाएं नाटकों में स्त्री पात्रों की भूमिका निभाने के लिए कम ही आती थीं। कुछ भले घरों की महिलाएं आती भी थीं तो उन्हें सम्मान के नजरिए से नहीं देखा जाता था। लिहाजा ज्यादातर स्त्री पात्रों की भूमिकाएं निभाने के लिए रेड लाइट एरिया की महिलाएं बुलाई जातीं। मशहूर लेखक मुद्रा राक्षस की आत्मकथा नारकीय के मुताबिक सरदार पटेल के सूचना और प्रसारण मंत्री रहते वक्त ही इन महिलाओं पर सवाल उठे तो उन महिलाओं के रेडियो स्टेशनों पर आने पर रोक लगा दी गई।

पटेल हिंदी के घोर समर्थक थे। राजभाषा विभाग अब भी गृह मंत्रालय के तहत आता है और सरदार पटेल देश के पहले गृहमंत्री भी थे। उनका भी गांधीजी की तरह मानना था कि हिंदी ही आजाद भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है और देश को एक सूत्र में पिरो सकती है। मशहूर भाषाविद् कैलाश चंद्र भाटिया और मोतीलाल चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक हिंदी भाषा, विकास और स्वरूप में लिखा है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्थापित करने की दिशा में गांधी जी द्वारा स्थापित वर्धा हिंदी प्रचार सभा महत्वपूर्ण कदम साबित हुई। इसी के तहत सरदार पटेल ने मई 1936 में हिंदी वर्ग का श्रीगणेश किया और काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नामक संस्था की स्थापना की। इस तरह सौराष्ट्र के विभिन्न संस्थाओं के जरिए हिंदी का प्रचार–प्रसार बढ़ा। डॉक्टर हीरालाल बाछोतिया ने अपनी पुस्तक राजभाषा हिंदी और उसका विकास में पटेल के हिंदी प्रेम को जाहिर करने वाले एक प्रसंग का जिक्र किया है। इसके मुताबिक 1940 में कराची में हुए कांग्रेस के अधिवेशन के सरदार पटेल अध्यक्ष थे और उन्होंने अपना अध्यक्षीय भाषण पहले हिंदी में ही दिया था। सरदार पटेल का दृढ़ मत था कि आजाद भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है।

आजादी से पहले और आजादी के बाद भारतीय राजनीति में कई मोर्चों पर सरदार पटेल का बड़ा योगदान है। चाहे खादी का मसला हो या चरखे का, सांप्रदायिक

सौहार्द का मसला हो या राष्ट्रीय एकीकरण का, सोमनाथ मंदिर का उद्धार हो या फिर राजनीति में परिवारवाद से दूर सादगी के प्रतीक का..अंतरराष्ट्रीय राजनय में दृढ़ कदमों का...पटेल की इन छवियों—रूपों को देश बखूबी जानता है। लेकिन मीडिया और राष्ट्रभाषा को लेकर भी उनका योगदान कम नहीं है। उन्होंने एक तरफ जहां आजाद भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के माध्यम के तौर पर आजाद मीडिया की नींव रखी और उसकी ताकत को राष्ट्रीय आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के परिप्रेक्ष्य में समझा, वहीं उन्होंने राष्ट्रभाषा की ताकत को भी रेखांकित किया और उसे अमलीजामा पहनाने की कामयाब कोशिश भी की।

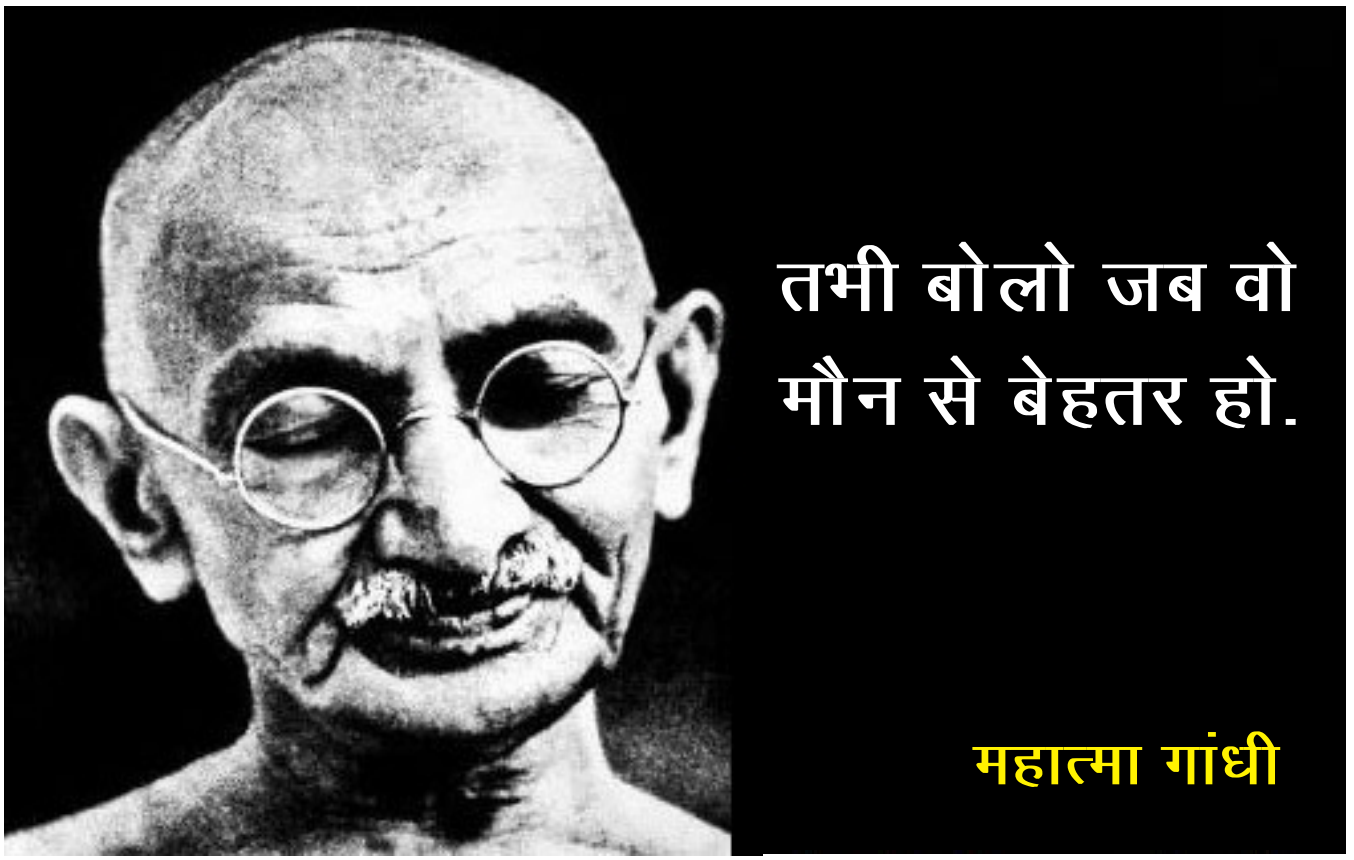

सर्वशिक्षा अभियान और उत्तर प्रदेश

हरीलाल

दिन के ग्यारह बजे हैं। प्राथमिक विद्यालय भदया में भीड़ उमड़ रही है।आजमगढ़ जिले के अतरौलिया विकास खण्ड का यह विद्यालय ब्लॉक मुख्यालय से लगभग 17 किलोमीटर दूर गांव में स्थित है। यहां एक सड़क जाती है और कई गांव छोट–छोटे रास्तों से जुड़े हुए हैं। एक व्यक्ति थाना में जाकर सूचना देता है कि भदया गांव में काफी भीड़ इक्ट्ठा हो गई है। मालूम होता है कि कोई बवाल हो गया है। थानेदार भी उसी दिशा में रवाना हो गए। स्कूल में एक महिला जोर–जोर से कह रही थी कि मेरे बेटे का नाम स्कूल से काट दो और स्थानांतरण प्रमाण पत्र–टी.सी. बना दो। हेडमास्टर साहब उस महिला को समझा रहे थे कि टी.सी. मत बनाओ। स्कूल में ठीक से पढ़ाई होगी। यह सुनिश्चित किया जाएगा लेकिन महिला ज़िद पर अड़ी की। स्कूल में भीड़ बढ़ती जा रही थी। महिला के समर्थन में कई और महिलाएं उतर आईं और वे भी अपने बच्चों के टी.सी. मांगने लगीं। भीड़ और भी बढ़ती जा रही थी। थानेदार बेबस दिखाई दे रहे थे। उन्होंने अतिरिक्त फोर्स मंगवाने के लिए वायरलेस किया। जिले के अधिकारी भी बेबस थे। आश्चर्य यह कि कोई घटना नहीं, फिर फोर्स की क्या आवश्यकता है। डीएम ने एसडीएम को वहां भेजा। एसडीएम बेसिक शिक्षा अधिकारी के साथ स्कूल में पहुंचे। पंचायत शुरू हुई। मसला तय भी हो गया। एसडीएम साहब ने आश्वासन दिया कि विद्यालय के सभी शिक्षक समय से आएंगे और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा। इस घटना से पूरे जिले की प्राथमिक शिक्षा की तरफ अधिकारियों का ध्यान गया और बच्चों के मां–बाप भी स्कूलों की निगरानी करने लगे और इस तरह से सर्वशिक्षा अभियान को गति मिली।

सर्वशिक्षा अभियान को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए ग्राम शिक्षा समिति का गठन किया गया। ग्राम प्रधान इसका अध्यक्ष होता है। ग्राम पंचायत इस समिति के सदस्य होते हैं। प्रधानाध्यापक समिति का सचिव होता है। यह समिति सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत सभी योजनाओं का क्रियान्वयन करती है। ग्राम समिति के अलावा, न्याय पंचायत स्तर पर भी समिति बनायी गयी है और फिर ब्लॉक स्तर पर ब्लॉक संसाधन केन्द्र बने हैं। जिले में सर्वशिक्षा अभियान के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी बेसिक शिक्षा अधिकारी की होती है। पूरे जिला स्तर पर मुख्य विकास अधिकारी और जिलाधिकारी निरन्तर समीक्षा करते हैं।उत्तर–प्रदेश के सभी विकास खण्डों के स्कूलों में यूनिफार्म, जूते–मोजे, पाठय–पुस्तकें और बस्ते मुफ्त में दिये जाते हैं। गरीब बच्चों को स्कूलों में आकर्षित करने के लिए मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत मेन्यू बदल–बदल कर भोजन दिये जाते हैं। महीने के प्रत्येक सोमवार को राज्य सरकार और आखिरी बृहस्पतिवार को केन्द सरकार की तरफ से मौसमी फल वितरित किये जाते हैं। छात्रों को प्रत्येक बुधवार को 200 मिली लीटर दूध दिया जाता है। सरकार सिर्फ भोजन के प्रति ही नहीं बल्कि पढ़ाई के प्रति भी संवेदनशील है। कक्षा तीन से अंग्रेजी को भी पाठयक्रम में शामिल किया गया है। पाठयक्रम में पांच विषयों की पढ़ाई होती है। जुलाई माह में पूरे प्रदेश में स्कूल चलो अभियान चलाया गया। इस अभियान का जनमानस पर सकारात्मक प्रभाव रहा है। कम आर्थिक आय वाले परिवारों के बच्चे स्कूलों से जुड़े हैं और शत–प्रतिशत बच्चे स्कूल जा रहे हैं। इस योजना के अंतर्गत संचालित स्कूलों की गुणवत्ता पर सवाल भी उठाए जाते हैं। हालांकि इन विद्यालयों में शिक्षा देने के लिए उच्च शिक्षित युवकों और प्रशिक्षित युवाओं को नियुक्त किया गया है। इन विद्यालयों की एकमात्र विडम्बना है कि इस अभियान से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों के बच्चे यहां नहीं पढ़ते हैं। हालांकि न्यायालय ने भी कई बार इस मामले को लेकर हस्तक्षेप का प्रयास किया है। बहरहाल, फिर भी सर्वशिक्षा अभियान ने उन घरों में शिक्षा की रोशनी पहुंचायी है जो कई पीढ़ियों से कभी स्कूल नहीं गये। वैश्विक स्तर पर भी प्राथमिक शिक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की गयी इसके लिए

अफ्रीका के सेनेगल की राजधानी डैकर में विश्व सम्मेलन हुआ जिसमें प्राथमिक शिक्षा को लेकर चिंताएं व्यक्त की गयीं। सम्मेलन में छह बिन्दुओं पर चर्चा की गयी। इन छह बिन्दुओं को ध्यान में रखकर भारत में वर्ष 2000 में 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को निशुल्क शिक्षा देने का प्रावधान किया गया था। सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत प्राइमरी स्कूल के ढांचे को मजबूत बनाया जाना प्राथमिकता है ताकि देश का हर बच्चा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सके और अपने भावी जीवन का विकास कर सके। इस योजना का लक्ष्य बालक, बालिका के बीच की भेदभाव युक्त दूरी को समाप्त करना, देश के हर शहर–गांव में प्राथमिक स्कूल खोलना, मुफ्त शिक्षा प्रदान करना, निशुल्क पाठय पुस्तकें, स्कूल–ड्रैस देना, शिक्षकों का चयन करना, उन्हें लगातार प्रशिक्षण देते रहना, स्कूलों में अतिरिक्त कक्षाओं का निर्माण, पेयजल और प्रसाधन आदि की व्यवस्था करना है। सर्वशिक्षा अभियान की शुरुआत 2000–2001 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने शुरू की थी। इस योजना का उद्देश्य हर बच्चे को शिक्षा देना था। इसका लक्ष्य प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण करना था। प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने एक किलोमीटर के दायरे में स्कूल खोले और प्रत्येक तीन किलोमीटर के दायरे में एक उच्च प्राथमिक विद्यालय बनाया, जिससे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के बच्चे भी स्कूल जा सकें। सरकार का प्रयास है कि अधिक से अधिक बच्चे स्कूल जा सकें। बाद में इस योजना को और प्रभावशाली बनाने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस पर कानूनी बल दिया और विद्यालयों में शत प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू कर दिया। स्कूल जाने वाले बच्चों को स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने एवं कुपोषण से बचाने के लिए आंगनवाड़ी कार्यक्रम को भी विद्यालय से जोड़ दिया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसे और आगे बढ़ाते हुए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था के अतिरिक्त , हर महीने के प्रत्येक बृहस्पतिवार को केन्द्र सरकार की ओर से मौसमी फल वितरित करने की व्यवस्था की।

गौरतलब है कि देश में प्राथमिक शिक्षा का स्तर बहुत ही कमजोर है। समाज के उच्च वर्ग के लोग अपने बच्चों को प्राईवेट स्कूलों में भेज कर शिक्षा दिलाते हैं। परन्तु खासकर कमजोर वर्ग के लिए सरकार ने यह योजना शुरू की है। आज के समय में देश के सभी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा मुफ्त दी जाती है। इसके साथ ही बच्चों को छात्रवृत्ति, मुफ्त पुस्तकें, स्कूल –ड्रैस, बैग, जूते जैसी सामग्री मुफ्त दी जाती है। सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत सभी स्कूलों में अच्छी गुणवत्ता युक्त शिक्षा दी जा सके, इसके लिए शिक्षकों का प्रशिक्षित होना आवश्यक है। सरकार ने प्राथमिक शिक्षकों को अनेक प्रकार के प्रशिक्षण दिये हैं जैसे शिक्षा पद्धति, बाल मनोविज्ञान मूल्यांकन पद्धति अभिमानक से जुड़े प्रशिक्षण आदि। इसके साथ ही अध्यापकों को भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिये जाते हैं जिससे वह बच्चों को बेहतर तरीके से पढ़ा सकें। अब राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है कि वे अपने राज्य के स्कूलों में कितने प्रशिक्षित अध्यापक नियुक्ति करते हैं।

हालांकि केन्द्र सरकार सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसमें जन भागीदारी भी आवश्यक है। अभी भी उत्तर प्रदेश की कई ऐसी जातियां हैं जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। वे अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाये दूसरे कामों में लगाना ज्यादा पसंद करते हैं। फिर भी जन–नेताओं और विद्यालय द्वारा चलाए जा रहे स्कूल चलो अभियान का काफी अच्छा असर दिखाई पड़ रहा है। देश का हर बच्चा स्कूल जाए और गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त करे, यही डैकर सम्मेलन की सार्थकता है।

समीर वर्मा
शिलांग

मेघालय

मेघों के घर स्वच्छता की बयार

मेघों का घर मेघालय हरीभरी पहाड़ियों में छिपे किसी स्वर्ग से कम नहीं है । अगर वाकई स्वर्ग जैसा कुछ होता है तो मेघालय इसका जीवंत उदाहरण है और इसका कारण यहाँ का अप्रतिम प्राकृतिक सौन्दर्य और संस्कृति है। देश के उत्तरी पूर्व क्षेत्र का यह खूबसूरत राज्य जिसे देख कर लगता हैं मानो इसने हरियाली की चादर ओढ़ रखी हो। राज्य का एक तिहाई हिस्सा घने जंगलों से भरा है। इसे पूरब का स्काटलैंड भी कहा जाता है। यहां पूरे देश के मुकाबले सबसे ज्यादा बारिश होती है। इस राज्य की खूबसूरती और इसके मनमोहक दृश्य के कारण पर्यटक खिंचे चले आते हैं। किसी को पहाड़ के साथ हरी–भरी वादियां पसंद आती हैं तो किसी को प्राकृतिक झील के स्वच्छ नीले पानी के साथ खेलने में आनंद मिलता है. कई लोग ऐसे भी हैं जो बादलों को करीब से छूकर उसे महसूस करते हैं। मेघालय अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए तो जगप्रसिद्ध है ही इसके साथ ही यहाँ का स्वच्छ वातावरण दुनिया के लिए एक मिसाल है। देश में 2014 में स्वच्छता को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ किया था लेकिन मेघालय में स्वच्छता की बयार पिछले कई वर्षों से चल रही है पूरे राज्य में शहरी हों या ग्रामीण इलाके साफ सुथरा रहना चहुं ओर लोगों के संस्कार में शामिल है यही वजह है कि इस राज्य में एशिया और भारत का सबसे स्वच्छ गांव और सबसे स्वच्छ नदी आज भी आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।

मावलिन्नांग गांव

मेघालय का मावलिन्नांग गांव जिसे कि 'भगवान का अपना बगीचा' भी कहा जाता है। खासी हिल्स जिले में स्थित शिलांग और भारत–बांग्लादेश बॉर्डर से 90 किलोमीटर दूर यह गांव है। इस गांव को अपनी अनूठी साफ सफाई के लिए 2003 में एशिया का सबसे साफ और 2005 में भारत का सबसे साफ गांव का दर्जा मिला। इस गांव की सबसे बड़ी खासियत यह है कि गांव की साफ–सफाई का ख्याल कोई और नहीं बल्कि वहां रहने वाले लोग ही रखते है। लगभग 500 लोगों की जनसंख्या वाले इस छोटे से गांव में करीब 95 खासी जनजातीय परिवार रहते हैं। मावलिन्नांग में पॉलीथीन पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा हुआ है और यहां थूकना मना है। इस पूरे गांव में जगह –जगह बांस के बने डस्टबिन लगे हैं। किसी भी ग्रामवासी को फिर चाहे वो महिला हो, पुरुष हो या बच्चे हों जहां गन्दगी नज़र आती है तो वे सफाई पर लग जाते हैं। यहां सुपारी की खेती आजीविका का मुख्य साधन है। यहां लोग घर से निकलने वाले कूड़े–कचरे को बांस से बने डस्टबिन में जमा करते हैं और उसे एक जगह इकट्ठा कर खेती के लिए खाद की तरह इस्तेमाल करते हैं।

आपको बता दें कि सफाई के साथ–साथ यह गांव शिक्षा और स्वास्थ्य के मामले में भी अव्वल है। यहां की साक्षरता दर 100 फीसदी है। इतना ही नहीं, इस गांव में

ज्यादातर लोग सिर्फ अंग्रेजी में ही बात करते हैं। गांव के हर परिवार का सदस्य गांव की सफाई में रोजाना भाग लेता है और अगर कोई ग्रामीण सफाई अभियान में भाग नहीं लेता है तो उसे घर में खाना नहीं मिलता है। मावलिन्नांग गांव मातृसत्तात्मक है, जिस कारण यहां की औरतों को ज्यादा अधिकार प्राप्त हैं और गांव को स्वच्छ रखने में वो अपने अधिकारों का बखूबी प्रयोग करती हैं। मावलिन्नांग के लोगों को कंकरीट के मकान की जगह बांस के बने मकान ज्यादा पसंद हैं। अपनी स्वच्छता के लिए मशहूर मावलिन्नांग को देखने के लिए हर साल पर्यटक भारी तादात में आते हैं।

इस गांव में स्वच्छता की अलख 29 साल पहले एक स्कूल शिक्षक रिशोत खोंगथोरम ने जलाई थी। यह 1988 की बात है। उस दौर में करीब–करीब हर सीजन में महामारी गांव को चपेट में ले लेती थी। इससे कई बच्चों को जान से हाथ धोना पड़ता था. इससे चिंतित रिशोत ने स्वच्छता की अहमियत पहचानी और एक मिशन की तरह इस काम में जुट गए। यह गांव देश के उन हिस्सों में से है, जहां सबसे ज्यादा बारिश होती है। उसके बावजूद भरी बरसात में स्वंय सेवकों का टोला बड़े सवेरे गलियों को झाड़ने बुहारने के लिए निकल पड़ता है। दिन भर में कई बार ये प्रक्रिया दोहराई जाती है। सभी गलियों के नुक्कड़ पर बांस के बने कूड़ादान रखे हुए हैं। इसीलिए गलियों में कोई भी कागज का टुकड़ा या पेड़ से गिरा पत्ता तक दिखाई नहीं देता। वर्ष 2003 से पहले मावलिन्नांग में कोई पर्यटक नहीं आता था। वर्ष 2003 में जब गांव वालों ने अपने लिए खुद पहली सड़क बनाई, तो डिसकवर इंडिया पत्रिका का एक पत्रकार यहां आया। उसने मावलिन्नांग की स्वच्छता को सबके सामने रखा। बाद में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में मावलिन्नांग गांव का जिक्र किया। आज गांव के सभी 97 घरों में सैप्टिक टैंक हैं। सभी के लिए अनिवार्य है कि वे जैविक और अकार्बनिक कचरे को अलग–अलग रखें। जैविक कचरे को कंपोस्ट पिट में डालकर खाद बनाई जाती है जो खेतों में काम आती है। वहीं अकार्बनिक कचरे को बांस के बॉक्स में इकट्ठा किया जाता है। इसे महीने में एक बार शिलांग भेजा जाता है जहां इसको रीसाइकिल किया जाता है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस गांव का दौरा किया था और यहां स्वच्छ भारत अभियान से जुड़े कई लोगों को उन्होंने सम्मानित भी किया।

उम्न्गोत नदी

सबसे स्वच्छ गांव की तरह ही है सबसे साफ उम्न्गोत नदी ,यह भारत–बांग्लादेश सीमा के पास मेघालय के पूर्वी जयंतिया हिल्स जिले के एक छोटे लेकिन व्यस्त कस्बे दावकी के बीच से बहती है यह कस्बा राजधानी शिलांग से मात्र 95 किलोमीटर दूर है। दावकी भारत और बांग्लादेश के बीच एक व्यस्त व्यापार मार्ग की तरह कार्य करता है। हर दिन सैकड़ों ट्रक इस कस्बे से होकर गुजरते हैं। यह नदी जयंतिया की पहाड़ियों के री नार और खासी पहाड़ियों के हिमा खिरीम के बीच एक प्राकृतिक सीमा का काम करती है। इसके ऊपर है एक झूलता हुआ पुल, जो बांग्लादेश का प्रवेश द्वार है आज के समय में जब हर नदी का हाल बहुत ही ज्यादा बदतर है। हर जगह प्रदूषण के कारण पानी काला दिखने लगा है। ऐसे में हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं कि काश कोई ऐसी जगह हो जहां नदी का पानी शीशे की तरह साफ हो। लेकिन यह कल्पना आपकी उम्न्गोत नदी को देखने के बाद साकार हो जाती है। इस नदी का पानी शीशे की तरह एक दम साफ हैं, नदी की सतह आपको साफ–साफ दिखती

है। इस पर नाव की सवारी के दौरान ऐसा लगता है कि मानो वह किसी कांच के पारदर्शी टुकड़े पर तैर रही हो। इसे पहाड़ों में छिपी स्वर्ग की नदी के नाम से भी जाना जाता है। इस नदी की सफाई यहां पर रहने वाले आदिवासी पुरखों के समय से करते चले आ रहे है। जिसके कारण यह नदी विश्व प्रसिद्ध है। यह नदी 3 गावों से होकर बहती है। जिसके कारण इन 3 गांव के लोगों के ऊपर ये जिम्मेदारी है। गांव में करीब 300 से ज्यादा घर हैं। जो कि मिलकर सफाई करते हैं। यदि कोई यहां गंदगी फैलाता है तो उनके ऊपर 5000 रुपये का जुर्माना होता है। पर्यटकों की संख्या के हिसाब से महीने में एक, दो या चार दिन सामुदायिक सेवा के होते हैं। इस दिन गांव के हर घर से कम से कम एक व्यक्ति नदी की सफाई के लिए आता है। इस जगह पर सबसे ज्यादा पर्यटक नवंबर से अप्रैल तक आते है। मानसून के दिनों में यहां पर बोटिंग बंद कर दी जाती है। यहाँ आने वाले सभी पर्यटकों से कहा जाता है कि वह किसी भी तरह की गंदगी ना फैलाएं यदि वह ऐसा करते हैं तो उन पर सख्त कार्रवाई की जाती है।

यही नहीं मेघालय के अधिकांश गांवों और शहरी इलाकों में साफ सफाई को लेकर हर छोटा बड़ा अनूठे ढंग से योगदान दे रहा है। खासतौर पर पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता को लेकर विशेष सतर्कता बरती जा रही है यही वजह है कि स्वर्ग जैसे इस राज्य की आबोहवा दुनिया भर के पर्यटकों को यहां बरबस खींच लाती है।

आदिवासी संस्कृति और विरासत का समन्वय है मध्यप्रदेश का जनजातीय संग्रहालय

संजीव कुमार शर्मा
भोपाल

मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय देश की आदिवासी संस्कृति और जनजातीय जीवन और कला का अद्भुत केंद्र है । यह देश का एकमात्र जनजातीय संग्रहालय है। यहां की बनावट, साजसज्जा और संग्रह पर आदिवासी संस्कृति की छाप साफ नजर आती है। इस संग्रहालय की विविध कलादीर्घाओं के माध्यम से जनजातीय जीवन शैली को देखा और महसूस किया जा सकता है। संग्रहालय में आधा दर्जन कला दीर्घाओं के माध्यम से आदिवासी संस्कृति और विरासत के विविध रूपों की झलक पेश की गयी है।

मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स भोपाल में स्थित है, इसका लोकार्पण भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने किया था। यह संग्रहालय मध्य प्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा संचालित होता है इस संग्रहालय में मध्यप्रदेश में निवासरत जनजातीय समूहों की कला संस्कृति परंपरा और जीवन उपयोगी शिल्प चित्रों, रहन–सहन तथा रीति–रिवाजों का चित्रों मूर्तियों एवं प्रदर्शनों के माध्यम से दर्शन कराया गया है। साथ ही समय–समय पर यहां पर कई सांस्कृतिक आयोजन, कार्यशालाएं आदि आयोजित की जाती हैं जिससे कि लोगों को आदिवासी समाज की मान्यताओं, कला, संस्कृति के बारे में ज्ञान मिल सके। इस संग्रहालय को बनाने का उद्देश्य मध्यप्रदेश की जनजातियों की जीवनशैली से आमजन को परिचित कराना है। भोपाल के श्यामला हिल्स पर बना मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय का क्षेत्रफल लगभग 2 एकड़ में है। इसके निर्माण पर लगभग 35 करोड़ 20 लाख रुपये की लागत आई है।

मध्यप्रदेश को देश का हृदय स्थल कहा जाता है। इसकी सीमा पाँच राज्यों को छूती है। सांस्कृतिक रूप से यह निश्चित ही एक अनुपम वरदान है। मध्यप्रदेश में जो सांस्कृतिक वैविध्य देखने मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। राजनैतिक सीमाओं से लगभग बेखबर राज्यों के सीमान्तों में रहने वाले समुदायों के बीच परस्पर भाषा, खान–पान, रहन–सहन, गीत–नृत्यों आदि का सांस्कृतिक विनिमय अनवरत रूप से चलता रहता है। यहां पर मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजाति जैसे गोंड, भील, कोरकू, बैगा, कोल, भारिया, सहरिया सहित अन्य जनजातियों के सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिदृश्य को चित्रों प्रदर्शन एवं कलाकृतियों द्वारा अत्यंत प्रभावी ढंग से इस संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है।

मध्यप्रदेश की इस विशिष्टता को स्थापित करने तथा उसकी बहुरंगी, बहुआयामी संस्कृति को बेहतर रूप से समझने और दर्शाने का कार्य मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय की दीर्घा क्रमांक–एक ''सांस्कृतिक वैविध्य'' में किया गया है। गैलरी के स्वरूप को इस तरह से विकसित किया गया है कि आने वाले दर्शक के मन में मध्यप्रदेश की वटवृक्षीय सांस्कृतिक उपस्थिति स्वतः स्फूर्त रूप से छा जाये। जैसे वटवृक्ष की शाखाएं व जड़ें दूर–दूर तक फैलती जाती हैं और किसी निर्धारित सीमाओं में बँधकर नहीं रहती, ठीक ऐसे ही स्वरूप में मध्यप्रदेश की विभिन्न जनजातियों की संस्कृति को रूपायित किया गया है। दीर्घा के समूचे मध्य भाग में मध्यप्रदेश के मानचित्र का कुछ ऐसा आभास खड़ा किया गया है, जिसमें उसकी भौगोलिक पहचान, पहाड़–पठार, जंगल तथा जीवनदायिनी नर्मदा के बहाव के सर्पिलाकार पथ का संस्पर्श मिलता है।

इस मानचित्र अथवा टीले के मध्य से एक विशाल वट–वृक्ष निर्मित किया गया है। वट–वृक्ष प्रदेश का राजकीय वृक्ष और प्रतीक भी है। यहाँ प्रदर्शित वट–वृक्ष की शाखायें ऊपर आकाश तथा चारों ओर लगे हुए राज्यों की जनजातीय संस्कृतियों तक फैली हैं, तो जड़ें पृथ्वी की गहराइयों तक। दीर्घा में नीचे मध्य में बने मानचित्र पर मध्यप्रदेश में रहने

वाली सभी प्रमुख जनजातियों की भौगोलिक उपस्थिति को सांकेतिक रूप से उनके महत्त्वपूर्ण प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है। दीर्घा की विशालता और ऊँची छत नवाचार करने को प्रेरित करती है तथा इसकी गुंजाईश भी बनाती है। नीचे दीवारों से लगी हुई जगहों पर प्रदेश तथा सीमांचल राज्यों के जनजातीय जीवन और संस्कृति को दर्शाते विविध शिल्प हैं, जो दोनों के बीच के फर्क और समानताओं को एकसाथ देखने–समझने का अवसर प्रदान करते हैं।

दीर्घा एक से दो में प्रवेश करने के लिए जिस गलियारे से गुजर कर जाना होता है, वहाँ एक विशालकाय अनाज रखने की कोठी बनाई गई है। अनाज रखने की यह गोंड कोठी घर के भीतर आड़ (पार्टीशन) निर्मित करने, अनाज को सुरक्षित रखने, इस पर बने आलों में घर की अन्य छुटपुट वस्तुएँ रखने के लिए उपयोगी है। इसकी भित्तियों पर मण्डला क्षेत्र के कलाकारों ने चहुँओर मिट्टी और रंग से चित्रकारी की है, जिसमें अनाज के पैदा होने और उसे सुरक्षित रखने के लिये गोंड स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले उपायों का जिक्र स्पष्ट दिखाई देता है। यह तो स्पष्ट ही है कि दीर्घा के सीमित दायरे में मध्यप्रदेश की समस्त जनजातियों के आवास प्रकारों को यथावत न दिखाया जा सकता है न ही इस संग्रहालय के संदर्भ में यह वांछनीय है। यहाँ इन सभी समुदायों के आवास की वास्तुगत, शिल्पगत, व्यवहारगत और वस्तुगत (उपयुक्त सामग्री) विशेषताओं की ओर इशारा भर करने की कोशिश की गयी है।

इन आदिवासी समुदायों के आवास अथवा घर की संरचना में मुक्ताकाश आँगन का महत्त्व, आँगन में पेड़ का महत्त्व, घर के प्रांगण में मवेशी की घर के सदस्यों जैसी उपस्थिति के विचार को भी भाँति–भाँति से प्रदर्शित किया गया है। दरअसल यह दीर्घा स्वयं एक आँगन है, जिससें प्रदेश के विभिन्न आदिवासी समुदायों के घर एक दूसरे से सटे, एक दूसरे में झाँकते हुए, एक दूसरे का पड़ोस निर्मित कर रहे हैं। किसी एक समुदाय के एक दरवाजे से घुस कर आप कभी खुद को किसी अन्य घर में निकलता पायेंगे, तो कभी बैगा मोहल्ले की गली आपको सीधे किसी निर्जन टेकरी पर बने भील घर तक ले जाने का वादा करेगी।

जीवन शैली दर्शाती दीर्घा दो से कलाबोध सम्मत तीसरी दीर्घा में प्रवेश करने वाले गलियारे की खिड़कियों में काँच की दो सतहों के बीच आदिवासी गहने साज–सिंगार के अन्य उपादान जड़े हैं। यह एक तरह की गहनों और श्रंगार मूलक वस्तुओं से निर्मित जाली है। इस गलियारे में लकड़ी तथा टेराकोटा में निर्मित मानव आकृतियाँ भी हैं। कलाभिव्यक्ति का संभवतः पहला कैनवास मानव देह ही रही हो, लिहाजा, कलाबोध दीर्घा में प्रवेश देह के श्रंगार के विविध उपायों को दर्शाने से करना युक्तियुक्त जान पड़ता है। कलाबोध दीर्घा में जीवन चक्र से जुड़े संस्कारों तथा ऋतु चक्र से जुड़े गीत–पर्वों–मिथकों, अनुष्ठानों को समेटने का प्रयास किया गया है। दीर्घा के एक द्वार पर भील मृतात्माओं से जुड़े अनुष्ठान मृत्यु तथा मृतकलोक की परिकल्पना से जुड़ी टेराकोटा की आकृतियाँ लगाई गई हैं। यह आकृतियाँ (ढाबे) मृतात्माओं को समर्पित की जाती हैं, एक तरह से ये उनका अल्पकालिक बसेरा है। इन टेराकोटा वस्तुओं को स्थान विशेष पर जमीन पर स्थापित किया जाता है, किन्तु यहाँ उन्हें बिल्कुल अलग आयाम में लगाने का कारण दर्शक को उसके पीछे की मूल अवधारणा से एक अलग कोण से जुड़ने का अवसर प्रदान करना है। दीर्घा में विवाह के अतिरिक्त शिशु जन्म तथा मृत्यु संस्कार को भी उसकी समग्रता में दिखाया गया है। यहां इनसे जुड़ी कथाओं, मान्यताओं, रीति–रिवाजों, भौतिक वस्तुओं आदि से उस क्रिया के समस्त पक्षों को देखा–समझा जा सकता है।

कलाबोध से देवलोक नामक दीर्घा में ले जाने वाले गलियारे में एक कंटीले वृक्ष का रचाव है। काँटे पीड़ा की अनुभूति कराते हैं और पीड़ा को सहने, उससे अविचलित रहने की शक्ति उस देवलोक से प्राप्त होती है, जिसकी ओर यह कंटीला, शूलशोभित गलियारा ले जा रहा है। इस गलियारे को टिमटिमाते तारों और अज्ञात नक्षत्रों से भरे आकाश की तरह भी देखा जा सकता है।

देवलोक की किसी आधुनिक इमारत की दीर्घा में संकल्पना एक टेढ़ी खीर है। फिर वह भी एक ऐसे देवलोक की जिसने प्रायः किसी ठोस देवालय में घुसने तक से परहेज किया है। वह जिसकी धुँधली झलक कभी निर्जन दो राहों के किनारे, तो कभी घोर जंगल के बीच, कभी छोटे से तालाब की पाल पर, कभी खेत की मेड़ पर, तो कभी गाँव की अदृश्य सीमाओं पर एक छोटे से चबूतरे, अनगढ़ पत्थर, पेड़ पर फरफराती पताका, कोई डाँड, कोई खाम, त्रिशूल, दीपक या

टेराकोटा के चढ़ावे के रूप में दिखती है, जिसमें देवता (आकृति) स्वयं सिरे से नदारद है, उसे किसी दीर्घा में किस उपाय से अवतरित किया जाए?

लिहाजा देवलोक–दीर्घा में जंगल, पहाड़, नदी, तालाब की अच्छी–बुरी तमाम आत्माओं का आहवान किया गया है। वे उपदान, वे प्रतीक जिनका जिक्र ऊपर किया गया, मसलन पेड़ के नीचे चबूतरे, चढ़ावे स्परूप टेराकोटा, त्रिशूल, दीपक, कोरकू समुदाय का मेघनाथ खम्भ, गोंड़ो की सरग नसेनी, भीलों की गल, टटल देव का स्थान, बैगाओं की देव गुड़ी आदि हैं। पुरखे, भटकती प्रेतात्माएँ, भूत–पिशाच, असंख्य रक्षक देवता, कोई बीज को बचा रहा है, कोई भटक गये मवेशी को घर वापस ला रहा है, कोई टूटे हाथ पैर जोड़ देगा, तो कोई गाँव में फैली बीमारी से निजात दिलायेगा। स्पष्ट ही है कि यह देखने से अधिक अनुभूत करने का संसार है और इसे अनुभूत या महसूस करने के लिये उस स्पंदित परिवेश को निर्मित करना अधिक आवश्यक है, जिसमें फिर एक अकिंचन पत्थर, एक चबूतरा, देवता को भेंट चढ़ाई गई आकृतियाँ सब सजीव हो साँस लेने लगेंगी। इस दीर्घा में बस्तर के लिंगो देव की गुड़ी, माड़िया खाम आदि भी प्रदर्शित किये जा रहे हैं।

चंद्रयान –2

एम. जया सिंह
चेन्नैई

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अब इसे आधिकारिक रूप से घोषित कर दिया है। इसरो भारत के अति महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष विज्ञान मिशन, चंद्रयान –2 को इस साल जुलाई में लॉन्च करेगा हो सकता है जब यह लेख आपके समक्ष आए तब तक यह लान्च भी हो गया हो। इसे देश के सबसे शक्तिशाली बूस्टर जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल GSLV–Mark–3 से चेन्नई से 90 किमी उत्तर में स्थित, श्रीहरिकोटा राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रक्षेपण स्थल से चांद पर पहुंचने के लिए छोड़ा जाएगा। इसकी प्रक्षेपण अवधि 09 से 16 जुलाई के बीच है, ताकि अंतरिक्ष यान में स्थित रोवर 06 सितंबर तक चंद्रमा की सतह पर उतर सके।

चंद्रमा की धरती पर चंद्रयान –2 के लैंडर की सफल सॉफ्ट–लैंडिंग भारत को राष्ट्रों की चुनिंदा लीग में शामिल कर देगी। अमेरिका, रूस और चीन केवल तीन अन्य देश हैं जिन्होंने अब तक चंद्रमा पर धीरे–धीरे उतरने (सॉफ्ट –लैंडिंग) के लिए अपना प्रोब बनाया है।

14 नवंबर 2008 को चंद्रमा की सतह पर लूनर इम्पैक्ट प्रोब पर चंद्रयान –1 क्रैश–लैंडिंग के साथ भारत ने पहले से ही चंद्रमा की धरती पर अपनी छाप छोड़ी है। हालांकि, इसके सहोदर चंद्रयान –2 के मिशन उद्देश्य अधिक महत्वाकांक्षी हैं। इसके तीन मॉड्यूल होंगे, यानी ऑर्बिटर जो इसकी सतह से 100 किमी ऊपर चंद्रमा के चारों ओर घूमेगा, विक्रम नामक लैंडर और प्रज्ञान नामक रोवर है। रोवर को ऑर्बिटर में लैंडर के भीतर रखा जाएगा।

चंद्रयान –2 में चंद्रमा और उसके वातावरण का अध्ययन करने के लिए 14 भारतीय उपकरण हैं। इन उपकरणों में ऑर्बिटर पर 8, लैंडर पर 4 और रोवर पर 2 शामिल हैं। हालांकि रॉकेट GSLV–Mark–3 का लिफ्ट–ऑफ द्रव्यमान 3.877 टन होगा, लेकिन लैंडर और

रोवर सहित ऑर्बिटर का द्रव्यमान 2379 किलोग्राम होगा।

प्रारंभ में, रॉकेट बूस्टर चंद्रयान –2 को पृथ्वी–केंद्रित कक्षा में रखेगा। बाद में, अंतरिक्ष यान के भीतर 'कक्षीय प्रणोदन' सुविधा का उपयोग करते हुए, इसे चंद्रमा की कक्षा में ले जाया जाएगा। इसे पृथ्वी की कक्षा से निकलने और चंद्रमा की कक्षा तक पहुंचने में मैनुवरिंग (संचालित) करने में दो महीने से अधिक का समय लगेगा।

जब चंद्रयान –2 चंद्रमा की सतह से लगभग 100 किलोमीटर की ऊंचाई पर आ जाएगा, तब लैंडर विक्रम खुद को ऑर्बिटर से बाहर निकालने के लिए तैयार करेगा। जब स्थिति अनुकूल हो जाएंगी, तो वह ऑर्बिटर छोड़ देगा और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के करीब एक स्थान पर सॉफ्ट–लैंडिंग करेगा। सॉफ्ट–लैंडिंग और व्यवस्थित होने के बाद, छह पहियों वाला रोवर प्रज्ञान लैंडर के सुरक्षात्मक आवरण से धीरे–धीरे बाहर निकलेगा और चंद्र सतह पर चलने लगेगा। रोवर को सौर पैनलों द्वारा संचालित किया जाएगा। यह विभिन्न प्रेक्षणों को पूरा करने के अलावा भूवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए चंद्रमा की मिट्टी के नमूने लेगा।

चंद्रयान –2 मिशन की एक खासियत यह है कि यह पूरी तरह से स्वदेशी है। ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर सभी भारत में बने हैं।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी, इसरो द्वारा चंद्रमा पर सॉफ्ट–लैंडिंग के लिए तय स्थान की प्रकृति अद्वितीय है।

यह एक अपरिचित क्षेत्र है। यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के करीब है, जहां अब तक किसी भी प्रोब ने साइट पर कोई भी प्रयोग नहीं किया है। यह दो क्रेटरों के बीच एक उच्च स्थान पर स्थित है जिसे मंजिनस–C और सिंपेलियस–N के रूप में जाना जाता है। यह चंद्रमा पर संभावित पानी के अणुओं की प्रकृति के बारे में अध्ययन करने के लिए आदर्श स्थान माना जाता है। यदि यह आदर्श स्थान साबित होता है, तो वहां भविष्य में मानवयुक्त प्रयोगशालाएं स्थापित की जा सकती हैं।

रोवर और लैंडर पर लगे छोटे उपकरणों द्वारा एकत्र किए गए महत्वपूर्ण डेटा को शुरू में चंद्रमा का चक्कर लगा रहे चंद्रयान –2 के ऑर्बिटर में रिले किया जाएगा। ऑर्बिटर इसरो के भू–केन्द्रों को ये डेटा भेजेगा, जिनका अध्ययन वैज्ञानिक समुदाय द्वारा किया जाएगा। यह उल्लेखनीय है कि 2008 में भेजे गए चंद्रयान –1 ने चंद्रमा की मिट्टी पर पानी के अणुओं की उपस्थिति को साबित कर दिया था। वैज्ञानिकों को आशा है कि चंद्रमा की कई अन्य अनसुलझी पहेलियों को भी चंद्रयान –2 सुलझा पायेगा।

प्रस्तुति एवं अनुवाद
ललिता जोशी

गज़ल

नवीन कुमार

बेबसी

फ़ज़ल–ए–खुदा के दायरे में कभी ना पाया खुद को,
रंगीन मिजाज़ इस भीड़ में भी तन्हा पाया खुद को !

यूं तो कहने को महज एक हमसफर काफी था ज़िन्दगी बिताने के वास्ते, उस बेरहम की मोहब्बत से महरूम पाया खुद को !

फज़ल–ए–खुदा के .....

ज़ख्म ऐसे दिए वक्त ने बेवक्त मुझको कि दिल की आह कहीं जज़्ब होती नहीं.

तड़पती धडकनें भी नर्म बिस्तर पर अब चैन से सोती नही!

कोशिशें हजार की खुद को संभालने की हमने,

शाम–ए–सुकून में भी तड़पता पाया खुद को !

फज़ल– ए–खुदा के .....

सुना है दिल के रोने पर लम्हे गमगीन हो जाते है, अश्कों के सैलाब में डूबकर अरमान खाक हो जाते है.

ख्वाब जो पलकों पे सजाए थे मेरी उसने, उसी ख्वाबों की दुनिया में जलता पाया खुद को !

फज़ल– ए–खुदा के .....

होश में आना बाकी था अभी ज़िल्लत की जिन्दगी के लिए, मरहम–ए–इश्क काफी ना था ज़ख्म–ए–बेरुखी के लिए !

ज़र्रे – ज़र्रे की ठोकरें सहता चलता रहा यूं तो मैं, ज़माने की रुसवाइयों से हर कदम लड़ता पाया खुद को.

फज़ल– ए–खुदा के दायरे में कभी ना पाया खुद को,

रंगीन मिजाज़ इस भीड़ में भी तन्हा पाया खुद को!

प्रयागराज कुम्भ:आस्था और विश्वास का संगम

संजीव कुमार शर्मा
भोपाल

कुंभ है तो श्रद्धालु हैं और श्रद्धालुओं की संख्या लाख–पचास हजार नहीं और ना ही दस लाख.. करोड़ों में गिनती पहुंचती है। हम–आप गिनते गए और यह संख्या बढ़ती गयी... हमारी–आपकी कल्पना से परे, प्रशासन की गणना से बहुत आगे एवं बीते कुंभ आयोजनों से अलहदा।..और जब 49 दिन का सफर पूरा हुआ तो यह संख्या बढकर 24 करोड़ हो गयी....। चौबीस करोड़ का मतलब है दुनिया के तकरीबन सवा दो सौ देशों में आधे से ज्यादा देशों की जनसंख्या से ज्यादा। स्विट्जरलैंड और सिंगापुर जैसे देशों से तीन गुना तथा श्रीलंका, सीरिया, रोमानिया, क्यूबा, स्वीडन और बेल्जियम जैसे देशों की जनसंख्या से कहीं ज्यादा। मकर संक्रांति से लेकर महाशिवरात्रि के बीच करोड़ों की इस संख्या का प्रबंधन वाकई किसी चमत्कार से कम नहीं है। मैं आमतौर पर 'महा' विशेषण से परहेज करता हूं लेकिन मैंने अपनी आंखों से अर्द्धकुंभ को महाकुंभ में बदलते देखा....दिव्य–भव्य महाकुंभ और वह भी सबसे सुरक्षित और सबसे स्वच्छ।

महाकुंभ में जुटी भीड़ के लिए कोई शब्द तलाशा जाए तो 'जनसैलाब' शब्द भी प्रयागराज में उमड़ी भीड़ के सामने लाचार लगा। यदि इससे भी बड़ा कोई शब्द इस्तेमाल किया जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। चारों ओर बस सिर ही सिर नजर आते थे। सभी ओर बस जनसमूह था– प्रयाग आने वाली सभी ट्रेनों में,प्लेटफार्म पर, स्टेशन से आने वाली सड़क पर, बसों में,कार से,पैदल, बस सिर ही सिर, पोटली लेकर चलते, बैग लादे, बच्चे संवारते, संगम की ओर बढ़ते, गंगा की तेज धार से, निर्मल–आस्थावान–सच्चे और सरल लोग। ऐसा लगता था जैसे प्रयाग की सारी सड़कें एक ही दिशा में मोड़ दी गयी हों। बूढ़े, बच्चे, महिलाएं और मोबाइल कैमरों से लैस नयी पीढ़ी, परिवार के परिवार। पूरा देश उमड़ आया था वह भी बिना किसी दबाव या लालच के, अपने आप, स्व–प्रेरणा से... और देश ही क्या विदेशी भी कहां पीछे थे। मैंने तो आज तक अपने जीवन में कभी किसी मेले में इतनी भीड़ नहीं देखी। इस कुंभ का आकर्षण इतना जबरदस्त था कि दुनिया भर से 8 से 10 लाख विदेशी सैलानी भी खिंचे चले आए। इसमें लगभग सवा लाख तो सिर्फ अमेरिका और एक लाख आस्ट्रेलिया से थे।

आमतौर पर कुंभ में स्नान के खास दिनों जैसे मकर संक्रांति, पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या, वसंत पंचमी, माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि पर ही भीड़ देखी जाती थी लेकिन ऐसा पहली बार हुआ कि आम दिनों में भी श्रद्धालुओं की भीड़ खास दिनों की तरह बनी रही। पहली बार किसी कुंभ ने तीन विश्व रिकार्ड अपने नाम दर्ज किये और स्वच्छता और सफाई, ट्रैफिक योजना और भीड़ प्रबंधन सहित तीन क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपना नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज करवा लिया।

महाकुंभ तो था ही यह क्योंकि इसका दायरा पिछले कुंभ के 1600 हेक्टेयर की तुलना में दोगुना यानी 3200 हेक्टेयर से अधिक था। कुंभ 20 क्षेत्रों में विभाजित तो 40 से ज्यादा स्नान घाट 8 किमी. के दायरे में फैले थे। विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने और तीर्थयात्रियों को संगम तक पहुंचने के लिए गंगा नदी पर 20 पोंटून पुल अर्थात नाव के अस्थायी पुल बनाए गए थे।

केन्द्र और राज्य सरकारों ने कुल मिलाकर महाकुंभ के आयोजन पर 7 हजार करोड़ रुपये खर्च किये थे। वैसे तो यह आंकड़ा भी कुंभ को महाकुंभ बनाने की कहानी बयान कर देता है क्योंकि 2013 में पिछले कुंभ पर करीबन 13 सौ करोड़ रुपये खर्च हुए थे। प्रयागराज कुंभ वास्तव में इसलिए भी महाकुंभ था क्योंकि इसने 6 लाख से ज्यादा लोगों को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार दिया। भारतीय उद्योग

परिसंघ के अध्ययन के मुताबिक प्रयाग कुंभ से उत्तरप्रदेश को लगभग 1.2 लाख करोड़ का राजस्व मिला जो उत्तरप्रदेश के सालाना बजट 4.28 लाख करोड़ का एक चौथाई है। सबसे ज्यादा कमाई होटल, खानपान, टूर ऑपरेटर और परिवहन के क्षेत्रों में हुई है।

कुंभ के वैभव की चर्चा तो क्रमशः चलती ही रहेगी लेकिन यदि बात स्वाद के साथ हो तो यात्रा और स्वादिष्ट हो जाती है। चलिए आरंभ करते हैं.. रबड़ी की लजीज खुशबू से महकती सड़क, बड़े से कड़ाहे में गुलाबी रंगत में ढ़लता दूध, बड़े से चम्मच भर मलाई और प्यार से पुकारते–मनुहार करते लोग..आखिर आप कैसे अपने आपको रोक सकते हैं !..और रोकना भी नहीं चाहिए क्योंकि कुंभ में हजारों लोगों की भीड़ के बीच इतना सब मिलना वाकई अद्भुत सा लगता है।

यदि आप गरमागरम मलाईदार दूध के शौकीन हैं तो आप को एक बार प्रयागराज जरूर जाना चाहिए और वह भी कुंभ के दौरान। स्टेशन के पास तीन दुकानों पर मिलने वाले रबड़ी–दूध का स्वाद यहां जमा भीड़ को देखते ही और भी बढ़ जाता है। सुबह से दूध मिलने का यह सिलसिला देर रात तक और शाही स्नान के दिनों में तो सुबह चार बजने तक चलता दिखा पर न तो पिलाने वालों के चेहरे पर कोई थकावट दिखी और न पीने वालों की संख्या कम हुई.. आखिर स्वाद और आग्रह का मामला था। दूध के तलबगारों की गिनती करनी हो तो हमारे लिए इतना ही जानना काफी है कि एक दुकानदार ही एक दिन में दो–तीन क्विंटल (!)..जी हां, तीन सौ किलो तक दूध रोजाना बेच रहा था और दाम भी 'पाकेट फ्रेंडली'। मसलन 50 रुपये में आपके सामने बन रही कुल्हड़ भर ताजी रबड़ी खा लीजिए या फिर इतने ही पैसे में रबड़ी और दूध दोनों का मजा ले सकते हैं.... और यदि रबड़ी से परहेज है तो 30 रुपये में मलाई से लबालब गिलास भर दूध पी सकते हैं और गिलास भी इतना बड़ा की, एक गिलास में ही पेट भर जाए। बताया जाता है कि इलाहाबाद रेलवे स्टेशन के पास स्थित दूध की इन खास दुकानों की शुरुआत देश की आजादी के आसपास ही हुई थी। लगभग सात दशक से वे सतत रूप से इस व्यवसाय में हैं। फर्क यह आया है कि समय के साथ एक से दुकानों की संख्या तीन हो गयी है पर गुणवत्ता, स्वाद और आग्रह वैसा ही है....तो अब जब भी प्रयागराज जाएं एक बार मलाई मार के रबड़ी वाला दूध जरूर पीएं.. आखिर जीभ का मामला है।

अब आप कुंभ में आवागमन पर एक नजर डालें तो लगेगा कि एकबारगी पूरी दुनिया यहां सिमट कर आ गई है.. बसों की ट्रेन (?)...जी हां बसों की ट्रेन और वह भी इतनी लम्बी कि देखते देखते आंखें थक जाएं पर इस ट्रेन का ओर–छोर भी न मिल पाए। दरअसल प्रयागराज कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं को निःशुल्क लाने ले जाने के लिए प्रशासन ने शटल सर्विस के नाम से तकरीबन 500 बसें चलायी हैं।

अब इन्हीं बसों ने गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज करवा लिया है...और हो भी क्यों न। जब इन बसों को एक लाइन में खड़ा किया गया तो लगभग 9 किलोमीटर लम्बी ट्रेन बन गयी। सोचिए, जब बसों की ये 9 किलोमीटर लम्बी ट्रेन चली होगी तो क्या दृश्य होगा? एक रंग और समान आकार–प्रकार की इतनी बसों का एक साथ–एक लाइन में लगे देखना रोमांचक अनुभव ही नहीं, एक किस्म का रिकार्ड भी है। उत्तरप्रदेश रोडवेज की कुंभ पर्यटन में चलाई गयी इन 500 शटल बसों का एक साथ, एक रूट पर आकर्षक मार्च कानपुर हाइवे पर सहसो बाईपास से नवाबगंज तक फैला हुआ था और इस बस ट्रेन ने करीब 3 से 4 किलोमीटर का सफर तय किया। इस तरह बस–ट्रेन में शामिल सभी बसों ने लगभग 12 किलोमीटर की दूरी तय कर रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराया।

वैसे यह तो हुई रिकार्ड की बात, लेकिन इन बसों ने कुंभ के अब तक के 40 दिनों से ज्यादा के आयोजन में लाखों लोगों को संगम तक पहुंचाकर और फिर गंगा मैय्या के दर्शन कराकर वापस सुरक्षित उनके गंतव्य तक छोडकर उनके दिलों में अपनी अनूठी छाप छोड़ी है इसलिए दिव्य कुंभ–भव्य कुंभ के साथ 9 किलोमीटर की बस ट्रेन का यह रिकार्ड गिनीज बुक में तो दर्ज होना ही था।

कुंभ की चर्चा हो और उसमें हिन्दी सिनेमा का उल्लेख छूट जाए तो कुछ अधूरा सा लगता है। बचपन से अब तक सुनते आए हैं किस्से कहानियों में कि कुंभ में भाई बिछुड़ जाते हैं। और फिर कई सालों को समेटने वाली कहानी के बाद फिल्म के अंत में उनका मिलन हो जाता है। किसी जमाने में यह संभव भी होता रहा होगा और तभी फिल्मों में ऐसी घटनाओं को शामिल किया जाता रहा है लेकिन अब समय और सुविधाओं ने ऐसी घटनाओं को किस्से–कहानी तक ही छोड़ दिया है। यहां किसी के बिछुड़ने के साथ ही उसे उसके परिवार से मिलाने की कोशिशें शुरू हो जाती है और चंद घंटों/दिनों में वह अपने परिवार तक पहुंच ही जाता है। इस काम में सबसे अहम भूमिका निभाते हैं– 'भूले–भटके शिविर' या 'गुमशुदा तलाश केंद्र'। प्रयागराज कुंभ के दौरान मैंने स्वयं ऐसे शिविरों की प्रभावी भूमिका देखी जिन्होंने कुंभ के दौरान हजारों पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को तत्काल ही उनके परिवार तक पहुंचा दिया।

गैर सरकारी संगठन भारत सेवा दल द्वारा प्रयागराज के त्रिवेणी मार्ग पर संचालित शिविर कुंभ के सबसे पुराने भूले–भटके शिविरों में से एक है और सबसे लोकप्रिय भी। भारत सेवा दल प्रयागराज में महाकुंभ, अर्द्ध कुंभ और वार्षिक माघ मेले के दौरान हर साल यह शिविर लगाता है। शिविर प्रभारी उमेश चंद्र तिवारी ने बताया कि इस साल कुंभ के दौरान 50 बच्चों सहित लगभग 50 हजार से अधिक लोग खो गए थे लेकिन हमारी टीम ने उन्हें उनके परिवार के पास थोड़े अंतराल में पहुंचा दिया। इस शिविर की शुरुआत 1946 में उमेश चंद्र तिवारी के पिता पंडित स्वर्गीय राजाराम तिवारी ने की थी। प्रतापगढ़ जिले के रानीगंज के मूल निवासी राजाराम तिवारी ने त्रिवेणी संगम में आने वाले खोए हुए श्रद्धालुओं को निःस्वार्थ भाव से मिलाने के काम को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

पिछले सात दशकों से यह शिविर प्रयागराज के प्रत्येक मेले की नियमित पहचान और अविभाज्य अंग बन गया है। जब कोई भी मेला क्षेत्र में खो जाता है, तो उनके परिजन सबसे पहले इस 'भूले–भटके शिविर' में आते हैं और यहां के स्वयंसेवकों को गुमशुदा व्यक्ति का विवरण देते हैं। इस विवरण को पब्लिक एड्रेस सिस्टम या मेले में लगे लाउडस्पीकरों के जरिये पूरे मेला क्षेत्र में प्रसारित किया जाता है। घोषणा सुनने के बाद, अधिकांश लोग शिविर तक आ जाते हैं और फिर यहां उनके परिजन मिल जाते हैं। इसके अलावा, शिविर के स्वयंसेवक भी मेले में घूम–घूमकर ऐसे व्यक्ति की तलाश करते हैं। शिविर में ऐसे व्यक्तियों के लिए सांत्वना के साथ–साथ आवास और भोजन की व्यवस्था भी होती है। उन्हें शिविर में तब तक रखा जाता है जब तक वे अपने परिवार से नहीं मिल जाते और यदि परिवार मेले से चला जाता है, तो उन्हें उनके घरों तक वापस भेजने के लिए हरसंभव आर्थिक मदद भी दी जाती है। उमेश तिवारी ने बताया कि उनके पिता ने 70 वर्षों तक मानवता की सेवा की और लगभग बारह लाख पचास हजार पुरुष–महिलाओं और पैंसठ हजार बच्चों को उनके परिवार से मिलाने का बड़ा काम किया। राजाराम तिवारी की चौथी पीढ़ी अब उसी जोश, उत्साह और सक्रियता के साथ कुंभ में भूले–भटके हुए लोगों को उनके परिजनों से मिलाने में जुटी है।

इसी उद्देश्य के साथ एक अन्य शिविर भी प्रयागराज कुंभ में नजर आता है। इस शिविर का नाम 'भूली भटकी महिलाओं और बच्चों का शिविर' है। शिविर का संचालन हेमवती नंदन बहुगुणा स्मृति समिति कर रही है। 1954 से संचालित इस शिविर की खासियत है कि यह न केवल महिलाओं और बच्चों के लिए काम करता है बल्कि सिर्फ अर्द्ध कुंभ और कुंभ के दौरान ही काम करता है। प्रयागराज कुंभ के दौरान इस शिविर को 36 हजार से अधिक महिलाओं और बच्चों के लापता होने या अलग होने की सूचना मिली और शिविर के माध्यम से एक–दो महिला–बच्चों को छोड़कर अधिकांश अपने परिवार के सदस्यों के साथ फिर से मिल गए।

गैर सरकारी संगठनों द्वारा चलाए जा रहे इन शिविरों के अलावा स्थानीय पुलिस ने भी कुंभ मेले में 15 डिजिटल 'खोया पाया केन्द्र' स्थापित किए हैं। जहां 34 हजार से अधिक लोगों के लापता होने की सूचना अब तक मिली।

अधिकांश लोग पुलिस की मदद से अपने परिवारों के साथ फिर से जुड़ गए। यहां तक कि पुलिस ने वृद्धों को उनके घरों तक भेजने के लिए उनके साथ अपनी टीम तक को भेजा।

मानवीय नजरिये से देखें तो इन शिविरों में अमूमन दो तरह के दृश्य देखने को मिलते हैं। पहले दृश्य में, व्यक्ति

अपने परिजनों को तलाशते रोते–बिलखते और परेशान हालत में इन शिविरों में आता है, जबकि दूसरे दृश्य में जब वही व्यक्ति अपने परिजनों से मिलता है तो फिर फूट–फूटकर रोता है लेकिन इस बार आंसू खुशी के,अपनों से मिलने के होते हैं और बस इसी आनंद के लिए ये तमाम शिविर सालों–साल बिना किसी आर्थिक लालच के निःस्वार्थ भाव से सेवा करते आ रहे हैं।

प्रयागराज कुंभ में रिकार्ड बनाने के कई दौर रहे। आमतौर पर घरों के दरवाजे पर हाथ की छाप या हल्दी लगे हाथों की छाप शुभ मानी जाती है। लेकिन हाथों की यह छाप हमें गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में भी स्थान दिला सकती है, यह किसी ने सोचना तो दूर कल्पना भी नहीं की होगी। प्रयागराज में चल रहा कुंभ अपनी दिव्यता और भव्यता के साथ कई अनूठे रिकार्ड भी गढ़ रहा है। 9 किलोमीटर लम्बी बस ट्रेन बनाकर रिकार्ड कायम करने के बाद कुंभ प्रशासन ने अब हाथों की छाप से विश्व रिकार्ड बनाया है।

प्रयागराज मेला प्राधिकरण की एक अनोखी पहल चित्रकारी की भी थी। यहां की गई चित्रकारी को विश्व पटल पर प्रदर्शित करने के लिए प्रयाग के गंगा पंडाल में एक हस्तलिपि चित्रकारी कार्यक्रम आयोजित किया। यहां एक विशाल कैनवास (पेंटिंग वाल) लगाया गया। इस कैनवास पर सुबह 10 बजे से लेकर शाम 6 बजे तक सुरक्षा कर्मियों, विभिन्न स्कूलों के छात्र–छात्राओं तथा अनेक संस्थाओं के वालिंयटर्स ने अलग–अलग रंगों में अपने हाथों की छाप लगाई। इस हस्तलिपि चित्रकारी में समाज के हर वर्ग ने बढ़–चढकर भाग लिया, जिसमें मुख्य रूप से विदेशी पर्यटक, सुरक्षा बलों के जवान, स्वच्छाग्रही, आमजन, छोटे बच्चे तथा वृद्धजन सहित समाज के 7664 लोगों ने बड़े उत्साह के साथ अपने हाथों की छाप पेंटिग वाल पर लगाई और नया विश्व रिकार्ड कायम किया। इसके पहले यह रिकॉर्ड सियोल के नाम था और वहां 4675 लोगों ने अपने हाथों की छाप लगाकर यह रिकॉर्ड बनाया था परंतु प्रयागराज में 1 मार्च 2019 को लगभग दो गुनी संख्या में लोगों ने सियोल का यह रिकार्ड प्रयागराज के नाम कर दिखाया। खास बात यह है कि कुंभ में हाथों की छाप से 'जय गंगे' लिखकर गंगा के निर्मल प्रवाह को दर्शाया गया।

दरअसल प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने मेला शुरू होने से पहले 'पेंट माई सिटी' अभियान चलाकर शहर की दीवारों को कुंभ के अनुरूप रंगने की अपील आम लोगों से की थी। इसके परिणामस्वरूप देश भर से आये चित्रकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए शहर की दीवारों को अपनी चित्रकारी से आकर्षक रूप से सजा दिया है। कुंभ में आने वाले श्रद्धालु एवं पर्यटक भी इसकी भरपूर सराहना कर रहे हैं। इस अभियान में शहर भर में लगभग 20 लाख स्क्वायर फुट दीवारों पर चित्रकारी की गयी जो अपने आप में एक रिकार्ड है। इस तरह की चित्रकारी से प्रयाग की संस्कृति, यहां की विरासत और आध्यात्मिकता को भी नयी पहचान मिली।

कुंभ प्रवास हो और महामंडलेश्वर से मुलाकात ना हो तो ऐसा लगेगा कि कुंभ यात्रा कहीं अधूरी रह गई लेकिन सौभाग्य से यह जस भी हमारे हाथों लगा। प्रथम गेट से लेकर मुख्य पंडाल तक श्रद्धालुओं की भीड़ लगी है, कुछ बाहुबली लोग भीड़ को संभालने में जुटे हैं। मुख्य पंडाल भी खचाखच भरा है– नेता, अभिनेता,मीडिया और साधु–संतों सहित तमाम लोगों को महामंडलेश्वर का इंतजार है। किसी तरह जुगाड़ लगाकर अंदर तक पहुंचकर हमने भी पूछा तो बताया गया कि महामंडलेश्वर तैयार हो रहे हैं तथा अभी उन्हें डेढ़ घंटा और लगेगा...यह सुनकर हमारा चौंकना लाजिमी था। आखिर किसी संत को तैयार होने में इतना समय कैसे लग सकता है? लेकिन जब बात किन्नर अखाड़े के श्री अनंत विभूषित आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी लक्ष्मी नारायण जी त्रिपाठी (जैसा उनके भक्त कहते हैं) की हो तो फिर इतना समय तो लगना वाजिब है।

ऐसा भी नहीं है कि महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी (वहीं जिन्हें अब तक हम सभी लक्ष्मी के नाम से पहचानते थे) पंडाल में उतावले लोगों से अनजान हैं। वे अंदर से ही हस्तक्षेप कर लोगों को अनावश्यक चर्चा से बचने की सलाह देती हैं। बीच–बीच में, उनके खांसने की आवाज भी आती है और उनके प्रबंधक बताते हैं कि स्वामी जी की तबियत ठीक नहीं है।

बहरहाल, लम्बे इंतजार और भारी भीड़ के कारण उमस और गर्मी से हो रही उकताहट को खत्म कर महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी हमारे बीच आती हैं। वे पहले से सज्जित एक सिंहासननुमा आन पर बैठकर

मिलना शुरू करती हैं। उनके श्रंगार से पता लग जाता है कि उन्हें इतना समय क्यों लगा। हम चूंकि मीडिया से थे इसलिए हमें तुलनात्मक रूप से पहले मिलने का मौका मिल गया और प्रसाद के रूप में कुछ सिक्के, रुद्राक्ष भी। हमारे एक साथी बताते हैं कि बुधवार (जिस दिन हम मिले) को किसी भी किन्नर से यह प्रसाद मिलना बड़ा फलदायक होता है। पत्रकारीय आदत के चलते मैंने आग्रह किया कि एक फोटो खींच लें तो लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने मोबाइल तुरंत अपने हाथ में ले लिया और फिर मंझे हुए अंदाज में शानदार सेल्फी ले डाली। इसी बीच स्थानीय के अलावा कई विदेशी चैनल भी उनसे बातचीत के लिए आतुर थे और उनके मुरीदों की भीड़ भी कम होने का नाम नहीं ले रही थी। इसलिए हम भी वहां से निकलकर उनके अखाड़े का जायज़ा लेने में जुट गए। अन्य अखाड़ों की तरह किन्नर अखाड़े में भी एक यज्ञशाला और श्रद्धालुओं के लिए स्वादिष्ट भोजन का प्रबंध था और पूरे परिसर में अखाड़े के अन्य संत–महंतों के टेंट और महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के अलग–अलग आकर्षक पोस्टर लगे थे।

ट्रांसजेंडर (थर्ड जेंडर) अधिकारों के लिए काम करने वाली लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी को उज्जैन सिंहस्थ में किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर घोषित किया गया। बताया जाता है कि देश के लगभग 20 लाख किन्नरों की सर्वसम्मति से उन्हें इस पद के लिए चुना गया। इस बार भी वे तमाम विरोध के बाद भी न केवल प्रयाग कुंभ में अपना अखाड़ा जमाने में कामयाब रहीं बल्कि उनके अखाड़े में बढ़ती भीड़ ने उन्हें यहां रुकने पर मजबूर कर दिया। आमतौर पर सभी अखाड़े अंतिम शाही स्नान के बाद कुंभ से विदा हो गए थे लेकिन किन्नर अखाड़ा महाशिवरात्रि तक यहीं था।

महामंडलेश्वर बनने से पहले भी लक्ष्मी बताती रहीं है कि किन्नर अखाड़े को महाकुंभ का हिस्सा बनाने के पीछे उनकी मंशा किन्नरों को समाज में एक सम्मानजनक स्थान दिलाने की है। उनका मानना है कि जब हर कोई हमसे आशीर्वाद और दुआ लेता है तो समाज में किन्नरों के लिए सम्मानजनक स्थान क्यों नहीं होना चाहिए? अपने समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली तेजतर्रार लक्ष्मी को अपने किन्नर होने पर गर्व है।

लक्ष्मी पहली किन्नर हैं जो संयुक्त राष्ट्र में एशिया प्रशांत क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं और अपने समुदाय और भारत का प्रतिनिधित्व टोरंटो में विश्व एड्स सम्मेलन जैसे अनेक मंचों पर कर चुकी हैं। वह इस समुदाय के समर्थन और विकास के लिए अस्तित्व नाम का संगठन भी चलाती हैं। लक्ष्मी बिगबॉस के साथ अन्य कई टीवी शो का हिस्सा रह चुकी हैं लेकिन महामंडलेश्वर के पदग्रहण करने के बाद वे अब टीवी से दूर हैं।

लक्ष्मी का किस्सा जान लेना रोचक और रोमांचक है। लक्ष्मी आम किन्नरों की तरह नहीं हैं जो मजबूरी के कारण इस समुदाय का हिस्सा हैं बल्कि वे बिलकुल अलग हैं। लक्ष्मी का जन्म महाराष्ट्र के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने मीठीबाई कॉलेज से आर्ट्स में डिग्री ली और भरतनाटयम् में स्नातकोत्तर भी किया है। वे कुशल वक्ता, अभिनय और नृत्य में निपुण, अपने अधिकारों को लेकर जागरूक मुखिया और शून्य से शिखर तक पहुंचने वाली योद्धा हैं जिन्होंने अपने बलबूते यह मुकाम हासिल किया है। साथ ही अपने परिवार और समुदाय को भी समाज में प्रतिष्ठा दिलाई है। उनकी यही खूबियां हम जैसे कई लोगों को उनका प्रशंसक बनाती हैं। और यही प्रशंसा उन तक खींच ले जाती है, फिर चाहे मिलने के लिए दो घंटे इंतजार ही क्यों न करना पड़े ...

भारत उत्सवी देश है। सनातन काल से हम विविध अवसरों को उत्सव के रूप में मनाते चले आये हैं और जब कुंभ जैसे विषय हमारे सामने हो तो यह अपने आप में धर्म के साथ आध्यात्म और विज्ञान का संगम हो जाता है। ठीक वैसे ही जैसे प्रयागराज के घाट पर गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम। यहां सरस्वती विलुप्त हो जाती है तो इस कुंभ के आयोजन में धर्म और आध्यात्म तो दिखता है लेकिन विज्ञान विलुप्त रहता है। इस सदी के लिए एक बड़े आयोजन के रूप में प्रयागराज कुंभ 2019 महज आयोजन ना होकर अनेक दृष्टि से शोध एवं अध्ययन का विषय बन गया है।

बेटी

राजश्री वी. कालघटगी, धारवाड़

धीमी सी आवाज में जब खबर सुनाई
बाप के चेहरे पे उदासी थी छाई
दूसरी भी आई है बेटी
बेटे की उम्मीद हुई झूठी

मुस्कराते हुए मां ये बोली
राजा बेटा या रानी बिटिया
दोनों ही तो फूलों जैसे
महकाते हैं जीवन की बगिया

शिक्षा से भरपूर बढ़ेगी बिटिया
सयानी खुद्दार बनेगी बिटिया
रसोई संभालेगी लगन से अपनी
और निभायेगी दुनियादारी भी

ब्याहकर जब जायेगी बिटिया
एक नया संसार बसायेगी अपना
सब का दिल जीत लेगी वहां
मायके की छाप छोड़ेगी बिटिया

मां, बीवी, बहू बनकर बिटिया
संवारेगी रिश्तों की लड़ियां
हर किरदार में जब वो खूब जचेगी
औरत की खुदाई उसमें दिखाई देगी

सुनकर मां की ये गहरी बातें
बाप की आंखें खुशी से भीगी
मां के चेहरे पे सुकूं सी छायी
नन्ही–सी जान हल्के से मुस्कुराई ।

परिसर

खुली हवा की खोज में निकले
हर सुबह सैर का करके बहाना
पर सारा परिसर जब है प्रदूषित
शुद्धता तो बस एक सपना है

बढ़ती जनसंख्या ने मिटा दिया खेतों और हरियाली को
राह लगे पेड़ों को खा गए कई राजमार्ग
मकान इमारतों की कतार लगी है
फिर भी बढ़ती उनकी जरूरत

जंगलों का घट रहा इलाका
उजड़ रहे जानवर चिड़ियों के बसेरे
घबराकर जब वो शहरों में आए
हाहाकार मचाए, बेदर्दी से उन्हें मार गिराए

जब लोग बहुत वाहन भी ज्यादा
धूएं से कर दे वातावरण को मैला
खान ले रहे वन की बली,
व्यापारियों की हुई अभिवृद्धि
बंजर हुई भूमि और किसान कंगाल

कारखानी त्याज्य अपनी कसर न छोड़े
हवा पानी में गंदगी घोलें, कइयों की तो जान भी ले ली
अगर ठान लें हम तो इन सबको रोकें
प्रकृति को विनाश से बचाएं,
अगली पीढ़ी को खुशहाल बनाएं।

बलजीत कौर

जिन्दगी

जिन्दगी का सफर चलता ही रहता ।
न रुकता ,न थमता,न बैठता है हार के ।।
जिन्दगी चलती है सांसों से ,सब कहते हैं ।
मगर नहीं !
ये तो चलती है हौसले से हिम्मत से ।।
जिन्दगी अगर सिर्फ चलती सांसों का नाम होता ।
तो किसी अपने की सांसें रुक जाने से।
किसी के चले जाने से ।
जिन्दगी खत्म हो जाती हमारी ।
मगर ऐसा कहाँ होता है ।।
तो फिर यही लगता है मुझको ।
कि जिन्दगी!
सांसों के चलते रहने को ही नहीं कहते ।
ये तो हौसले का नाम है ।।

हादसा

आज फिर ज़हन में,घूमता वो हादसा ।
शहर बदले,मकान बदले, मगर,
पीछा करता रहा वो हादसा ।।
आज फिर ज़हन में ——————
मैंने कभी जब भूलना चाहा है।
उसके प्यार को ।
यादों में आकर,
फिर डरा जाता रहा वो हादसा ।।
शहर बदले, मकान बदले, मगर
पीछा करता रहा वो हादसा ।।
सपनों का कत्ल करके ।
मैं जीना सीख भी लेती ।।
मगर जीने नहीं देता मुझे वो हादसा ।
आज फिर ज़हन में ——————
जब कभी भी गीत खुशियों का ।
मैं लिखने लगी ।।
नज़म ग़म की लिखा जाता रहा वो हादसा ।।
शहर बदले मकान बदले मगर ————————
आज फिर ज़हन में घूमता वो हादसा ।।

मैं हूं मध्य प्रदेश

नीलेश कुमार कलभोर
पोर्ट ब्लेयर

भीम बैठका, इतिहास संजोता स्तूप साँची का
प्राचीन अवंतिका, नाम अमर महाराज भोज का
रूपमती का मांडू देखो, कितनी स्मृति शेष
मैं हूं मध्य प्रदेश, मैं हूं मध्य प्रदेश।।

रंगों की गेर यहां है, पर्वों में गणगौर यहां हैं
मौज भगोरिया की, सजे बैल पर्व पोला का
अनगिनत मेले, जात्रा हो या, रंग पंचमी विशेष
मैं हूं मध्य प्रदेश, मैं हूं मध्य प्रदेश।।

जीवनदायिनी मां नर्मदा, शिप्रा, ताप्ती बहे यहां
पग–पग रोटी डग–डग नीर; मालवा और है कहां
भिन्न–भिन्न हैं बोली–भाषा, भिन्न–भिन्न गणवेश
मैं हूं मध्य प्रदेश, मैं हूं मध्य प्रदेश।।

आल्हा–उदल की शारदा माई, गाथा सुनते हैं सब भाई
मस्जिदों का ताज यहां है, होशंग आबाद यहां है
बुंदेली, निमाड़ी बघेली का विस्तार यहां है
ग्वालियर, ओरछा, धार, असीरगढ़ किलों का है देश
मैं हूं मध्य प्रदेश, मैं हूं मध्य प्रदेश।।

माखन, शरद, राहत, परसाई, विश्वभर में है धाक जमाई
मैहर, ग्वालियर, देवास जहां है होता संगीत का वास यहां है
पन्ना, पेंच, बांधवगढ़, उद्यान बाघ विचरते स्वछंद यहां हैं
गोंड, भील, बैगा, कोरकू का मूल रहा है प्रदेश
मैं हूं मध्य प्रदेश, मैं हूं मध्य प्रदेश।।

सुर्ख़ियों से परे कार्यक्रम में प्रस्तुत

राम वी. सुतार के साथ आकाशवाणी संवाददाता संतोष द्विवेदी की बातचीत

सरदार वल्लभभाई पटेल एक ऐसा नाम जो पूरे देश का प्रतिनिधित्व करता है। भारत, आज जो भारत है वो यूं है कि सरदार वल्लभभाईपटेल जैसा यशस्वी पुत्र भारत मां की गोद में था। उन्हीं सरदार पटेल जी की एक प्रतिमा गुजरात में मां नर्मदा के तट पर स्थापित की गई है और उसके शिल्पकार हैं राम वी. सुतार जी। भारत सरकार के पद्मभूषण/ पद्मश्री जैसे सम्मानों से विभूषित राम वी. सुतार जी मिट्टी हो या पत्थर शिल्पकार उसमें अपनी कला से जान डाल देता है। कुछ ऐसी ही कला के धनी हैं सर आप। कैसे देखते हैं ये जो मोदी जी का सपना था सरदार पटेल जी की प्रतिमा को स्थापित करने का, एकता और आपसी सामंजस्य के प्रतीक का, उनके इस विचार को आपने मूर्त रूप कैसे प्रदान किया।

सरदार पटेल का जो करैक्टर है ये तो लौह पुरुष कहा जाता है तो उसके मुताबिक जैसा हम सोचते हैं उनकी मूर्ति बड़ी बननी चाहिये ये मोदी जी ने सोचा। उन्होंने देखा कि दुनिया में मूर्तियां कितनी बड़ी हैं देखा जाये, स्टडी किया जाए, बहुत सारी मूर्तियां स्टडी की और उसमें देखा कि जितनी मूर्तियां आज तक बनी हैं उससे हम बड़ी मूर्ति बनाना चाहते थे तो ये सब उसने सोचा और एनसी को साथ में ले लिया एज़ए कोन्डेक्टर और तय हुआ कि इतनी बड़ी मूर्ति बनानी है। अच्छा जब इतनी बड़ी मूर्ति बनानी है तो ये कहां बनाई जाये जल्दी से जल्दी मतलब अपने ही पीरियड में मोदी जी के पीरियड में होना चाहिये। इसके लिए उन्होंने प्लान किया। हमारे यहां जो हम कास्टिंग करते थे आठ ईंच या ट्वंटी ईंच इतने स्टैच्यू बनते थे तो ये देखा कि जरा दुनिया में देखिये कहां ज्यादा बड़ी मूर्ति बना सकते हैं तो उन्होंने सोचा था कि भई चाईना में इस तरह से बुद्धा की बड़ी मूर्ति बनाई जाती है वहां जाके देखा। उन्होंने चाईना में बड़ी मूर्ति एक बनी है और ये बनाने वाले कौन हैं उनका भी तलाश

किया। तलाश करने के बाद उनसे भी तय हुआ कि मूर्ति बनानी है तो तय हो गया उनका कि हम बना देंगे। चाईना में कास्टिंग करने का प्रोसेस और जल्दी से जल्दी बनाने का प्रोसेस है छोटा टुकड़ा करने की बजाये बहुत बड़े–बड़े टुकड़े कास्टिंग करते हैं तो जल्दी बनाने का तरीका उन्होंने सोचा। इस तरह से काम हुआ। तीन फीट का हमारे बाद में एक–एक फीट का बाद में थर्टी फीट की बनाई। थर्टी फीट बनाने के बाद वो जो प्रोसेस है बड़ा बढ़ाने का ये चाईना को सौंप दिया तो उसने हरेक पार्ट बड़ा–बड़ा बनाया और कास्टिंग किया।

शुरू में आपने जो इसका प्रोटोटाईप बनाया हमने जैसा जाना कि उसक प्रोटोटाइप अहमदाबाद में लगाया गया।

हां, ये जो पार्लियामेंट में मूर्ति लगी गांधी जी के पास एक बोर्ड पे लगी। ये सब देखने के बाद इन्होंने सोचा कि बड़ी मूर्ति अच्छा और एक व्यक्ति कोई अमेरिकन या ऐसा कोई है व्यक्ति जानकार कि ये मूर्तियां ऐसा बड़ा बनाने के लिये कौन सा स्टैच्यू अच्छा है ये उनको सौंपा गया उसने बहुत सारी मूर्तियां स्टडी की गुजरात में और इधर–उधर तो उसके बाद हमारी भी मूर्तियां एअरपोर्ट पे जो लगी थी उन्होंने वो भी देखा फिर उन्होंने मोदी जी को कहा रामसुतार जी की जो मूर्ति बनी है एअरपोर्ट पे उसी की कॉपी बड़ी बननी चाहिये। ये तय हो गया। उधर चाईना का कास्टिंग करना भी तय हो गया और वहां तक कास्टिंग होती है तो हमें बार–बार वहां जाना पड़ता था सुपरविजन के लिये। कुछ हमें करना है तो हम कर देते थे उसके बाद वो कास्टिंग पूरा करके उधर दे देते थे।

आज जब ये सपना पूरा हो गया मोदी जी का विचार था और आपकी देख–रेख में वो मूर्त रूप ले चुका है। कैसा फील करते हैं आप।

बहुत अच्छा फील करते हैं। ऐसा हमारे दिमाग में होता है कभी ड्रीम होता है उसी तरह से हमारा भी ड्रीम था मोदी जी का भी ड्रीम आ गया। हमारा ड्रीम भी हो गया कि हम बचपन से ही बड़े–बड़े काम करने की इच्छा करते थे। फोर्टी सेवन में ही हमने ऐसे विचार किया था कि ऐसे ही बड़ी मूर्ति बनाएंगे हनुमान की कि जहां राम–लक्ष्मण छाती पे दिखें बड़े–बड़े मगर ये सपना समझो पूरा हो गया।

आप साधारण परिवार से आते हैं। भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण से सम्मानित किया जीवन में आपने सबसे पहली जो मूर्ति गढ़ी जिससे कि बड़ी ख्याति प्राप्त हुई वो चम्बल मां की थी, उसके बारे में आप हमें बतायें।

ऐसा कि जब बड़ी मूर्ति का बनाने का जो सपना था मध्य प्रदेश में चम्बल नदी में देवी की स्टैच्यू बनाने का सोचा वहां के लेबर मिनिस्टर के सोचने के बाद बाईचांस हम भोपाल में थे चले गए थे। उन्होंने हमारा काम देखा और वो सोच के कि आप हमारे लिए मूर्ति बनाइये। तो हमसे बात करते–करते उन्होंने अपना इतिहास बताया कि ये जो सोचा जाए बनाने का ये प्रोपर फाउंडेशन हमारे मध्य प्रदेश में नहीं था तो आगे चल के राजस्थान में प्रोपर जगह मिले। राजस्थान गवर्मेंट अनावरण करती थी। उसके बाद फिर बाद में तय हुआ कि चलो कॉमन प्रोजेक्ट है दोनों के लिये है तो झगड़ा खत्म हो गया। ये जब कहानी मैंने सुनी तब मेरे दिमाग में विचार आया कि मध्य प्रदेश, राजस्थान ये भाई–भाई हैं और नदी जो माता है ये उनको पानी दे रही है ये इस हिसाब से मैंने वो मूर्ति बनाई वो चालीस फीट की बनी है। वो कंकरीट का एक बड़ा पत्थर बना के पत्थर के अंदर कार्बन किया है

चम्बल मां की मूर्ति से लेकर के आज विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा सरदार पटेल की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक आ पहुंचे इससे जो मूर्ति बनी है उसमें बहुत छोटी–छोटी बारीक–बारीक चीजें हैं उनके पैर के नाखून, उनका पहना हुआ कुर्ता, उसमें पड़ने वाली सिलवटें, उसके ऊपर का गमछा, कैसे सब आपने सोचा।

मुझे विचार पहला जो था उनके जो चेहरे के भाव हैं चलने का ढंग है पहने जो हैं कुर्ता या धोती वो वही आना चाहिये तब जाके उस व्यक्ति की पर्सनेल्टी दिखाई देती है। उसका करेक्टर है स्वभाव का कपड़े कैसे तो उसी मार्फत करना बहुत जरूरी है। उसको याद करना मतलब सिर्फ चेहरा ही नहीं सिर्फ कपड़े ही नहीं सारी चीज वही उस तरीके से आना चाहिये। उसी मुताबिक ये मूर्ति बनाई गई है।

आपकी जो और बनाई मूर्तियां हैं और ये जो मूर्ति है उसमें कुछ विशेष बात, क्या अलग है।

नहीं, विशेष बात कुछ नहीं। इतना ही कि सिर्फ साइज की बात है। बाकी ये जो काम करने का हमारा ढंग है बराबर जो शर्ट है या इंदिरा जी की साड़ी है वो भी वो आना चाहिये और उनकी पॉज भी आनी चाहिये तब जाके कि ये आदमी क्या था। समझो जिसने इंदिरा जी को नहीं देखा मगर मूर्ति देखते ही पता लगना चाहिये कि ये आदमी का क्या भाव लग रहा है। मूर्ति बनाने का तरीका ये। इसीलिये कारण है कि उन्हें याद रहे उनका किया हुआ काम ये भी याद रहे उसी तरह के हम भी कुछ करें इसके लिये मूर्तियां बनाते हैं हमने घर में जो फोटो लगाई वो यही है कि हमारे पिता जी का याद रखें उन्होंने जो कुछ काम किया उसी तरह से हम भी करें ये सोचें।

कला मनुष्य का बड़ा ही भावनात्मक पहलू है जिसमें कि वो कल आज और कल के बीच में एक सेतु का काम करता है आपने अपने कैरियर के शुरुआती दौर में अजंता एलोरा की मरम्मत का बीड़ा उठाया। उसके जीर्णोद्धार का आपने काम किया। आपने उसको कैसे पूरा किया और आप अभी भी उस भगीरथी प्रयास में लगे हुए हैं, कैसे देखते हैं इसको।

नहीं अभी तो मूर्ति बनाई फिर उसके बाद फिर तो दिमाग में तरह–तरह विचार तो रहते ही है बड़े–बड़े काम करने के मगर उसके साथ और एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिये जो उनके दिमाग में ऐसा एक प्रोजैक्ट होता है और वो हमारे पास पहुंचे तो हम उनसे मिलजुल के काम पूरा करें।

जैसा कि मोदी जी के मन में एक विचार आया इसके लिये।

हमें क्या दो आदमी की जरूरत है पहले जमाने में भी राजा लोग थे उन्होंने सपना किया कि ऐसा एक टेम्पल या किला बनना चाहिये फिर आर्टिस्ट लोगों से मुलाकात करके मिल कर ये काम पूरा होता है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जी ने भी आपको भाखड़ा नांगल बांध पर एक मूर्ति बनाने का काम सौंपा था।

नहीं, उन्होंने काम नहीं दिया मुझे। लेबर मिनिस्ट्री ने काम दिया और उद्घाटन नेहरू जी ने किया।

भारत का समाज एक बड़े परिवर्तन के दौर से गुजरा है। कला के क्षेत्र में कितना परिवर्तन पाते हैं आप।

पहले जो बड़े–बड़े काम करने की और जो ताकत लगाने के काम थे वे आजकल कम हो रहे हैं मतलब ज्यादा काम करने की उनकी हिम्मत न होती। थोड़े से काम करने जैसे आजकल मॉर्डन आर्ट चल गया है थोड़े में खुश कर दिया उसमें पेमेंट मिल गया। नई चीज समझ के उसकी वैल्यू बढ़ गई। मतलब सही काम करने के लिए मेहनत बहुत ज्यादा होती है। कोई भी सही काम करने के लिये। ऐसे ही ऊपर–ऊपर काम करने के लिये वो मजा नहीं आता। तो आजकल ये दौर है मगर पता नहीं ये कब तक चलेगा।

वो जो प्रतिबद्धता चाहिये वो आज की पीढ़ी शायद आपसे सीखेगी। कला, कलात्मकता, मूर्ति, मूर्तिकला इस तरह की जितनी भी चीजें हैं ये अपने आप में आकर्षण का भी विषयवस्तु हैं तो जो गुजरात में अभी अनावरण हुआ है प्रतिमा का या जो और भी प्रतिमाएं हैं ऐसी और भी जगह हैं पर्यटन की दृष्टि से और सांस्कृतिक दृष्टि से आप कितनी महत्ता देखते हैं।

उ. आजकल ये है कि जो काम करना है उसका भी आगे चलके लोगों को फायदा होना चाहिये। एक तरह के एम्यूजमेंट के लिये भी और पैसे का भी जरिया। पहले जमाने में लोग ये नहीं सोचते थे कि लोग वहां आएं और हम पैसे कमाएं कभी नहीं सोचा होगा। मगर आजकल सोचना पड़ता है कि कोई भी चीज बनाएं तो उसका कुछ न कुछ फायदा उठना चाहिये। तो इसीलिये ये बड़ी मूर्ति बनाने के बाद उसी तरह जितना खर्चा हुआ है मिल सकता है फायदा हो सकता है

जो ये प्रतिमा का अनावरण प्रधानमंत्री मोदी जी ने किया है, लंबे समय तक ये ऐसी ही चमकती –दमकती रहे इसके लिये क्या कुछ प्रयास किए गए हैं।

हमेशा चलने के लिए, हजारों साल चलने के लिए इसका मेटल जो होता है मेटल को पेंट किया जाता है आजकल जितने भी मॉन्यूमेंट बनते हैं वो सारे ब्रॉन्ज करके

एक मेटल तैयार किया जाता है इसमें एक समझो कॉपर दिया जाता है सिक्स परसेंट या एक परसेंट केंग...ऐसा कुछ मिलाके ये स्पेशल ब्राउन मेटल बनाया जाता है। ये मेटल कभी पानी से या मिट्टी से कभी खराब नहीं होता। हजारों साल चलने वाला होता है। इसीलिये बड़े मॉन्यूमेंट काफी साल चलने के लिए यही मेटल का जिसे ब्रॉन्ज कहते हैं वो उससे किया जाता है।

लुधियाना का रोज गार्डन हो या मंडी गोबिन्दगढ़ पंजाब में हो या भारत के प्रत्येक कोने – कोने में आपकी बनाई मूर्तियां भारत की ऐतिहासिक विरासत को पुष्पित पल्लवित कर रही हैं। तो आपकी ये जो मूर्ति की कला है ये पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती जाये इसमें नए–नए काम होते रहें इसको ध्यान में रखते हुए आज के युवाओं को जो कि इससे जुड़े हैं उनको क्या संदेश देना चाहेंगे आप।

उनको यही है पहले अपने पूर्वज जो हैं उन्होंने काम किया है आर्ट है आर्किटैक्चर है लीविंग है। वो सब ध्यान में रख के हमें भी ऐसे काम करना चाहियें दुनिया को अगले टाइम के लिये लोग एप्रीशिएट करते रहें। ऐसा कुछ काम कर के दिखाएं। हमें कोशिश करना चाहिये।

मूर्ति एक माध्यम है जो हमारे सामने नहीं उससे एक रिश्ता बनाने का उस तक अपनी बात पहुंचाने का। आपने सात दशक तक काम किया है। सात दशकों में आपने जो कुछ लम्बी एक लकीर खींची है ये पीढ़ी दर पीढ़ी भविष्य के भारत में भी बनी रहे और आगे बढ़ती रहे इस पर क्या कहना चाहेंगे।

मैंने जिस हिसाब से समझो मूर्ति बनाई उसका अर्थ ये होता है कि ये पर्सनेल्टीं ये है उसको याद रखके उन्होंने जो काम किया उसी तरह से आप को भी करना चाहिये ये एक मार्गदर्शन है। मूर्ति मार्गदर्शन करेगी तुम इस तरह से चलो यही हमारे विचार हैं।

मूर्ति मार्गदर्शन करेगी। यही संदेश है। राम वी. सुतार जी हमसे बात करने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद।

झम्मन मेट्रो में

सुनील जैन राही

बहुत दिनों से सोच रहे थे, एक बार बिटिया के यहां मेट्रो से जाएं। बहुत नाम सुना है। टी वी पर फुर्र से इधर, फुर्र से उधर गुजरते देखा। चमचमाती ऐसे जैसे नई दुलहनिया की साड़ी है। रंग ऐसा चोखा जैसे ईमानदारी हो। स्पीड ऐसी जैसे महंगाई हो। चाल ऐसी जैसी हिरणी दौड़ रही हो। रुके तो सांस थम जाए। चले तो बूढ़ों की सांस उखड़ जाए। बहुत दिनों से सोच रहे थे, एक बार तो बिटिया के यहां इसी दिलउखाड़ दिल्ली धमनी से जाएंगे। आखिर कब तक इस तरह दिल थामे टी वी पर देखते रहेंगे।

एक दिन मुकम्मल कर लिया। जिस कुर्ते पर कई बरसों से पड़ोसन की नजर थी, उसी को धोबी से धुलवाकर प्रेस करवाया। पाजामा तो धुलना ही था। टोपी को खुद धो डाला। कुर्ता ही कुछ ऐसा था। कई मुशायरों में कविता की तारीफ तो ना हुई, लेकिन कुर्ते की तारीफ में कसीदे गढ़ दिए गए।

सफेद कुर्ता, सफेद पाजामा, सफेद टोपी ऐसा लग रहा था, जैसे बगुला हाथ में छड़ी लिए नवाबी चाल में चल रहा है। घर से बाहर कदम रखते ही रिक्शे वाले को बुला भेजा। मेट्रो का पहला दिन था। कहीं दाग न लग जाए। अगर दाग लग गया तो किससे धुलवायेंगे, कौन–सा पावडर होगा, किसे कैसे बतायेंगे कि दाग कहां से, कैसे लगा। वैसे आज तक बेदाग हैं, तो दाग क्यों लगें।

रिक्शे वाले ने भी अदब और आश्चर्य से देखा। पता नहीं किसका असर था रिक्शे वाले पर, झम्मन को देखते ही आंख दब गई। झम्मन को तैश तो बहुत आया, गुस्से में कहने वाले ही थे–**क्या समझ रखा है। प्रियाप्रकाश?** की औलाद कहीं का। बड़ी सावधानी से रिक्शे में बड़ी नज़ाकत से कदम रखा। पहले ही झटके में औंधें मुंह गिरते–गिरते बचे। वे साईकिल रिक्शा समझे थे, वो ई–रिक्शा निकला।

मचान पर बने मेट्रो स्टेशन को देखते ही रह गए। वो रिक्शे वाले ने कहा–मियां अब क्या देखते ही रहोगे या फिर तशरीफ का टोकरा नीचे भी लाओगे। झम्मन ने घूर कर देखा और दस रुपल्ली का सिक्का टिका दिया। सिक्का देख रिक्शे वाला बोला–ये तो कब का गिर गया। नोट निकालो। आखिरकार रिक्शे वाले से निजात पाकर, मेट्रो स्टेशन की ओर लपके। सामने से मेट्रो सर्र सी निकल गई। झम्मन देखते रह गए।

मेट्रो में घुसने के पहले टिकट तो लेना ही था। मशीन के सामने मशीन की तरह खड़े हो गए। भला हो उस जवान का, जिसने बताया कि इस मशीन में रुपया डालो प्लास्टिक का सिक्का आएगा। झम्मन दुखी हो गए। सरकार का सिक्का तो गिर गया। ये प्लास्टिक के सिक्के से सरकार चलेगी। खैर किसी तरह टिकट तो ले लिया। अब मशीन फिर सामने थी। वहां तैनात जवान ने हाथ उठाने के लिए कहा। झम्मन ने बौखला कर कहा–हम क्या चोर–उचक्के हैं, जो हमारी खाना– तलाशी ले रहे हो। हम जाने माने नायाब शायर हैं। झम्मन अड़ गए हम तलाशी नहीं देंगे। ये बेअदबी है, हम इसे कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे। खैर जवान के साहब ने बताया कि ये आपकी ही सुरक्षा के लिए कड़े इंतजाम हैं, जिससे आप महफूज़ रह सकें। बात झम्मन को समझ में आ गई।

सामने फिर मशीन थी। न कोई आदमी न आदमी का बच्चा । फिर से प्लास्टिक की मशीन। इतनी देर में सभी कर्मचारी समझ चुके थे, चचा पहली बार मेट्रो के लिए निकले हैं। एक कर्मचारी ने उन्हें समझाया और मेट्रो प्लेटफार्म पर पहुंचने के लिए निकल पड़े, लेकिन चलती सीढ़ियां देखकर चौंके। चलते पुर्जे तो कई देखे थे, लेकिन चलती सीढ़ियां पहली बार देखीं। खैर देखा–देखी सीढ़ियों पर चढ़ तो गए।

यह दीगर बात है कि पीछे वाले ने अगर संभाला नहीं होता तो सर के बल नीचे होते।

प्लेटफार्म पर पहुंचने के बाद एक मेट्रो तो देखते–देखते ही निकल गई। मेट्रो की साफ–सफाई, उसकी गति, उसका इठला कर बांये मुड़ जाना और न जाने कहां की दुनिया में खो गए झम्मन, शायर जो ठहरे। पहले समझा और दूसरी का इंतजार करने लगे। सामने आती दूसरी मेट्रो देखकर छड़ी के साथ–साथ खुद भी तन गए। आवाज के साथ दरवाजा खुला तो मेट्रो से उतरती भीड़ ने झम्मन को पांच फुट पीछे धकेल दिया। उन्हें जवानी के दिन याद आ गए, बस फिर क्या था, छड़ी के साथ मेट्रो के भीतर ये गए कि वो गए।

मेट्रो में घुसते ही खाली सीट पर पके आम की तरह टपक गए। अभी टपके हुए चंद लम्हे ही गुजरे थे कि एक मोहतरमा आईं और बोली–ये सीट महिलाओं के लिए है। आप अपनी तशरीफ का टोकरा और कहीं ले जाएं। झम्मन ने सोचा–

बड़े बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।

अभी इधर–उधर तांक–झांक करते, उससे पहले ही उनकी नजर दूसरी तरफ सीट के ऊपर जा पड़ी। विकलांग और वरिष्ठ नागरिकों के लिए। अरे वाह। महिलाओं की सीट पर बुढ़े नहीं बैठ सकते तो बुढ़ों की सीट पर जवान कैसे बैठ सकते हैं? छड़ी घुमाते हुए उस सीट की ओर लपके जिस पर जवान बैठे हुए थे। लेकिन इस बीच, रास्ते में खड़े एक सज्जन की थैली से धक्का मुक्की में जलेबी की चासनी और कचौड़ी के साथ लाई आलू की सब्जी ने झम्मन के कुर्ते को रंगीला बना दिया। खैर झम्मन कुछ नहीं बोल नहीं पाए। बोलते भी कैसे–जलेबी वाला सज्जन जलेबी की तरह टेड़ा और सब्जी की मिर्ची की तरह मिर्चीदार था। लम्बाई अमिताभ बच्चन सी, गंजे शेटटी की तरह गठीला शरीर, मूंछें नथ्थूलाल की तरह, सीना 80 इंच का, तो डोले सनी देओल की तरह। आंखें प्राण की तरह लाल। चुपचाप बिना कुछ कहे सीट पर बैठे लौंडों पर अकड़ गए। बुजुर्गों की सीट पर बैठते आपको शर्म नहीं आती। लड़के भी बड़े ढ़ीठ थे और बोले–आओ बैठो। शेर पर तो बस चला नहीं बिल्ली के कान उमेठने चले आए। खिसियाकर झम्मन बैठ गए। देखते ही देखते स्टेशन पर स्टेशन आते गए। बिटिया के घर के स्टेशन के नाम की आवाज सुनाई देते ही मुरझाये चेहरे से उठे और फिर से ई–रिक्शा में बैठ बिटिया के घर की ओर।

चमचमाती मेट्रो से चमचमाते झम्मन नहीं निकल पाए। ईस्ट मेन कलर में बिटिया के घर पहुंचे तो नवासे ने कहा–दाग अच्छे हैं। झम्मन की इच्छा हुई निरमा के ड्रम में डूब जाएं।

पहली बार कसम खाई अब मेट्रो में आएंगे तो बेटे के साथ ही आएंगे।

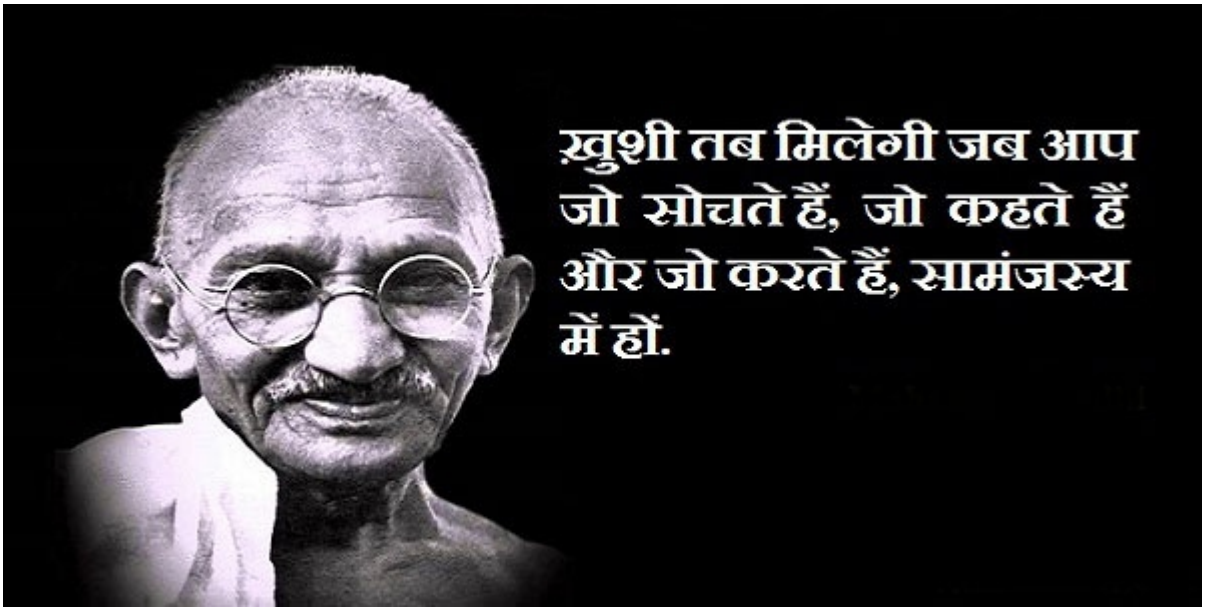

भारतीय अन्वेषक : नैन सिंह रावत

ललिता जोशी

इतिहास साक्षी है कि विश्व के सभी शासकों की बलवती इच्छा होती है कि वे अपने देश की सीमाओं का विस्तार करें। सीमाओं का विस्तार तभी संभव है जब शासकों को पड़ोसी राज्यों व अन्य राज्यों की सीमाओं का ज्ञान हो। सीमाओं की लम्बाई चौड़ाई और राज्य की परिधि कैसे मापी जाए यह आज के आधुनिक युग में तो विज्ञान व टेक्नोलॉजी के माध्यम से संभव है लेकिन वर्ष 1800 के पूर्वार्द्ध तक सुविधाओं के अभाव में और सीमित संसाधनों से सीमाओं को मापना और उनका चित्रण करना अत्यंत ही कठिन था। लेकिन इन सीमित संसाधनों और सुविधाओं के अभाव में अंग्रेजों के लिए प्रतिकूल मौसम पड़ोसी राज्यों की सीमाओं की गणना व चित्रण का सटीक कार्य करने वाले पंडित नैन सिंह और उसके परिवार का उल्लेख सदैव ही याद किया जाएगा। आईये बताते हैं नैन सिंह रावत व उनके परिवार के कठिन परिश्रम व अदम्य साहसिक कार्य का ब्यौरा :–

नैन सिंह रावत का जन्म उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के मुनस्यारी स्थित मिलम गांव में 21 अक्टूबर, 1830 को हुआ था। नैनसिंह रावत ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही प्राप्त की, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण जल्द ही पिता के साथ भारत और तिब्बत के बीच पारंपरिक व्यापार से जुड़ गए। उन्हों ने अपने पिता के साथ तिब्बत के कई स्थानों की यात्रा की और तिब्बती भाषा भी सीखी। हिंदी और तिब्बती के अलावा उन्हें फारसी और अंग्रेजी का भी अच्छा ज्ञान था।

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में विस्तारवादी रूसी शासक ब्रिटिश भारत पर हिमालय की ओर से स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। परंतु बर्बर सीमांत आबादी अंग्रेजों के लिए एक मजबूत दीवार का कार्य कर रही थी। अंग्रेज शासक इन सीमाओं की जानकारी लेने के लिए बेताब थे। इस जानकारी को अंग्रेजों तक पहुंचाने में नैन सिंह रावत का योगदान अविस्मरणीय है।

अंग्रेजों को सीमांत क्षेत्रों की आबादी में सर्वेक्षण के काम की जरूरत उत्पन्न हुई, विशेष रूप से उन्हें ऐसे पुरुषों की आवश्कता थी जो आसानी से तिब्बत जा सकते थे और उन्हें तिब्बती भाषा का ज्ञान भी हो। ऐसे में कुमाऊं के सरकारी शिक्षा अधिकारी मेजर एडमंड स्मिथ द्वारा जेम्से वाकर (ग्रेट ट्रीगानो मिट्रिकल सर्वे के अधीक्षक) को लिखे गए पत्र के माध्यम से नैन सिंह रावत चर्चा में आये, जिसमें दो स्कूली शिक्षकों के नाम (नैन सिंह और उसका रिश्तेदार) सुझाए गए थे। उन्हें यह ज्ञात था कि 1854–55 में नैन सिंह और उसके रिश्ते के भाई मणि सिंह ने एक जर्मन अभियान दल की मदद की थी और वहीं उन्होंने सर्वे के उपकरणों का प्रयोग करना सीखा था। नैन सिंह अपने पिता द्वारा लिए गए ऋण के कारण वित्तीय संकट में थे, क्योंकि अध्यापक के मामूली से वेतन में वो उस ऋण को चुका नहीं पा रहे थे और इसी कारण वे खतरनाक अभियान का हिस्सा बनें। नैन सिंह की शोहरत हिंदी, पर्सियन, तिब्बती और अंग्रेजी में धारा प्रवाह होने के कारण भी थी। और इसी स्मिथ की सिफारिश पर बेकर ने कार्य किया और नैन सिंह तथा मणी सिंह को प्रशिक्षण के लिए सर्वे मुख्यालय, देहरादून बुलाया। 1862 में माउंटगूमरी ने जब इंटरव्यू लिया तो नैन सिंह को नम्बर एक और मुख्य पुजारी का नाम दिया गया। जी.के. नाम कालियाम सिंह (नैन सिंह का भाई) को दिया गया। एक किशन सिंह को, जो नैन सिंह का चचेरा भाई था। प्रशिक्षण के पश्चात नैन सिंह 1865 में पहले मिशन पर तिब्बत गए।

अभियान को अत्यंत ही गोपनीय रखा गया। नैन सिंह ने बौद्ध भिक्षु और व्यापारियों के रूप में औपनिवेशिक राज के लिए तिब्बत और हिमालय पार के क्षेत्र की यात्रा की। कुमाऊं क्षेत्र से तिब्बत में प्रवेश का पहला मिशन असफल रहा। लेकिन माउंटगूमरी का दूसरा मिशन सफल रहा। नैन सिंह के नेतृत्व में पंडितों ने सीमांत क्षेत्र का लगभग 18000 स्केवयर मील का मानचित्रण किया और ये पाया कि वहां

सतलुज है। गांगतोक की वास्तविकता को पक्का किया। लद्दाख में सिंधू की दो सहायक नदियों को खोजा दक्षिणी लद्दाख में एक नई पर्वत श्रंखला अलिंग गंगरई को खोज के साथ। 600 मील लंबी ब्रह्मपुत्र को भी खोजा।

ये क्षेत्र अंग्रेजों के लिए 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक एक रहस्य बना हुआ था। कुल मिलाकर हिमालय के उत्तर से कराकोरम तक का अनुमानतः 1.4 मिलियन स्केवेयर मील क्षेत्र था जो अभी तक अबूझ (अनदेखा) था और यह संदेह भी बना हुआ था कि इस क्षेत्र से ब्रिटिश राज की सीमा में घुसपैठ की जा सकती है। ब्रिटिश भारतीय सरकार के कड़े आदेश थे कि कोई भी ब्रिटिश इन क्षेत्रों के सर्वे पर इन सीमाओं को नहीं लांघेगा। इसके लिए एक अन्य उत्तम विकल्प यह था कि स्थानीय लोगों को प्रशिक्षित किया जाए जो तिब्बत और तुर्कीस्तान को पार कर उसमें घुसने के लिए उपकरणों का प्रयोग कर इन क्षेत्रों का मानचित्रण कर सकें।

नैन सिंह काठमांडू के रास्ते तिब्बत के लिए निकले और मणी सिंह को कश्मीर के रास्ते तिब्बत भेजा गया। ये यात्रा 1863 में शुरू हुई। मणी सिंह तो बीच रास्ते ही वापस आ गए, लेकिन नैन सिंह ने अपनी यात्रा जारी रखी और दूरी तय करके वो बौद्ध भिक्षु के रूप में तिब्बत पहुंच गए, जहां से उन्हें अपनी असली यात्रा शुरू करनी थी। इसके लिए नैन सिंह ने अपने दोनों पैरों में 33.5 इंच की एक रस्सी बांधी, जिससे उनके कदम निश्चित दूरी पर ही पड़े। उन्होंने इस हिसाब से बताया कि उनके 2000 कदम चलने पर एक मील यानि 1.6 किलोमीटर का रास्ता तय हो रहा है। उन्होंने 100 मनकों की एक माला साथ में रखी। जितने मील वो चलते थे, माला के मनके फेरकर गिनते जाते थे। उन्होंने लहासा की समुद्र तल से ऊंचाई बताई और ब्रह्मपुत्र नदी के साथ 800 किमी की लंबी पैदल यात्रा की और दुनिया को बताया कि सांगपो और ब्रह्मपुत्र एक ही नदी है। तिब्बत में जो सांगपो है। भारत में उसे ही ब्रह्मपुत्र कहा जाता है। तीन साल बाद भी यात्रा जारी रही। 1866 में नैन सिंह रावत मानसरोवर होते हुए देहरादून लौट आए और अंग्रेजों को अपनी खोज से रू–ब–रू करवाया। इसके बाद अंग्रेजों ने उनकी खोज को दुनिया के समक्ष रखा। नैन सिंह रावत ने तिब्बत की दो और यात्राएं की। 1867–68 में नैन सिंह एक बार फिर तिब्बत गए। इस बार वो उत्तराखंड के चमोली जिले से निकले और वहां से तिब्बत के थोक जालूंग पहुंचे। वहां उन्हें सोने की खदानें मिली, जिसके बारे में दुनिया को पता ही नहीं था। नैन सिंह, किशन सिंह और एक अन्य रिश्तेदार 1873 में ब्रिटिश अभियान का हिस्सा बने और लद्दाख – लेह –यरकन्द (काशगर) को मानचित्र पर लाने में इनकी अहम भूमिका थी जो कि भारत और चीन के बीच महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग था। यह सिल्क रूट का हिस्सा भी था। इस दिशा में किशन सिंह यरकंद (काशगर) से भी आगे गये। 1874 में नैन सिंह ने अत्यंत महत्वपूर्ण खोज की। वो अपना दल लद्दाख से असम वाया लद्दाख और तिब्बत प्लेटू से लेकर आये। इसी अभियान में उसने पेंगांग झील के पूर्वी हिस्से की गणना भी की और तवांग से तिब्बत के रास्ते की गणना और ब्रह्मपुत्र नदी का रास्ता भी खोजा। रॉयल जियोग्राफिक सोसायटी के प्रेसिडेंट ने नैन सिंह की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह व्यक्ति भारत का अभी तक सबसे बड़ा वैज्ञानिक यात्री है। उन्हें रॉयल जियोग्राफिक सोसायटी द्वारा सबसे बड़े सम्मान 'पेट्रेन्स मेडल' और पेरिस की जियोग्राफिक सोसायटी ने (गोल्डन घड़ी) के सर्वोपरि सम्मान से नवाजा। उनकी इसी उपलब्धि के लिए भारतीय डाक विभाग ने 139 वर्ष के बाद 27 जून, 2004 को उनके सम्मान में उन पर एक डाक टिकट जारी किया।

उनके इस असाधारण कार्य के लिए उन्हें पंडित नैन सिंह के नाम से भी जाना जाता है। पंडित अर्थात ज्ञान का

भंडार। नैन सिंह के इन प्रयासों ने अंग्रेजों को सीमांत क्षेत्रों में चिरप्रतिक्षित अंतः दृष्टि प्रदान की। इस क्षेत्र का अधिकांश हिस्सा अभी तक मापा नहीं गया था।

1904 में जब कर्नल फ्रांसिस ने हसबैंड के नेतृत्व में अंग्रेजी फौजों ने तिब्बत पर आक्रमण किया तो उन्होंने पाया कि नैन सिंह के रिकार्ड एकदम सटीक थे, जबकि उन्होंने यह कार्य कम्पास, तापमान नापने के थर्मामीटर, रस्सी और प्रार्थना चक्र (जिसे तिब्बंती भिक्षुक हमेशा अपने साथ रखते हैं), इनसे दूरी नापने का एक अनोखा तरीका अपनाया। नैन सिंह के पास 108 मनकों की जगह 100 मनकों की माला थी जिससे वे अपने पैरों की दूरी से उस क्षेत्र की लंबाई–चौड़ाई की गणना करते थे। 100 मनकों की माला के कारण यह गणना आसानी से कर पाये। उनके उपकरण अत्यंत सामान्य थे लेकिन हौसला असाधारण। नैन सिंह और उनके भाई दिनभर शहर में टहलते और रात में किसी ऊंचे स्थान से तारों की गणना करते और वे जो भी गणनाएं करते थे उन्हें कविता के रूप में याद रखते या फिर कागज में लिखकर अपने प्रार्थना चक्र में छिपा देते थे।

अत्यंत सामान्यं उपकरणों और मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में दुष्कर और दुरूह स्थानों का भ्रमण कर उनका मानचित्रण करने वाले इस वीर पुरूष को हमारा सलाम। इन्हें आज भी इनकी उपलब्धियों के लिये वो सम्मान प्राप्त नहीं हुआ है, जिसके यह हकदार थे।

संदर्भ : पुस्तक –'द पंडित्स', लेखक– डेरेक वॉलरे
घासेरी ब्लॉग पोस्ट
विकीपीडिया
गूगल डूडल

कविता

सुचिता रावत

स्त्री

सुंदर हूं, सरल हूं,
सौम्य हूं, कोमल हूं!
मैं स्त्री हूं.....

श्रद्धा हूं, आस्था. हूं
विनम्र हूं, सहनशील हूं!
मैं स्त्री हूं.....

मधुर हूं, सुभाषिणी हूं,
चपला तो कभी मितभाषिणी हूं!
मैं स्त्री हूं.....

दुर्गा हूं, रणचण्डी हूं
मैं शक्ति, मैं ही प्रकृति हूं!
मैं स्त्री हूं.....

DELHIN/2012/43376

एक ही संकल्प हमारा, प्लास्टिक हटाना लक्ष्य हमारा।

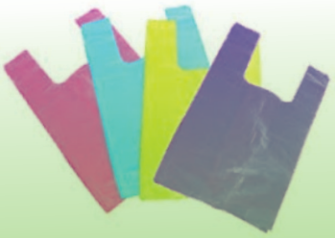

एक कदम स्वच्छता की ओर

समाचार सेवा प्रभाग आकाशवाणी

आकाशवाणी समाचार
संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001
www.newsonair.com

समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी, नवप्रसारण भवन, संसद मार्ग, नई, दिल्ली-110001.
की ओर से सहायक निदेशक द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा व्यापार भारती प्रेस
3423, दूसरी मंजिल, महिन्द्रा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034 से मुद्रित